सच्चा दीन

(लड़कों और लड़कियों के लिए दीनी तालीम का सेट)

भाग-3

(संशोधित संस्करण)

मुहम्मद यूसुफ़ इस्लाही

अनुवाद

नसीम ग़ाज़ी फ़लाही

पुनरीक्षण

पाठ्य पुस्तक-लेखन एवं सम्पादन-समिति

विषय-सूची

...याय				पृष्ठ
कुछ बातें नए संस्करण के बारे में	7	9.	**तहारत (1)**	32
भूमिका	9	●	नजासत	33
अल्लाह तआला का शुक्र	11	●	नजासते-हक़ीक़ी	33
हम्द	14	●	नजासते-ग़लीज़ा	33
हज़रत मुहम्मद (सल्ल.) (नज़्म)	15	●	नजासते-ख़फ़ीफ़ा	33
अक़ीदे		●	इस्तिंजा	34
ईमाने-मुजमल	17	10.	**तहारत (2)**	36
तौहीद	21	●	निजासते-हुक्मी	36
ईमाने-मुफ़स्सल	22	●	हदसे-असग़र	36
आख़िरत	26	●	हदसे-अकबर	36
फ़िक़ही इस्तिलाहें	27	●	वुज़ू	37
फ़र्ज़	27	●	वुज़ू के फ़र्ज़	37
वाजिब	28	●	वुज़ू की सुन्नतें	37
सुन्नत	28	●	वुज़ू के मकरूहात	38
मुस्तहब	29	●	गुस्ल	39
हराम	29	●	गुस्ल के फ़र्ज़	39
मकरूह	29	●	तयम्मुम	39
मुबाह	29	●	तयम्मुम के फ़र्ज़	39
नजिस	30	●	तयम्मुम का तरीक़ा	40
ताहिर	30	●	किन चीज़ों से तयम्मुम हो सकता है	40
मशकूक	30			

11. **इबादात** 42
- नमाज़ की इस्तिलाहें 42
- सिर्री और जहरी नमाज़ 43
- तअदीले-अरकान 43
- सज्दए-सह्व 43
- सज्दए-तिलावत 44
- इमाम के पीछे सूरा फ़ातिहा पढ़ना 44
- रफ़्अयदैन 44
- आमीन-बिल-जह्र 45
- सुतरा 45

12. **नमाज़ के अज़कार** 47
- सना 47
- तअव्वुज़ 48
- तस्मिया 48
- सूरा फ़ातिहा 49
- रुकूअ की तस्बीह 50
- रुकूअ से उठने की तस्मीअ 50
- क़ौमे की तहमीद 51
- सजदे की तस्बीह 51
- जलसे की दुआ 51
- तशह्हुद 51
- दुरूद शरीफ़ 52
- दुरूद के बाद की दुआ 53
- सलाम 54
- दुआ 54

13. **जमाअत की नमाज़**
- नमाज़ बा-जमाअत की फ़ज़ीलत
- नमाज़े-बा-जमाअत के मसाइल
- जमाअत का तरीक़ा
- इमामत
- इमाम की ज़िम्मेदारी

14. **मुक़्तदी के अहकाम**
- इमाम की पैरवी
- इमाम और मुक़्तदी के मसाइल
- मुक़्तदी की क़िस्में
- मसबूक़ के मसाइल
- लाहिक़ के मसाइल

15. **वित्र की नमाज़**
- वित्र की नमाज़ का हुक्म
- वित्र की नमाज़ का वक़्त

11. **रोज़ा**
- रोज़ा किसे कहते हैं
- रोज़े के फ़ायदे
- सब्र
- बुराइयों से बचना
- नेकियाँ कमाना
- रोज़े का सवाब
- रोज़े की नीयत
- सहरी
- इफ़्तार
- इफ़्तार की दुआ

तरावीह की नमाज़ 73
तरावीह का वक़्त 73
तरावीह की रकअतें 73
तरावीह में ख़त्मे-क़ुरआन 74
एतिकाफ़ 74
लैलतुल-क़द्र 75
सदक़ए-फ़ित्र 75
हुक़ूक़ और आदाब 78
मुलाक़ात के आदाब 78
बातचीत के आदाब 79
माँ-बाप के हक़ 80
रिश्तेदारों के हक़ 81
पड़ोसियों के हक़ 81
आम मुसलमानों के हक़ 82
प्यारे रसूल (सल्ल॰) 85
नबी (सल्ल॰) से पहले 85
पैदाइश 86
ख़ानदान 86
हज़रत हलीमा सादिया (रज़ि॰) 87
माँ भी चल बसीं 88
अबू-तालिब की परवरिश में 88
ग़श खाकर गिर गए 88
जवान होते हैं 89
अम्न की कोशिश 89
तिजारत 89
शाम (सीरिया) का सफ़र 90
- निकाह 90
- हजरे-असवद का फ़ैसला 90
- रसूल होते हैं 91
- अल्लाह का पैग़ाम 91
- पहले ईमान लानेवाले 92
- पहाड़ी की तक़रीर 92
- कोहे-सफ़ा पर (नज़्म) 93
- अल्लाह का दीन फैलता रहा 94
- ग़म का साल 95
- हब्शा की हिजरत 95
- हज़रत जाफ़र (रज़ि॰) की तक़रीर 95
- ताइफ़ का सफ़र 96

19. हमारी पाक माएँ 100
- हज़रत ख़दीजा (रज़ि॰) 100
- हज़रत आइशा (रज़ि॰) 101

20. प्यारे रसूल (सल्ल॰) की प्यारी बेटी हज़रत फ़ातिमा (रज़ि॰) 104

21. दस जन्नती 108
(1) हज़रत अबू-बक्र सिद्दीक़ (रज़ि॰) 109
(2) हज़रत उमर फ़ारूक़ (रज़ि॰) 109
(3) हज़रत उस्मान ग़नी (रज़ि॰) 109
(4) हज़रत अली मुर्तज़ा (रज़ि॰) 110
(5) हज़रत ज़ुबैर बिन-अव्वाम (रज़ि॰) 110
- इस्लाम क़बूल करना 110
- हिजरत 111
- कारनामे 111

- शहादत 112
- हज़रत ज़ुबैर (रज़ि॰) की ख़ूबियाँ 112

(6) हज़रत तल्हा बिन-उबैदुल्लाह (रज़ि॰) 113
- हिजरत 113
- ख़ैर का लक़ब 114
- रसूल (सल्ल॰) से मुहब्बत 114
- शहादत 115

(7) हज़रत अब्दुर्रहमान बिन-औफ़ (रज़ि॰) 115
- वफ़ात 116
- ख़ास-ख़ास ख़ूबियाँ 116

(8) हज़रत सअ्द बिन-अबी-वक़्क़ास (रज़ि॰) 117
- वफ़ात 118

(9) हज़रत अबू-उबैदा बिन-जर्राह (रज़ि॰) 119
- वफ़ात 120

(10) हज़रत सईद-बिन-ज़ैद (रज़ि॰) 120
- ईमान लाना 121
- वफ़ात 121

22. नबियों के हालात 124

(1) हज़रत हूद (अलैहि॰) 124
- क़ौमे-आद 124
- हज़रत हूद (अलैहि॰) की नसीहत 124
- क़ौम का सुलूक 125
- अज़ाब की आँधी 125

(2) हज़रत सालेह (अलैहि॰) 126
- क़ौमे-समूद 126
- सालेह (अलैहि॰) का समझाना 126
- समूद का जवाब
- अल्लाह की ऊँटनी
- नौ बदमाश
- ख़ौफ़नाक कड़क

(3) हज़रत यूनुस (अलैहि॰)
- नैनवावाले
- भागा हुआ ग़ुलाम
- मछली का निगलना
- बेलदार पेड़
- नैनवावाले मुसलमान हो गए

23. क़ुरआन की कुछ सूरतें
- सूरा इख़्लास
- सूरा अस्र
- सूरा कौसर

24. दुआएँ और अज़्कार
- जामे दुआ
- तस्बीहे-फ़ातिमा (रज़ि॰)
- दो प्यारे बोल

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

'अल्लाह के नाम से जो बेइन्तिहा मेहरबान और रहम फ़रमानेवाला है।'

कुछ बातें संशोधित संस्करण के बारे में

'सच्चा दीन' इस्लामी-शिक्षाओं (इस्लामियात) पर मर्कज़ी मक्तबा इस्लामी पब्लिशर्स ा प्रकाशित एक अत्यन्त उपयोगी और लोकप्रिय सेट है, जो कई भाषाओं में छप चुका बहुत दिनों से इस बात की ज़रूरत महसूस की जा रही थी कि इसमें छात्र-छात्राओं लिए ज़रूरी अभ्यासों को भी शामिल किया जाए। आजकल पाठ्य पुस्तकों में हर पाठ बाद पर्याप्त अभ्यास दिए जाते हैं, ताकि छात्र-छात्राओं को पाठ्य सामग्री अच्छी तरह झ में आ जाए। किताब के इस संस्करण में ज़रूरत के मुताबिक़ छात्र-छात्राओं और यापकों की आसानी के लिए कठिन शब्दों के अर्थ भी दे दिए गए हैं।

पुनरीक्षण और अभ्यासों की तैयारी के क्रम में जहाँ ज़रूरत महसूस की गई वहाँ कुछ तें घटाई-बढ़ाई भी गई हैं, जिससे किताब की उपयोगिता और अधिक बढ़ गई है। रीक्षण और अभ्यासों की तैयारी के काम में आदरणीय श्री सैयद शाह हुसैन नेहरी ने ोष दिलचस्पी ली। इसके अतिरिक्त विभाग के साथी सर्वश्री अबुल मुजाहिद 'ज़ाहिद' हूम), मुहम्मद जावेद इक़बाल, मिर्ज़ा निहाल हबीब बेग और मुहम्मद शफ़ीक़ आलम वी ने भी सहयोग किया। भाई मुहम्मद अली इस्लाही साहब और डॉक्टर ताबिश दी साहब के मशविरे भी इसमें शामिल रहे। जनाब मौलाना नसीम ग़ाज़ी फ़लाही हब की निगरानी में संशोधित उर्दू संस्करण के अनुसार हिन्दी संस्करण के संशोधन र पुनरीक्षण का काम मुहम्मद इलियास हुसैन तथा शैख़ फ़क़ीर मुहम्मद साहब ने ाम दिया और प्रूफ़ आदि की दृष्टि से सैयद ख़ालिद निज़ामी और मुहम्मद शुऐब हब ने इसे सजाया-सँवारा। इन सज्जनों के अलावा जिन महानुभावों ने भी किताब को चरण तक पहुँचाने में सहयोग दिया, हम उन सबके आभारी हैं। अल्लाह तआला ो सज्जनों को अच्छा बदला प्रदान करे। आमीन!

किताब को बेहतर से बेहतर बनाने के लिए शिक्षकों, अभिभावकों और विद्वानों के मूल्य विचारों और सुझावों की प्रतीक्षा रहेगी।

07-06-2006

मुहम्मद अशफ़ाक़ अहमद

निगराँ (निरीक्षक)

भूमिका

मुसलमान बच्चों और बच्चियों के लिए इस्लामियात (इस्लामी शिक्षाओं) पर एक ऐसे : की ज़रूरत बहुत दिनों से महसूस हो रही थी जिसकी मदद से आरम्भिक कक्षाओं बच्चों और बच्चियों को कम से कम वक़्त में अक़ायद, इबादात, सीरतुन्नबी, अंबिया र सुलहा की सीरतें, सामाजिक तौर-तरीक़े, अख़लाक़ और आदतों वग़ैरह के बारे में ़री मालूमात दी जा सकें और मज़ामीन (विषय-सामग्री) का भार बढ़ाए बिना आसान ़ान में और बच्चों की समझ के मुताबिक़ दीन (इस्लाम धर्म) का सादा, मगर क़-ठीक नक़्शा उनके दिमाग़ में बिठाया जा सके।

पिछले दस-बारह साल से कोर्स की किताबों के ज़रीए से एक ही अक़ीदे और धर्म तालीम और मुशरिकाना अक़ायद और ग़ैर-इस्लामी बातों के प्रचार-प्रसार ने इस ़रत को और ज़्यादा बढ़ा दिया। यह सेट असल में इसी ज़रूरत को पूरा करने के लिए ़ार किया गया है।

। सेट की विशेषताएँ :

ज़बान बहुत ही सादा और बयान करने का ढंग बच्चों की समझ के मुताबिक़ है।

बच्चों की नफ़सियात और उनकी दिलचस्पियों का पूरा ध्यान रखा गया है।

हर किताब में दीन का पूरा ख़ाका पेश करने की कोशिश की गई है और दीन के हर पहलू से मुताल्लिक़ ज़रूरी मालूमात दी गई हैं।

दीन का पूरा ख़ाका देने की कोशिश के बावजूद बहुत कम जगह में सिर्फ़ हल्की-फुल्की मालूमात देने को काफ़ी समझा गया है, ताकि बच्चे आसानी से कम से कम वक़्त में दीन से वाक़िफ़ हो जाएँ।

5. मुख़्तलिफ़ फ़िक़ही मसलकों के आलिमों के मशवरों और नज़रसानी के बा प्रकाशित किया जा रहा है, ताकि हर मसलक के बच्चे समान रूप से इससे ! उठा सकें।

6. जहाँ तक हो सका है छोटे-मोटे मतभेदों को नज़रअन्दाज़ करके बुनियादी औ बातें पेश की गई हैं जिनपर सब सहमत हैं, ताकि बच्चों के दिमाग़ में उल पैदा हो।

7. मुशरिकाना अक़ीदे और ग़ैर-इस्लामी बातें, जो कोर्स की किताबों और स्कू माहौल का ज़रूरी हिस्सा बनते जा रहे हैं, उनके सिलसिले में हक़ीक़ी बातें की कोशिश की गई है, ताकि बच्चों का दिमाग़ उनके बुरे प्रभावों से बचा

इस सेट को ज़्यादा फ़ायदेमन्द बनाने के लिए तमाम मशवरे शुक्रिये के साथ किए जाएँगे। ख़ुदा करे हमारी यह छोटी-सी कोशिश नई नस्ल के लिए फ़ाय साबित हो।

वमा तौफ़ीक़ी इल्ला बिल्लाह।
(तौफ़ीक़ अल्लाह ही के हाथ में है।)

—मुहम्मद यूसुफ़ इस

रामपुर
15 मई 1961

1

अल्लाह तआला का शुक्र

अल्लाह तआला ही ने हमको पैदा किया है। वही हमारी सारी ज़रूरतें पूरी करता है। ताम तारीफ़ें उसी के लिए हैं, हम उसी का शुक्र अदा करते हैं, उसी के गुण गाते हैं, वह ड़ा ही मेहरबान है, बड़ा ही रहम करनेवाला है। उसकी मेहरबानियों का क्या ठिकाना! एक क़्त वह था कि जब हम कुछ भी न थे, उसने हमें पैदा किया, कैसा अच्छा जिस्म दिया, जीब-अजीब ताक़तें दीं—सोचने की ताक़त, देखने की ताक़त, बोलने की ताक़त। अगर वह हता तो हमें कुछ भी न देता। वह चाहता तो हमें कीड़ा और पतंगा बना देता, पत्थर और ड़ बना देता और हम कुछ भी न कर सकते। उसका यह कितना बड़ा करम है कि उसने में इनसान पैदा किया। अल्लाह की मख़लूक़ में सबसे ऊँचा दर्जा इनसान का है। इनसान दा करके अल्लाह ने हमें बड़ा ऊँचा मरतबा दिया।

अल्लाह तआला ने सिर्फ़ हमें पैदा ही नहीं किया, बल्कि ज़रूरत का सारा सामान भी या। साँस लेने के लिए हवा बनाई, प्यास बुझाने के लिए पानी और भूख मिटाने के लिए ाना दिया। तरह-तरह के पेड़-पौधे उगाए। उनमें फल-फूल लगाए। रहने-सहने को घर या। आराम का सारा सामान दिया। अच्छे-अच्छे माँ-बाप दिए। उनके दिल में हमारी हब्बत डाली। ग़र्ज़ वह सब कुछ दिया जिसकी हमें ज़रूरत थी।

देखने के लिए आँखें दीं। सोचने के लिए दिमाग़ दिया। काम करने के लिए हाथ ए। चलने के लिए दो पाँव दिए। अगर आँखें न हों तो हम कुछ भी नहीं देख सकते, माग़ न हो तो हम कुछ भी नहीं सोच सकते। हाथ-पाँव न हों तो हम कुछ भी नहीं कर कते। और अगर वह नाराज़ होकर हमसे ये नेमतें छीन ले तो कोई नहीं जो फिर हमें ये मतें दे सके। उसी ने हमें अच्छे-बुरे में फ़र्क़ करना सिखाया। फ़ायदे और नुक़सान की हचान दी और यह ताक़त दी कि हम उसका शुक्र अदा करें।

वह एक दिन ज़रूर हमसे इन नेमतों का हिसाब लेगा। वह देखेगा कि हमने इन मतों का उसकी मर्ज़ी के मुताबिक़ इस्तेमाल किया या अपनी मनमानी की। उस दिन

अल्लाह तआला इनसाफ़ फ़रमाएगा कि यह बदले का दिन है, इनसाफ़ का दिन है। उर नेक लोग खुश-खुश इनाम पाएँगे और नाफ़रमान लोग अफ़सोस करेंगे। नेक लोग अल्लाह तआला जन्नत में भेजेगा। उन्होंने अल्लाह की मर्ज़ी पूरी की, उसके बताए हुए रास्ते पर चले, उसकी फ़रमाँबरदारी की।

ऐ अल्लाह! हम तेरी ही इबादत करते हैं और तुझी से मदद चाहते हैं कि हम इबादत कर सकें, तेरे रास्ते पर चल सकें। ऐ अल्लाह! हमें अपना सीधा रास्ता दिख सीधे रास्ते पर चला। तेरा सीधा रास्ता वही है जिसपर तेरे नेक बन्दे चले हैं, जो रास्त अपने प्यारे रसूलों को बताया है और हमारे प्यारे रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰)[1] को ब है। ऐ अल्लाह! हमें प्यारे रसूल मुहम्मद (सल्ल॰) के रास्ते पर चला और उन लोगों के से बचा जो तेरे नाफ़रमान हैं, तेरे नाशुक्रे हैं, जो प्यारे रसूल (सल्ल॰) के रास्ते पर नहीं च

अल्लाह तआला का लाख-लाख शुक्र है कि उसने हमें इस्लाम की सीधी-सच्ची बताई, हमें मुसलमान बनाया और ईमान की दौलत दी। वरना हम भी गुमराहों की भटकते, अपनी दीन-दुनिया बिगाड़ लेते और उसके ग़ज़ब में गिरफ़्तार होते।

कैसे नमकहराम हैं वे लोग जो अल्लाह की इतनी नेमतें पाकर उसका शुक्र अद करते, उसके हुक्मों पर नहीं चलते और उसकी नाफ़रमानी करते हैं। अल्लाह के प्यारे वही हैं जो उसके एहसानों को मानते हैं, उसकी नेमतों की क़द्र करते हैं, उसके हुक्म चलते हैं और उसका शुक्र अदा करते हैं। आइए, हम सब मिलकर अल्लाह की हम्द उसके शुक्र का 'तराना' गाएँ और उसके शुक्रगुज़ार बन्दों में शामिल हो जाएँ।

1. सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

अभ्यास

जवाब दीजिए :

(1) अल्लाह तआला का हमपर सबसे बड़ा करम क्या है?

(2) अल्लाह तआला की सारी मख़लूक़ में सबसे ऊँचा मरतबा किसका है?

(3) अल्लाह हमसे अपनी नेमतों का हिसाब क्यों लेगा?

(4) नमकहराम लोग कौन हैं?

(5) अल्लाह के प्यारे बन्दे कौन हैं?

(6) अल्लाह के शुक्रगुज़ार बन्दों में शामिल होने के लिए हम क्या करते हैं?

ख़ाली जगहों को मुनासिब अल्फ़ाज़ से भरिए :

(1) ऐ अल्लाह! हम तेरी ही इबादत करते हैं और तुझी से..................चाहते हैं।

(2) ऐ अल्लाह! हमें अपना सीधा..................दिखा।

(3) ऐ अल्लाह! हमें प्यारे.............के रास्ते पर चला और उन लोगों के रास्ते से बचा जो तेरे नाफ़रमान हैं, तेरे ....हैं।

♦♦♦

2

हम्द

किसने सूरज चाँद बनाए और तारों के दीप जलाए
कैसे-कैसे बाग़ सजाए रंग-बिरंगे फ़ूल खिलाए
कोयल कूकी, भौंरा गूँजा बुलबुल ने भी गीत सुनाए
कलियों के दामन भरने को ओस के मोती भी बरसाए
खेतों को हरियाली दे दी पर्वत पर बादल लहराए
दरिया-दरिया मौजें उट्ठीं जंगल-जंगल पेड़ उगाए
अंगूरों की बेल चढ़ाई सब्ज़े के क़ालीन बिछाए
तितली को रंगीन बनाकर उड़ने के अन्दाज़ सिखाए
इन्साँ को दानाई देकर कैसे-कैसे भेद बताए
मेरे ख़ुदा ने, सबके ख़ुदा ने ये सारे असबाब बनाए
उसके ही बस में है सब कुछ चाहे मारे चाहे जिलाए
राजमहल के तख़्त के ऊपर इसको उतारे उसको बिठाए
उसकी क़िस्मत का क्या कहना जो कोई उसका कहलाए
जग के दाता भीख करम की
हम भी हैं दामन फैलाए।

(माहिरुल क़ादरी

हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰)

खुदाया, कितने प्यारे थे मुहम्मद!
बड़े मुहसिन हमारे थे मुहम्मद!

मुहब्बत ही मुहब्बत करनेवाले
वो दुखियारों का दामन भरनेवाले
वो कितने नेक थे, कैसे बहादुर!
फ़क़त अपने खुदा से डरनेवाले

खुदाया, कितने प्यारे थे मुहम्मद!
बड़े मुहसिन हमारे थे मुहम्मद!

किसी से झूठ कोई भी न बोला
वो चेहरा था फ़रिश्तों से भी भोला
हज़ारों ज़ुल्म सहकर भी उन्होंने
दुआएँ दीं, दिलों में शहद घोला

खुदाया, कितने प्यारे थे मुहम्मद!
बड़े मुहसिन हमारे थे मुहम्मद!

सफ़ाई से था गहरा प्यार उनको
ज़रा-सी गन्दगी थी बार उनको
लिबासे-सादा पर पैवन्द लेकिन
ग़रीबी से नहीं थी आर उनको

खुदाया, कितने प्यारे थे मुहम्मद!
बड़े मुहसिन हमारे थे मुहम्मद!

खुदा ने उनपर क़ुरआँ को उतारा
उन्हें कैसी मुहब्बत से पुकारा
बुलाकर आसमाँ पर ज़िन्दगी में
कराया खुल्दो-दोज़ख़ का नज़ारा

खुदाया, कितने प्यारे थे मुहम्मद!
बड़े मुहसिन हमारे थे मुहम्मद!

वो अपने हाथ से सब काम करते
ज़रा-सी देर को आराम करते
खुदा का नाम वो दिन-रात लेते
खुदा का काम सुबहो-शाम करते
खुदाया, कितने प्यारे थे मुहम्मद!
बड़े मुहसिन हमारे थे मुहम्मद!

सिखाया सिर कटाना, सिर झुकाना
खुदा के नाम पर सब कुछ लुटाना
मुसल्ले को भिगोना आँसुओं से
शहादत की तड़प में ज़ख़्म खाना
खुदाया, कितने प्यारे थे मुहम्मद!
बड़े मुहसिन हमारे थे मुहम्मद!

फ़क़ीरों को अता की बादशाही
खुद अपने वास्ते कमली, चटाई
समझते थे वो दुनिया को सराय
हमेशा दिल में धुन थी आख़िरत की
खुदाया, कितने प्यारे थे मुहम्मद!
बड़े मुहसिन हमारे थे मुहम्मद!

जो फ़रमाते वही करके दिखाते
जो खुद करते वो दुनिया को सिखाते
उन्हें तो सारे इनसानों का ग़म था
अकेले किस तरह जन्नत में जाते
खुदाया, कितने प्यारे थे मुहम्मद!
बड़े मुहसिन हमारे थे मुहम्मद!

खुदा का दीन समझाकर गए वो
जहाँ में नूर फैलाकर गए वो
उन्हें जिस काम को भेजा था रब ने
उसे पूरा ही फ़रमाकर गए वो
खुदाया, कितने प्यारे थे मुहम्मद!
—बड़े मुहसिन हमारे थे मुहम्मद!

(शम्स नवेद उ

अक़ीदे

ईमाने-मुजमल

ईमाने-मुजमल से मुराद वे अलफ़ाज़ (शब्द) हैं जिनके ज़रीए से हम बहुत मुख़्तसर [illegible] पर अपने दीन, ईमान और अक़ीदे का इज़हार करते हैं।

اٰمَنْتُ بِاللّٰهِ كَمَاهُوَ بِاَسْمَآئِهٖ وَصِفَاتِهٖ وَقَبِلْتُ جَمِيْعَ اَحْكَامِهٖ۔

[illegible]ामन्तु बिल्लाहि कमा हु-व बि अस्माइही व सिफ़ातिही व क़बिल्तु जमी-अ अहकामिही।

اٰمَنْتُ **आमन्तु** मैं ईमान लाया	بِاللّٰهِ **बिल्लाहि** अल्लाह पर	كَمَا **कमा** जैसा कि (है)	هُوَ **हु-व** वह
بِاَسْمَآئِهٖ **बि अस्माइही** [illegible]ने नामों के साथ	وَصِفَاتِهٖ **व सिफ़ातिही** अपनी सिफ़तों के साथ	وَقَبِلْتُ **व क़बिल्तु** और मैंने क़बूल किए	جَمِيْعَ **जमी-अ** सारे के सारे
	اَحْكَامِهٖ **अहकामिही** उसके अहकाम		

"मैं ईमान लाया अल्लाह पर जैसा कि वह अपने नामों और सिफ़तों के साथ है। और मैंने उसके सारे अहकाम क़बूल किए।"

ईमाने-मुजमल में तीन बातों का इक़रार होता है :

(1) अल्लाह पर ईमान,

(2) उसके अच्छे नामों और सिफ़तों पर ईमान,

(3) और उसके सारे हुक्मों को क़बूल करना।

जो शख़्स इन तीन बातों को दिल से मानता है और ज़बान से इक़रार करता है 'मुसलमान' कहते हैं।

1. अल्लाह पर ईमान लाने का मतलब यह है कि ये लम्बी-चौड़ी दुनिया और इनसान ख़ुद-ब-ख़ुद पैदा नहीं हो गए हैं, बल्कि इनका एक पैदा करनेवाला है। उसव 'अल्लाह' है। वह एक है, अकेला है। न उसके माँ-बाप हैं और न ही बीवी-बच्चे। उ और कोई नहीं। सब उसके मुहताज हैं और वह किसी का मुहताज नहीं। वह अप हमेशा से है और हमेशा रहेगा।

2. वह 'ख़ालिक़ और मालिक' है और वही हमारा 'हाकिम' है। उसी ने हम पैदा किया और उसी के क़ब्ज़े में हमारी जान है। वह हमारा बादशाह है और सा में उसी की हुकूमत है। वही हमारा माबूद है, उसके सिवा कोई इबादत के लायक़ न रहमान और रहीम है, वह हमपर बड़ा ही मेहरबान है। वह हमारा 'रब' है। वही ह देता है और वही हमारी सारी ज़रूरतें पूरी करता है। वह 'समीअ़ और बसीर' है। सुनता है और सबको देखता है। 'अलीम और क़दीर' है, सब कुछ जानता है और पर क़ुदरत रखता है। वह 'समद' है, सब उसके मुहताज हैं, वह किसी का मुहता उसको किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं। वह 'हादी' है, उसने हमारी हिदायत के लिए को भेजा कि उसकी मर्ज़ी बताएँ और इस्लाम की सीधी-सच्ची राह दिखाएँ। इसके उसके और भी बहुत-से अच्छे-अच्छे नाम हैं। हम उन सबपर ईमान लाते हैं।

3. हम उसके सारे हुक्मों को मानते हैं। अल्लाह ने अपने रसूलों के ज़रीए कामों के करने का हुक्म दिया है, जैसे नमाज़ पढ़ना, रोज़ा रखना, सच बोलना, माँ- कहना मानना, रिश्तेदारों के साथ अच्छा सुलूक करना, ग़रीबों और दुखियों की मदद हम जी-जान से इन कामों को करते हैं।

जिन कामों से अल्लाह ने रोका है, जैसे उसके कामों में किसी को साझी बुतों को पूजना, शराब पीना, जुआ खेलना, झूठ बोलना, किसी को दुख पहुँचाना, कि हक़ दबाना, हराम खाना ये सब बुरे काम हैं, हम इनसे बचते हैं, इनके क़रीब नहीं ख़ुद भी बचते हैं, औरों को भी बचाते हैं। ईमान लाकर हमने अल्लाह से अहद कि

उसके सारे हुक्मों को मानेंगे। हम कभी अहृद नहीं तोड़ते। जहाँ तक होता है अल्लाह ़ुक्मों को बजा लाते हैं और उसकी नाफ़रमानी नहीं करते।

ईमाने-मुजमल में ईमान की सारी बातों को समेटकर बयान किया गया है। यह पूरे न का खुलासा है। इसी लिए हम 'ईमाने-मुजमल' को याद करते हैं और बार-बार दोहराते ाकि हमें अपना इक़रार याद रहे और अल्लाह से किया हुआ अहृद हर वक़्त ताज़ा रहे कभी हम उसके हुक्मों को बजा लाने से ग़ाफ़िल न हों।

अभ्यास

जवाब दीजिए :

(क) ईमाने-मुजमल से आप क्या समझते हैं?

(ख) ईमाने-मुजमल में किन बातों का इक़रार है?

(ग) अल्लाह पर ईमान लाने का मतलब क्या है?

(घ) 'मैंने अल्लाह के सारे अहकाम क़बूल किए' का क्या मतलब है?

(ङ) अल्लाह तआला ने हमें किन कामों से रोका है?

(च) ईमान लाकर हम अल्लाह तआला से क्या अहृद करते हैं?

(छ) हम ईमाने-मुजमल को क्यों याद करते हैं और बार-बार दोहराते हैं?

(ज) ईमाने-मुजमल सुनाइए।

(झ) ईमाने-मुजमल का तर्जमा (अनुवाद) सुनाइए।

़ही जोड़े लगाइए–

रब	सबको देखता है
बसीर	सब उसके मुहताज हैं, वह किसी का मुहताज नहीं।
समीअ़	रोज़ी देता और हमारी सारी ज़रूरतें पूरी करता है।
समद	सबकी सुनता है।
क़दीर	सब कुछ जानता है।

अलीम हमारी हिदायत के लिए पैग़म्बरों को भेजा कि उसकी मर्ज़ी बताएँ।

हादी हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है।

3. नीचे के जुमलों को ग़ौर से पढ़िए सही जुमले पर (√) का निशान लगाइए और ग़लत जुमले का निशान और जो जवाब ग़लत हैं, उनका सही जवाब लिखिए—

(क) यह लम्बी-चौड़ी दुनिया और करोड़ों इनसान ख़ुद-ब-ख़ुद पैदा हो गए हैं। (

....

(ख) अल्लाह हमेशा से है और हमेशा रहेगा। (

....

(ग) अल्लाह के हुक्मों को बजा लाने से हमें ग़ाफ़िल नहीं होना चाहिए। (

....

(घ) ईमाने-मुजमल में चार बातों का इक़रार है। (

....

(ङ) ईमान लाकर हमने अल्लाह तआला से अहद किया है कि हम उसके सारे हुक्मों व (

....

कुछ और काम

1. अल्लाह तआला के सभी सिफ़ाती नाम अपने उस्तादों या माँ-बाप से मालूम कर लीजिए।
2. अल्लाह तआला के सिफ़ाती नामों का एक चार्ट बनाकर अपनी क्लास अ लटाकाइए।

◆◆◆

तौहीद

वो है ज़ाते-वाहिद इबादत के लायक़
ज़बान और दिल की शहादत के लायक़
उसी के हैं फ़रमाँ इताअ़त के लायक़
उसी की है सरकार ख़िदमत के लायक़

लगाओ तो लौ उससे अपनी लगाओ
झुकाओ तो सिर उसके आगे झुकाओ

उसी पर हमेशा भरोसा करो तुम
उसी के सदा इश्क़ का दम भरो तुम
उसी के ग़ज़ब से ड़रो, गर डरो तुम
उसी की तलब में मरो, जब मरो तुम
मुबर्रा है शिरकत से उसकी खुदाई
नहीं उसके आगे किसी को बड़ाई।

(ख़्वाजा अल्ताफ़ हुसैन 'हाली')

ईमाने-मुफ़स्सल

ईमाने-मुजमल में हमने जिन बातों का इक़रार मुख़्तसर तौर पर किया था, मुफ़स्सल में हम उन बातों का इक़रार तफ़सील के साथ करते हैं। मुसलमानों जिन-जिन अक़ीदों पर ईमान लाना ज़रूरी है, ईमाने-मुफ़स्सल में वे सब अक़ीदे ब दिए गए हैं। ईमाने-मुफ़स्सल यह है :

امَنْتُ بِاللّٰهِ وَمَلٰٓئِكَتِهٖ وَكُتُبِهٖ وَرُسُلِهٖ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ

وَالْقَدْرِ خَيْرِهٖ وَشَرِّهٖ مِنَ اللّٰهِ تَعَالٰى وَالْبَعْثِ بَعْدَ الْمَوْتِ

आमन्तु बिल्लाहि व मलाइकतिही व कुतुबिही व रुसुलिही वल यौमिल आ क़द्रि ख़ैरिही व शर्रिही मिनल्लाहि तआला वल बअसि बअ़दल मौत।

आमन्तु امَنْتُ मैं ईमान लाया	**बिल्लाहि** अल्लाह पर
व मलाइकतिही وَمَلٰٓئِكَتِهٖ और उसके फ़रिश्तों पर	**व कुतुबिही** और उसकी किताबों पर
व रुसुलिही وَرُسُلِهٖ और उसके रसूलों पर	**वल यौमिल आख़िरि** الْاٰخِرِ और आख़िरत के दिन पर
वल क़दरि وَالْقَدْرِ और तक़दीर पर	**ख़ैरिही** उसकी भलाई
व शर्रिही وَشَرِّهٖ और उसकी बुराई	**मिनल्लाहि तआला** تَعَالٰى अल्लाह तआला की तरफ़ से (है
वल बअ़सि وَالْبَعْثِ और जी उठने पर	**बादल मौत** ـتِ मौत के बाद

"मैं ईमान लाया अल्लाह पर, उसके फ़रिश्तों पर, उसकी किताबों पर, उसके रसूलों पर, आख़िरत के दिन पर और इस बात पर कि अच्छी और बुरी तक़दीर अल्लाह तआला ही की तरफ़ से है और मौत के बाद उठाए जाने पर।"

ईमाने-मुफ़स्सल में बताया गया है कि मुसलमान को सात चीज़ों पर ईमान लाना ाली है—

1. अल्लाह पर,
2. फ़रिश्तों पर,
3. अल्लाह की भेजी हुई किताबों पर,
4. अल्लाह के रसूलों पर,
5. आख़िरत के दिन पर,
6. तक़दीर पर कि अच्छी और बुरी तक़दीर अल्लाह ही की तरफ़ से है, और
7. मरने के बाद उठाए जाने पर।

हम न मुसलमान हो सकते हैं, न इस्लाम की सीधी-सच्ची राह पर चल सकते हैं, ार हमें **इन सात बातों** पर पक्का यक़ीन न हो। जब तक हमें अल्लाह की ज़ात और ाकी ज़बरदस्त क़ुव्वत और ताक़त का यक़ीन न हो हम कैसे उसकी इताअत कर सकते और कैसे उसके हुक्मों पर चल सकते हैं। जब तक यह यक़ीन न हो कि अल्लाह हमें हर त देख रहा है, वह सब कुछ सुनता और देखता है, हम कैसे उसकी नाफ़रमानी से बच कते हैं। इसलिए सबसे पहली बात यह है कि हमारे दिल में अल्लाह की ज़ात व सिफ़ात पक्का यक़ीन हो, और ज़रा भी शक न रहे।

फिर हमें यह भी यक़ीन हो कि उसकी ख़ुदाई में कोई उसका शरीक नहीं, उसकी ़्मत में सब बेइख़्तियार हैं, किसी की क्या मजाल जो उसके कामों में दख़ल दे सके, जो छ होता है, उसी के हुक्म से होता है। उसी ने हर चीज़ को पैदा किया और हर चीज़ की च्छी या बुरी तक़दीर बनाई, जिसको जो मुनासिब समझा, दे दिया।

फ़रिश्ते बहुत नेक मख़लूक़ हैं, उनका काम ख़ुदा के हुक्मों को बजा लाना है। इबादत लायक़ सिर्फ़ अल्लाह तआला ही है, उसके सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं।

फिर हमें यह भी मालूम होना चाहिए कि अल्लाह की मर्ज़ी क्या है? ज़िन्दगी ग
का पसन्दीदा तरीक़ा क्या है? हम अल्लाह के हुक्मों पर किस तरह चलें और
नाफ़रमानी से कैसे बचें? इसलिए हम रसूलों और उसकी किताबों पर ईमान ला
किताबों में अल्लाह ने ज़िन्दगी गुज़ारने का सही-सही तरीक़ा बताया है और रसूलों ने उ
के हुक्मों पर चलकर दिखाया है। रसूलों ने हमें बताया है कि मरने के बाद हम सब
होंगे। ज़िन्दा होकर अल्लाह के सामने पेश होंगे। हमारे कामों की जाँच होगी। अच्छाइ
का फ़ैसला आख़िरत में होगा। जो अल्लाह के हुक्मों पर चला होगा, उसकी फ़रमाँ
की होगी उससे अल्लाह खुश होगा और जन्नत में जगह देगा और जो अल्लाह के हुक
न चला होगा, उसकी नाफ़रमानी की होगी, उसको अल्लाह सख़्त सज़ा देगा और दो
डाल देगा।

अगर हमें आख़िरत का यक़ीन न हो, मरने के बाद जी उठने का यक़ीन न
फिर हम कैसे बुराइयों से बच सकते हैं और कैसे नेकियाँ कमा सकते हैं? जन्नत का
ही तो हमें नेक काम करने पर उभारता है और दोज़ख़ का डर ही तो हमें बुराइयों से
है।

इन बातों पर यक़ीन करने ही की वजह से हम मुसलमान कहलाते हैं। अग
इनमें से किसी एक बात का भी इनकार कर दें, तो फिर हम मुसलमान नहीं रह सकत
अल्लाह के प्यारे नहीं बन सकते। ये इस्लाम के 'बुनियादी अक़ीदे' हैं। तमाम रसूलों ने
बातों की तालीम दी और इन्हीं बातों को दिल में बिठाने की कोशिश की। प्यारे
(सल्ल०) ने भी इन्हीं बातों की तालीम दी और इन्हीं बातों को दिल में बिठाया। यह
तमाम भलाइयों की जड़ हैं और इन्हीं को मानने में दोनों जहान की कामयाबी है।
इनकार करके हम दुनिया में भी ज़लील (अपमानित) होंगे और आख़िरत में भी रुसवा
ख़ुदा का शुक्र है कि हम मुसलमान हैं। इन बातों को दिल से मानते हैं और इनपर
और सच्चा यक़ीन रखते हैं।

अभ्यास

जवाब दीजिए :

(क) ईमाने-मुजमल और ईमाने-मुफ़स्सल में क्या फ़र्क़ है?

(ख) ईमाने-मुफ़स्सल में कितनी बातों पर ईमान लाने की तालीम दी गई है?

(ग) ईमाने-मुफ़स्सल और उसका तर्जमा सुनाइए।

(घ) फ़रिश्तों के बारे में आप क्या जानते हैं?

(ङ) आख़िरत के दिन पर ईमान लाना क्यों ज़रूरी है?

(च) रसूलों और अल्लाह की भेजी हुई किताबों पर ईमान लाने की तालीम क्यों दी गई है?

(छ) तक़दीर पर ईमान लाने का क्या मतलब है?

ख़ाली जगहों को भरिए :

(क) अल्लाह की हुकूमत में सब....................हैं।

(ख) अच्छाई-बुराई का फ़ैसला....................में होगा।

(ग) मरने के बाद हम सब......................होंगे।

(घ) ....का यक़ीन ही तो हमें नेक काम करने पर उभारता है।

(ङ) ....का डर ही तो हमें बुराइयों से बचाता है।

कुछ और काम

1. ईमाने-मुफ़स्सल और उसका तर्जमा लिखकर अपने घर और अपनी क्लास में लटकाइए।

♦♦♦

7

आख़िरत

यह जो कुछ तुम देख रहे हो एक दिन सब मिट जाएगा
इसकी जगह अल्लाह तआला दुनिया और बनाएगा

उस दुनिया में भले-बुरे लोग अलग-अलग हो जाएँगे
अपने-अपने भले-बुरे कामों का बदला पाएँगे

ज़र्रा भर भी काम किसी का होगा, तोला जाएगा
छुप न सकेगा भेद, भरे मजमे में खोला जाएगा

धौंस-धान्धली, धन और धोखा, कुछ न वहाँ काम आएगा
जिससे है कुछ आस तुम्हें, वो अपनी ख़ैर मनाएगा

अल्लाह जिनसे राज़ी होगा वो सब जन्नत पाएँगे
अल्लाह जिनसे नाखुश होगा वो दोज़ख़ में जाएँगे

देखो मियाँ 'माइल' मौक़ा है जो कुछ करना है कर लो
मौला की मर्ज़ी के मोती अपने दामन में भर लो

—माइल ख़ैराबादी

8

फ़िक़ही इस्तिलाहें

फ़िक़ह के माने हैं 'सूझ-बूझ'। दीन की गहरी बसीरत (समझ) और गहरा इल्म व्रनेवाले आलिमों ने क़ुरआन और हदीस पर सालों ख़ूब ग़ौर-फ़िक्र करके हमारी ज़िन्दगी ो सारी ज़रूरतों के लिए बहुत-से मसाइल 'समझ-समझकर' निकाले हैं। और इन ज़रूरी साइल को एक ख़ास तरतीब के साथ किताबों में जमा कर दिया है। इन मसाइल और हकाम को 'फ़िक़ह' कहते हैं। फ़िक़ह जाननेवाले आलिम को 'फ़क़ीह' कहते हैं, और क़ीह की जमा (बहुवचन) फ़ुक़हा है।

फ़िक़ह में जो अहकाम बयान किए गए हैं, उन सबकी हैसियत बराबर नहीं है। कुछ हकाम तो ऐसे हैं जिनका करना बहुत ही ज़रूरी है। उनको न करनेवाला गुनाहगार है और नकार करनेवाला काफ़िर हो जाता है। कुछ ऐसे हैं जिनके करने का बड़ा ही सवाब है, किन न किए जाएँ तो कोई गुनाह भी नहीं। कुछ ऐसे हैं जिनसे बचना बहुत ज़रूरी है, न चनेवाला गुनाहगार है। कुछ ऐसे हैं जिनसे बचने की कोशिश करनी चाहिए और अगर न च सकें तो कोई गुनाह भी नहीं। कुछ अहकाम ऐसे हैं कि अगर थोड़े-से लोग भी उनको ंजाम दे लें तो सबकी तरफ़ से अदा हो जाते हैं—अहकाम की इन मुख़्तलिफ़ हैसियतों के तहाज़ से फ़िक़ह की किताबों में इनके अलग-अलग नाम हैं और इनको 'फ़िक़ही इस्तिलाहें' हते हैं। इन इस्तिलाहों को समझकर याद कर लेना चाहिए।

़र्ज़

जो हुक्म क़ुरआन मजीद और हदीस शरीफ़ से या सिर्फ़ क़ुरआन मजीद या बहुत-सी दीसों से अच्छी तरह साबित हो उसको फ़र्ज़ कहते हैं। इसे न माननेवाला काफ़िर है और ो शख़्स इसे बग़ैर उज़्र के छोड़े वह गुनाहगार है। अल्लाह उसको सख़्त अज़ाब देगा। 'फ़र्ज़' ी दो क़िस्में हैं :

(1) फ़र्ज़े-ऐन,

(2) फ़र्ज़े-किफ़ाया।

1. फ़र्ज़े-ऐन : फ़र्ज़े-ऐन वह है जिसका करना हर एक के लिए ज़रूरी है। जैसे पाँचों की नमाज़, रमज़ान शरीफ़ के रोज़े, साहिबे-निसाब होने की सूरत में ज़कात देना इस्तिताअ़त हो तो ख़ानए-काबा का हज, वग़ैरह।

2. फ़र्ज़े किफ़ाया : फ़र्ज़े-किफ़ाया वह है जिसका करना हर एक के लिए अलग-अलग न हो, बल्कि वह एक इज्तिमाई ज़िम्मेदारी हो कि अगर मुहल्ले के कुछ लोग अदा कर दें कुछ न करें तो सबकी तरफ़ से अदा हो जाता है। और अगर कोई भी अदा न करे तो सब गुनाहगार होंगे और अल्लाह सबको सख़्त सज़ा देगा। जैसे, जनाज़े की नमाज़, मुहल्ले के कुछ आदमियों ने पढ़ ली और कुछ ने नहीं पढ़ी तो सबकी तरफ़ से फ़र्ज़ हो गया और अगर किसी ने भी नहीं पढ़ी तो सब के सब सख़्त गुनाहगार होंगे।

वाजिब

वाजिब का करना भी हर एक के लिए ज़रूरी है। जो शख़्स बग़ैर उज़्र के मामूली समझकर छोड़ देगा वह गुनाहगार होगा। लेकिन अगर कोई आदमी उसको अल्लाह का न माने तो उसको काफ़िर नहीं कहेंगे। जैसे जुमा की नमाज़ फ़र्ज़ है और ईद की न वाजिब। अगर कोई शख़्स जुमा की नमाज़ को अल्लाह का हुक्म न माने तो वह काफ़ि लेकिन अगर कोई ईद की नमाज़ को अल्लाह का हुक्म न समझे तो उसको क नहीं कहेंगे। लेकिन न पढ़नेवाला सख़्त गुनाहगार होगा। कुछ लोग वाजिब की इस्ति को नहीं मानते। ऐसे लोगों के नज़दीक कुछ वाजिब हुक्म, फ़र्ज़ हैं और कुछ सु मुअक्कदा।

सुन्नत

सुन्नत वह है जिस काम को प्यारे नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने किय या करने का हुक्म दिया हो। इसकी दो क़िस्में हैं—

(1) सुन्नते-मुअक्कदा (2) सुन्नते-ग़ैरमुअक्कदा।

(1) सुन्नते-मुअक्कदा : जिस काम को प्यारे नबी (सल्ल०) या प्यारे सहाबा (रज़ि०) ह करते रहे हों और बग़ैर किसी उज़्र के कभी न छोड़ा हो या आप (सल्ल०) ने करने का दिया हो वह सुन्नते-मुअक्कदा है। सुन्नते-मुअक्कदा का हुक्म यह है कि जो शख़्स किसी उज़्र के छोड़ेगा वह गुनाहगार होगा। हाँ, अगर कभी इत्तिफ़ाक़ से छूट जाए तो अ माफ़ फ़रमा देगा।

2) **सुन्नते-ग़ैरमुअक्कदा :** वह काम जिसको प्यारे नबी (सल्ल॰) या सहाबा (रज़ि॰) ने अक्सर किया हो, लेकिन पाबन्दी से नहीं, बल्कि कभी छोड़ भी दिया हो। इसके करनेवाले को सवाब मिलेगा और न करनेवाले को अज़ाब न होगा।

मुस्तहब

जिस काम को प्यारे नबी (सल्ल॰) ने पाबन्दी से न किया हो, बल्कि कभी-कभी किया हो। इसके करनेवाले को सवाब मिलेगा और जो न करे उसपर कोई गुनाह नहीं। मुस्तहब को इस्तिलाह में 'नफ़्ल' और 'मन्दूब' भी कहते हैं।

हराम

जिस काम से बचने के लिए क़ुरआन मजीद और हदीस में साफ़-साफ़ हुक्म दिया गया हो वह **हराम** है। जो शख़्स हराम को हराम न समझे वह काफ़िर है और हराम को हराम समझकर न बचनेवाला बड़ा गुनाहगार और बदतरीन सज़ा के लायक़ है। जैसे शराब, जुआ, चोरी, झूठ वग़ैरह।

मकरूह

जिस काम से बचने की ताकीद हदीस में की गई हो उसको 'मकरूह' कहते हैं। मकरूह की दो क़िस्में हैं—

(1) मकरूहे-तहरीमी (2) मकरूहे-तनज़ीही।

(1) **मकरूहे-तहरीमी :** वह काम जिससे बचना ज़रूरी है। जो शख़्स बग़ैर किसी उज़्र के ऐसा काम करेगा वह गुनाहगार होगा, अगर कोई उसको मकरूह न माने तो उसको काफ़िर नहीं कहेंगे। लेकिन मुसलमान को चाहिए कि ऐसे कामों से सख़्ती के साथ बचे, जैसे कुत्ते और सूअर वग़ैरह का जूठा।

(2) **मकरूहे-तनज़ीही :** वह काम जिससे मुसलमान को बचना चाहिए और उससे बचने का बहुत सवाब है। अगर कोई करे तो गुनाह भी नहीं है, लेकिन पसन्दीदा भी नहीं है। जैसे बिल्ली का जूठा या कुछ लोगों के नज़दीक तम्बाकू खाना या पीना।

मुबाह

वह काम जिसके करने का कोई सवाब नहीं और न करने पर कोई गुनाह नहीं। जैसे बग़ैर शर्त लगाए कबड्डी खेलना, फुटबॉल खेलना वग़ैरह।

नजिस

जिस पानी से पाकी हासिल न हो सके उसको 'नजिस' कहते हैं।

ताहिर

जो पानी पाक हो और उससे पाकी हासिल की जा सके उसको 'ताहिर' कह

मशकूक

जिस पानी के पाक और नापाक होने में शक हो उसको 'मशकूक' कहते हैं गधे, खच्चर का जूठा पानी या जिसमें हाथ डाल दिया हो।

अभ्यास

1. **जवाब दीजिए :**
   - (1) फ़िक़्ह किसे कहते हैं?
   - (2) फ़र्ज़ की कितनी क़िस्में हैं?
   - (3) हदीस में जिस काम से बचने की ताकीद की गई है उसे क्या कहते हैं?
   - (4) नजिस और ताहिर में क्या फ़र्क़ है?
   - (5) मुस्तहब को इस्तिलाह में और क्या कहा जाता है?
2. **नीचे लिखी फ़िक़्ही इस्तिलाहात की तारीफ़ (परिभाषा) कीजिए–**

   (1) फ़र्ज़, (2) वाजिब, (3) सुन्नत, (4) हराम, (5) मुस्तहब।
3. **नीचे लिखे आमाल की फ़िक़्ही हैसियत क्या है?**

जैसे :	जनाज़े की नमाज़	फ़र्ज़े-किफ़ाया
(1)	पाँचों वक़्त की नमाज़ें	
(2)	जुमा की नमाज़	

(3) इदैन की नमाज़ [ ]

(4) शराब [ ]

(5) चोरी [ ]

(6) झूठ [ ]

(7) कुत्ते और सूअर का जूठा [ ]

(8) फुटबॉल खेलना [ ]

(9) तम्बाकू खाना [ ]

नीचे के वाक्यों को ग़ौर से पढ़िए और सही वाक्य पर (√) और ग़लत पर (×) का निशान लगाइए–

(1) जिस पानी के पाक और नापाक होने में शक हो उसको नजिस कहते हैं। ( )

(2) अगर कोई मकरूहे-तहरीमी को मकरूह न माने तो उसको काफ़िर कहेंगे। ( )

(3) जिस काम को प्यारे नबी (सल्ल॰) या सहाबा (रज़ि॰) हमेशा करते रहे हों या आप (सल्ल॰) ने करने का हुक्म दिया हो वह सुन्नते-मुअक्कदा है। ( )

(4) फ़र्ज़े-ऐन वह है जिसका करना हर एक के लिए ज़रूरी है। ( )

(5) जो शख़्स हराम को हराम न समझे वह काफ़िर है। ( )

(6) फ़िक़्ह जाननेवाले आलिम को मुफ़स्सिर कहते हैं। ( )

◆◆◆

9

तहारत-1

अल्लाह तआला के पसन्दीदा बन्दे वे हैं जो ख़ूब पाक-साफ़ रहते हैं। पाव
सफ़ाई को 'तहारत' कहते हैं। प्यारे नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़
"पाक-साफ़ रहना आधा ईमान है।" हम हर वक़्त पाक-साफ़ रहने की कोशिश क
पाँच वक़्त की नमाज़ पढ़नेवाला गन्दा और नापाक कैसे रह सकता है! पाकी और
के बग़ैर तो नमाज़ हो ही नहीं सकती। प्यारे रसूल (सल्ल॰) का इरशाद है, "जन्नत क
नमाज़ है, और नमाज़ की कुंजी पाकी और सफ़ाई है।"

मुसलमान हर तरह की नापाकी और गन्दगी से दूर रहता है। वह अपने ज़ा
भी पाक रखता है और बातिन को भी। ज़ाहिर की पाकी तो यह है कि वह अपना
अपने कपड़े, रहने-सहने की जगह, हर चीज़ को पाक-साफ़ रखता है। बातिन की पा
है कि वह कुफ़्र और शिर्क की बातों से अपने दिल को पाक रखता है। बुरे ख़याल
में नहीं लाता। झूठ, ग़ीबत, तोहमत, बुख़्ल और बेहयाई की बातें नहीं करता। दिल म
से दुश्मनी और हसद नहीं रखता। घमंड नहीं करता। अल्लाह को एक मानता है औ
बन्दों के साथ मुहब्बत रखता है। ग़रज़ उसका जिस्म भी और उसका दिल भी हर
और नापाकी से पाक होता है। इसी लिए तो प्यारे नबी (सल्ल॰) ने फ़रमाया है, "तह
कुल का कुल दीन है।"

नापाकी और गन्दगी से हम इस तरह घबराते हैं जिस तरह मछली खुश्की से
है। हम कोशिश करते हैं कि नापाकी की क़िस्में और पाकी हासिल करने के तरीक़े ह
मालूम हों। प्यारे नबी (सल्ल॰) का हम पर बड़ा ही एहसान है कि आप (सल्ल॰) ने ह
बातें साफ़-साफ़ बता दी हैं। कौन-सी चीज़ें पाक हैं, कौन-सी चीज़ें नापाक हैं, किन
आदमी नापाक हो जाता है और कैसे पाक होता है—ये तमाम बातें आप (सल
खोल-खोलकर बयान फ़रमा दी हैं। और तरह-तरह से आप (सल्ल॰) ने हमें उभारा है
हमेशा पाक-साफ़ रहें और कभी गन्दगी के क़रीब भी न फटकें।

ासत

नापाकी को 'नजासत' भी कहते हैं। 'नजासत' दो तरह की होती है। 'नजासते-हक़ीक़ी' : 'नजासते-हुक्मी'। इन दोनों नजासतों का मतलब, हुक्म और इनसे पाक होने का क़ा हमें अच्छी तरह याद रखना चाहिए, ताकि हम पाक-साफ़ और साफ़-सुथरे रह सकें। ासते-हुक्मी' के बारे में हम अगले सबक़ में पढ़ेंगे। आइए, पहले 'नजासते हक़ीक़ी' के में जानकारी हासिल करते हैं।

ासते-हक़ीक़ी

नजासते-हक़ीक़ी वह नापाकी है जो आँखों से नज़र आती है, जिससे हर इनसान ई तौर पर घिन करता और बचता है और अपनी हर चीज़ को उससे बचाने और साफ़ ने की कोशिश करता है।

नजासते-हक़ीक़ी की दो क़िस्में हैं—'नजासते-ग़लीज़ा' और 'नजासते-ख़फ़ीफ़ा'।

नजासते-ग़लीज़ा : यानी वह सख़्त नापाकी जिसके नापाक होने में कोई शक ही नहीं। शख़्स उसको नापाक ही समझता है और उसके पाक होने का गुमान भी नहीं करता। आदमी का पेशाब और पाख़ाना, आदमी का ख़ून, जानवरों का ख़ून, घोड़े-गधों की ;, कुत्ते, बिल्ली का पाख़ाना वग़ैरह। सूअर की तो हर चीज़ नजासते-ग़लीज़ा है। अगर ये ं कपड़े, बदन, चौकी, चारपाई, कुर्सी वग़ैरह पर लग जाएँ तो उनको तीन बार धोना ह़िए और जिस जगह नजासत लगी हो उसे ख़ूब रगड़-रगड़कर मलना चाहिए, ताकि -धब्बा न रहे। कपड़ा हो तो तीन बार निचोड़कर पाक करना चाहिए।

और अगर ये गन्दगियाँ बहुत थोड़ी-सी किसी चीज़ पर लग गई हों और इत्तिफ़ाक़ उसी हालत में नमाज़ पढ़ ली तो नमाज़ हो जाएगी, लेकिन बार-बार ऐसा करना और -बूझकर करना बिल्कुल ठीक नहीं, बल्कि जब भी किसी चीज़ में गन्दगी लग जाए और नापाक हो जाए तो फ़ौरन उसे पाक करने का एहतिमाम करना चाहिए।

नजासते-ख़फ़ीफ़ा : वह नापाकी जो ग़लीज़ा के मुक़ाबले में ज़रा हल्की है। वह इस तरह कुछ दलीलों से उसके पाक होने का भी गुमान होता है। 'नजासते-ग़लीज़ा' के मुक़ाबले नजासते-ख़फ़ीफ़ा' का हुक्म भी कुछ हल्का और नर्म है। जैसे हलाल जानवरों का पेशाब हराम परिन्दों की बीट वग़ैरह।

अगर ये चीज़ें बदन या कपड़े वग़ैरह पर लग जाएँ और चौथाई हिस्से से व
लगी हों तो पाक किए बग़ैर नमाज़ नहीं पढ़नी चाहिए। अगर कभी पढ़ ली तो न
जाएगी, लेकिन मकरूह होगी। इससे परहेज़ करने और गन्दगी को फ़ौरन धोने औ
करने की आदत डालनी चाहिए।

- अगर जूते या ज़मीन पर पाख़ाना या लीद लग जाए और सूख जाए तो खु से ज़मीन और जूता पाक हो जाता है और अगर नापाकी का निशान और ध मिट जाए तो उस ज़मीन पर इत्मीनान के साथ नमाज़ पढ़ सकते हैं।

इस्तिंजा

पेशाब और पाख़ाना करने के बाद पाकी हासिल करने को 'इस्तिंजा' क
पेशाब और पाख़ाने से फ़ारिग़ होकर पहले ढेलों से पाकी हासिल की जाए, फिर प
धोकर अच्छी तरह इत्मीनान हासिल कर लेना चाहिए। मिट्टी के ढेले अगर न मि
तो कंकर, पत्थर, पक्की ईंट या कोई और ऐसी चीज़ जिससे पाकी हासिल हो, इस्तेम
सकते हैं। हाँ, हड्डी, कोयला, गोबर या लिखे हुए काग़ज़ से इस्तिंजा न करना चाहि
ऐसे कंकर, पत्थर या ईंट से भी इस्तिंजा नहीं करना चाहिए जिससे तकलीफ़ पहुँचे।
इस्तिंजा ख़ुश्क कीजिए तो अलग तन्हाई की जगह में कीजिए। आम जगहों पर सबके
कमरबन्द पकड़े इस्तिंजा ख़ुश्क करना बड़ी बद-तहज़ीबी और बद-ज़ौक़ी की बात
नापसन्दीदा हरकत से बहुत परहेज़ कीजिए और अगर कोई ऐसा करता हो तो उस
बताइए कि यह बात इस्लामी अदब, वक़ार और तहज़ीब के ख़िलाफ़ है।

इस्तिंजा हमेशा बाएँ हाथ से कीजिए। अगर किसी जगह ढेले न मिल सकें त
पानी से भी पाकी हासिल की जा सकती है। आजकल तो टिश्यू पेपर का भी रिवाज
है।

पाकी हासिल करने के लिए अल्लाह तआला ने दो चीज़ें पैदा फ़रमाई हैं औ
ही बहुत आम हैं, पानी और मिट्टी। हमें पाकी हासिल करने में कभी सुस्ती नही
चाहिए। अल्लाह के सच्चे दीन ने हमारे लिए पाकी हासिल करना बहुत आसान ब
है और प्यारे रसूल (सल्ल०) ने पाक होने के सारे तरीक़े भी खोल-खोलकर बयान फ़र
हैं। जब भी हमारी कोई चीज़ नापाक हो जाए तो फ़ौरन पाक कर लेना चाहिए अ
भी हमेशा पाक-साफ़ रहना चाहिए। अल्लाह तआला को वही बन्दे ज़्यादा पसन्द हैं
पाक-साफ़ रहते हैं।

शब्दार्थ और टिप्पणी

(1)	कुफ़्र	=	सत्य का इनकार
(2)	शिर्क	=	बहुदेववाद
(3)	तबई	=	स्वाभाविक, प्राकृतिक
(4)	हसद	=	ईर्ष्या, डाह
(5)	गुमान	=	शक व शबूहा, सन्देह, भ्रम
(6)	बद-तहज़ीबी	=	तहज़ीब के ख़िलाफ़
(7)	बदज़ौक़ी	=	ख़राब आदत
(8)	बातिन	=	छुपा हुआ, अन्दरूनी हिस्सा, दिल

अभ्यास

ावाब दीजिए :

(1) तहारत किसे कहते हैं?
(2) ज़ाहिर और बातिन की पाकी में क्या फ़र्क़ है?
(3) नजासते-ग़लीज़ा की तारीफ़ (परिभाषा) कीजिए और मिसाल भी दीजिए।
(4) नजासते-ख़फ़ीफ़ा किसे कहते हैं और उसका क्या हुक्म है?
(5) किन-किन चीज़ों से पाकी हासिल की जाती है?
(6) तहारत के बारे में प्यारे रसूल (सल्ल॰) के क्या इरशादात हैं?

ीर के निशान की मदद से सही जोड़े बनाइए :

(अ)	(ब)
मुसलमान	वह नापाकी जो आँखों से नज़र आती है।
नापाकी	हर तरह की नापाकी और गन्दगी से दूर रहता है।
नजासते-हक़ीक़ी	वह नापाकी जो ग़लीज़ा के मुक़ाबले में जरा हल्की होती है।
नजासते-ख़फ़ीफ़ा	पेशाब और पाख़ाना करने के बाद पाकी हासिल करने को कहते हैं।
इस्तिंजा	नजासत

ीचे लिखी चीज़ों को पाक करने का क्या तरीक़ा है?

(क) अगर जूते या ज़मीन पर पाख़ाना या लीद लग जाए और सूख जाए?
(ख) आदमी या जानवरों का ख़ून कपड़े या किसी चीज़ पर लग जाए?
(ग) हलाल जानवरों का पेशाब अगर कपड़े या बदन वग़ैरह पर लग जाए?

10

तहारत-2

नजासते-हक़ीक़ी की क़िस्में, उनको दूर करने और पाक होने के तरीक़े तो हमे सबक़ से मालूम हो गए। अब हम 'नजासते-हुक्मी' की क़िस्में, उनको दूर करने औ होने के तरीक़े पढ़ेंगे।

नजासते-हुक्मी

निजासते-हुक्मी वह नापाकी है जो नज़र नहीं आती, बल्कि प्यारे रसूल (स अलैहि व सल्लम) के बताने से मालूम हुई है। जैसे कोई शख़्स पेशाब या पाख़ाना करे की रियाह ख़ारिज हो जाए, बदन से ख़ून या पीप निकल आए, टेक लगाकर सो मुँह भर कर क़ै आ जाए, इस तरह की तमाम सूरतों में आदमी नापाक हो जाता है उ तक वुज़ू न कर ले, न वह नमाज़ पढ़ सकता है और न क़ुरआन मजीद छूना उस दुरुस्त है। यह नापाकी और नजासत आदमी को नज़र नहीं आती। इसलिए इस को 'नजासते-हुक्मी' कहते हैं, यानी चूँकि इस पर शरीअत ने नापाकी का हुक्म लग इसलिए यह नापाकी है। इसको 'नजासते-शरई' भी कहते हैं।

नजासते-हुक्मी को 'हदस' भी कहते हैं। 'हदस' की दो क़िस्में हैं–

(1) हदसे-असग़र (2) हदसे-अकबर।

हदसे-असग़र

यानी नजासते-हुक्मी की वह हल्की क़िस्म जिसमें सिर्फ़ वुज़ू या तयम्मुम व पाकी हासिल हो जाती है। हदसे-असग़र के तहत वे तमाम बातें आती हैं जो नजास में (ऊपर) मिसाल के तौर पर बयान की गई हैं।

हदसे-अकबर

यानी नजासते-हुक्मी की वह हालत जिसमें ग़ुस्ल किए बग़ैर या पानी न मि सूरत में तयम्मुम किए बग़ैर न आदमी नमाज़ पढ़ सकता है, न क़ुरआन मजीद पढ़ है और न मस्जिद में दाख़िल होना उसके लिए दुरुस्त है।

हदसे-अकबर किन-किन बातों से होता है, यह आप इंशाअल्लाह अगली किताबों में ।। यहाँ सिर्फ़ इतना जान लीजिए कि शरीअत ने नजासते-हुक्मी से पाक होने के लिए और ग़ुस्ल का हुक्म दिया है और अगर पानी न मिल सके तो तयम्मुम से भी पाकी ल हो जाती है। अब हम वुज़ू, ग़ुस्ल और तयम्मुम के तरीक़े और उनके अहकाम पढ़ेंगे।

वुज़ू हर नमाज़ के लिए फ़र्ज़ है, चाहे नमाज़ फ़र्ज़ हो या नफ़्ल। नमाज़े-जनाज़ा और ए-तिलावत के लिए भी वुज़ू फ़र्ज़ है।

काबा का तवाफ़ करने और क़ुरआन पाक को छूने के लिए वुज़ू करना वाजिब है । से पहले और सोते वक़्त वुज़ू करना सुन्नत है। हम कोशिश करते हैं कि अक्सर बावुज़ू इसलिए कि बावुज़ू रहने का बहुत ज़्यादा अज्र व सवाब है।

के फ़र्ज़

वुज़ू में चार फ़र्ज़ हैं–

पेशानी के बालों की जड़ से लेकर ठोड़ी के नीचे तक और एक कान की लौ से दूसरे कान की लौ तक पूरे चेहरे को एक बार धोना।

दोनों हाथों को उँगलियों से लेकर कोहनियों तक एक बार धोना।

चौथाई सिर का मसह करना।

दोनों पैरों को टख़नों तक एक बार धोना।

की सुन्नतें

वुज़ू में पन्द्रह सुन्नतें हैं–

नीयत करना कि मैं सिर्फ़ अल्लाह तआला की रिज़ा के लिए पाक-साफ़ होता हूँ।

'बिस्मिल्लाह' कहकर वुज़ू शुरू करना।

मुँह धोने से पहले दोनों हाथों को गट्टों तक धोना।

मुँह में पानी भरकर कुल्ली करना, ताकि पानी हलक़ तक पहुँच जाए। मगर रोज़े में एहतियात ज़रूरी है।

मिसवाक करना। मिसवाक करने की बड़ी फ़ज़ीलत है। इसका एहतिमाम करना चाहिए।

(6) नाक में पानी डालना।

(7) हाथों को उँगलियों की तरफ़ से शुरू करके कोहनियों तक धोना।

(8) हाथ-पैर की उँगलियों में ख़िलाल करना।

(9) पूरे सिर का एक बार मसह करना।

(10) दोनों कानों का एक बार मसह करना।

(11) अंगों को धोते वक़्त दाएँ अंग से शुरू करना।

(12) तरतीब का लिहाज़ रखना।

(13) लगातार करना, यानी एक अंग धोने के बाद दूसरा अंग धोने में देरी न क

(14) हर अंग को तीन बार अच्छी तरह धोना।

(15) वुज़ू करने के बाद यह दुआ पढ़ना :

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْنِىْ مِنَ التَّوَّابِيْنَ وَاجْعَلْنِىْ مِنَ الْمُتَطَهِّرِيْنَ

अल्ला-हुम्मज-अ़लनी मिनत्तव्वाबी-न वजअ़लनी मिनल मु-त-तहहिरीन।

तर्जमा : ऐ अल्लाह, मुझे उन लोगों में से कर दे जो बहुत ज़्यादा तौब करते हैं और उन लोगों में से बना दे जो ख़ूब पाक-साफ़ रहते हैं।

वुज़ू के मकरूहात

वुज़ू में आठ बातें मकरूह हैं—

(1) तरतीब के ख़िलाफ़ वुज़ू करना।

(2) पानी ज़रूरत से ज़्यादा ख़र्च करना।

(3) पानी ज़रूरत से कम ख़र्च करना कि अंग, पूरी तरह न धुल सकें।

(4) वुज़ू करते वक़्त बिला वजह दुनिया की बातें करना।

(5) मुँह पर पानी का छपका मारना या दूसरे अंगों पर ज़ोर से छींटा मारना।

(6) अंगों को बिना वजह तीन बार से ज़्यादा धोना।

(7) तीन बार मसह करना।

(8) वुज़ू के बाद हाथों का पानी छिड़कना।

ल

'नजासते-हुक्मी' से पाक होने का एक तरीक़ा ग़ुस्ल भी है। ग़ुस्ल से ख़ूब पाकी ाल हो जाती है। इसलिए हम जुमे के दिन तो ज़रूर ही ग़ुस्ल करते हैं।

हम ऐसी जगह बैठकर ग़ुस्ल करते हैं जो पाक भी हो और जहाँ आड़ भी हो, ताकि र किसी की नज़र न पड़े। पहले हम गट्टों तक हाथ धोते हैं, फिर ज़रूरत हो तो इस्तिंजा ते हैं। फिर पूरा वुज़ू करते हैं। वुज़ू के बाद बदन पर अच्छी तरह पानी डालकर ख़ूब -मलकर बदन साफ़ करते हैं और फिर दो बार पानी बदन पर डालकर बदन किसी कपड़े तौलिए से अच्छी तरह पोंछ डालते हैं।

ल के फ़र्ज़

ग़ुस्ल में तीन बातें फ़र्ज़ हैं—

(1) ख़ूब अच्छी तरह कुल्ली करना।

(2) नाक में पानी डालकर अच्छी तरह साफ़ करना।

(3) पूरे जिस्म पर एक बार ख़ूब अच्छी तरह पानी डालना कि जिस्म का कोई हिस्सा । बराबर भी सूखा न रह जाए।

म्मुम

अगर हम किसी ऐसी जगह हों जहाँ पानी न मिले, या पानी तो हो लेकिन पानी के ामाल से बीमार पड़ जाने या बीमारी बढ़ जाने का डर हो, तो ऐसी हालत में हमारे बान ख़ुदा ने तयम्मुम करके पाक होने का तरीक़ा बताया है। 'तयम्मुम' पाक मिट्टी से ो हासिल करने को कहते हैं। वुज़ू और ग़ुस्ल दोनों के बजाय तयम्मुम कर सकते हैं और ों के लिए तयम्मुम एक ही तरह का होता है।

म्मुम के फ़र्ज़

तयम्मुम में तीन बातें फ़र्ज़ हैं—

(1) अल्लाह तआला की ख़ुशनूदी के लिए पाक होने की नीयत करना।

(2) दोनों हाथों को मिट्टी पर मारकर चेहरे पर मलना।

(3) फिर दोबारा दोनों हाथों को मिट्टी पर मारकर कोहनियों समेत दोनों हाथों पर मलना।

तयम्मुम का तरीक़ा

तयम्मुम का तरीक़ा यह है कि पहले 'बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम' कहकर तआला की ख़ुशनूदी हासिल करने के लिए पाक-साफ़ होने की नीयत करते हैं, फि हाथों को हथेलियों की तरफ़ से पाक मिट्टी पर मारते हैं और दोनों हाथ ख़ूब अच्छ अपने पूरे चेहरे पर इस तरह फेर लेते हैं कि कोई हिस्सा रह न जाए। फिर दोबार दोनों हाथों को हथेलियों की तरफ़ से पाक मिट्टी पर मारकर, पहले बाएँ हाथ को दा पर कोहनी समेत अच्छी तरह फेर लेते हैं और फिर दाएँ हाथ को बाएँ हाथ पर कोहर्न ख़ूब अच्छी तरह फेर लेते हैं। अगर चेहरे पर दाढ़ी निकल आई हो तो ख़िलाल भी व हैं।

किन चीज़ों से तयम्मुम हो सकता है

अगर पाक मिट्टी न मिल सके तो पत्थर, कंकर, रेत, चूना, मिट्टी की क पक्की ईंट, ईंटों या पत्थरों की दीवार, मिट्टी के बर्तन वग़ैरह से तयम्मुम किया जा है। अगर किसी लकड़ी, कपड़े या किसी और पाक चीज़ पर गर्द पड़ी हुई हो तो हाथ मारकर भी तयम्मुम किया जा सकता है।

ग़र्ज़ पाक-साफ़ रहने के लिए अल्लाह तआला ने हमें बड़ी सहूलत बख़्शी है के इस एहसान का तक़ाज़ा यह है कि हम हर वक़्त पाक-साफ़ रहने की कोशिश

शब्दार्थ और टिप्पणी

रियाह ख़ारिज होना	=	हवा ख़ारिज होना
शरीअत	=	इस्लामी क़ानून
छपका मारना	=	पानी का छींटा मारना

अभ्यास

1. जवाब दीजिए :

(1) नजासते-हुक्मी की तारीफ़ कीजिए और मिसाल भी दीजिए।

(2) नजासते-हुक्मी को नजासते-शरई क्यों कहते हैं?

(3) वुज़ू के फ़र्ज़ लिखिए।

(4) ग़ुस्ल के फ़र्ज़ लिखिए।
(5) तयम्मुम किन हालतों में किया जाता है?
(6) तयम्मुम करने का क्या तरीक़ा है?
(7) पाक मिट्टी न मिलने पर और किन-किन चीज़ों से तयम्मुम किया जा सकता है?

नीचे दी गई दो फ़िक़ही इस्तिलाहों में से सही जवाब चुनकर ख़ाली जगहों को भरिए।

(1) नजासते-हुक्मी को................भी कहते हैं। (हदस, नजासते-ग़लीज़ा)
(2) नजासते-हुक्मी की वह हल्की क़िस्म जिसमें सिर्फ़ वुज़ू या तयम्मुम करने से पाकी हासिल हो जाती है उसे.......................कहते हैं। (हदसे-अकबर, हदसे-असग़र)
(3) नमाज़े-जनाज़ा और सज्दए-तिलावत के लिए वुज़ू..............है। (फ़र्ज़, सुन्नत)
(4) खानए-काबा का तवाफ़ करने और क़ुरआन मजीद को छूने के लिए वुज़ू..................है। (मुस्तहब, वाजिब)
(5) ग़ुस्ल से पहले और सोते वक़्त वुज़ू करना................है। (मुबाह, सुन्नत)

नीचे लिखी बातों में से कौन-सी बात वुज़ू में सुन्नत और कौन-सी मकरूह है, यह बताने के लिए उसके सामने (√) का निशान लगाइए।

	सुन्नत है	मकरूह है		सुन्नत है	मकरूह है
मिस्वाक करना			(6) हर अंग को तीन बार अच्छी तरह धोना		
तर्तीब का लिहाज़ रखना			(7) हाथ-पैर की उँगलियों में ख़िलाल करना		
तर्तीब के ख़िलाफ़ वुज़ू करना			(8) पानी ज़रूरत से ज़्यादा ख़र्च करना		
तीन बार मसह करना			(9) पानी ज़रूरत से कम ख़र्च करना		
वुज़ू करने में बिना वजह दुनिया की बातें करना			(10) पूरे सिर का एक बार मसह करना		

कुछ और काम

वुज़ू के बाद की दुआ और उसका तर्जमा याद कीजिए।
इस सबक़ (पाठ) की ज़रूरी बातें, जैसे वुज़ू के फ़र्ज़, सुन्नतें, मकरूहात, ग़ुस्ल के फ़र्ज़, तयम्मुम के फ़र्ज़ और ग़ुस्ल व तय्यमुम के तरीक़े ज़बानी याद कर लीजिए और उनको लिखकर अपने क्लास-रूम और घर में लटकाइए।

11

इबादत

नमाज़ की इस्तिलाहें

तकबीरे-तहरीमा : नमाज़ शुरू करते वक़्त 'अल्लाहु-अकबर' कहना। इसको त तहरीमा इसलिए कहते हैं कि इसके ज़रीए से बहुत-सी जाइज़ हराम कर ली जाती हैं। जैसे, खाना, पीना, बातचीत करना व

क़ियाम : नमाज़ में 'तकबीरे-तहरीमा' के बाद कुछ देर सीधा खड़ा होना।

क़िरअत : नमाज़ में क़ुरआन मजीद का कुछ हिस्सा पढ़ना।

रुकूअ़ : 'क़िरअत' के बाद झुकना।

सजदा : पेशानी और नाक ज़मीन पर टेक देना।

क़अदा : नमाज़ में 'अत्तहिय्यात' पढ़ने के लिए बैठना। तीन या चार रकअतवाली में दो क़अदे होते हैं। पहले को 'क़अदए-ऊला' और दूसरे को 'क़ अख़ीरा' कहते हैं। और दो रकअतवाली नमाज़ में एक ही 'क़अदा' हो

तसमीअ़ : रुकूअ़ से उठते वक़्त 'समिअल्लाहुलिमन हमिदह्' कहना।

तहमीद : 'रब्बना लकल हम्द' कहना।

तस्बीह : रुकूअ़ में 'सुब्हा-न रब्बियल अज़ीम' और सजदे में 'सुब्हा-न रब्बियल कहना।

तशह्हुद : 'क़अदे' में 'अत्तहिय्यात' पढ़ना।

क़ौमा : रुकूअ़ से उठकर सीधा खड़ा होना।

जलसा : पहले सजदे से उठकर ज़रा देर इत्मीनान से बैठना।

तअव्वुज़ : 'अऊज़ु बिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम' पढ़ना।

तसमिया : 'बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम' पढ़ना।

र्री और जहरी नमाज़

कुछ नमाज़ों में इमाम क़िरअत ज़ोर से करते हैं, कुछ में आहिस्ता। जिन नमाज़ों में ःरअत आहिस्ता से होती है वे सिर्री नमाज़ें कहलाती हैं। जैसे, ज़ुह्र और अस्र की नमाज़ें। ौर जिनमें क़िरअत ज़ोर से की जाती है वे जहरी नमाज़ें कहलाती हैं। जैसे मग़रिब, इशा ौर फ़ज्र की नमाज़ें।

अदीले-अरकान

'नमाज़ के तमाम अरकान को ठीक-ठीक इत्मीनान के साथ अदा करना। क़ौमा में तनी देर खड़ा होना और जलसे में इतनी देर बैठना कि सभी अंग अपनी-अपनी जगह त्मीनान से पहुँच जाएँ।

जदए-सह्व

सजदए-सह्व के माने हैं 'भूल का सजदा'। नमाज़ में अगर भूले से कोई एक या एक ज़्यादा 'वाजिब' छूट जाए या 'फ़र्ज़' और 'वाजिब' के अदा करने में ताख़ीर हो जाए या क़िरअत' ज़ोर से करने के वक़्त आहिस्ता करे या आहिस्ता क़िरअत के मौक़े पर ज़ोर से क़रअत कर दे या ईद की नमाज़ में तकबीरें कहना याद न रहे, इस तरह की सूरतों में दो जदे करने से उस कमी की तकमील हो जाती है। लेकिन अगर कोई फ़र्ज़ छूट जाए या ान-बूझकर कोई 'वाजिब' छोड़ दिया जाए तो सजदए-सह्व से काम नहीं चलेगा बल्कि माज़ दोबारा पढ़नी होगी। अगर वाजिब छूट जाने से सजदए-सह्व न किया तब भी बेहतर ही है कि नमाज़ दोबारा पढ़ी जाए।

सजदए-सह्व करने का तरीक़ा यह है कि आख़िरी क़अदे में 'अत्तहिय्यात' पढ़कर क तरफ़ सलाम फेर दे और फ़ौरन दो सजदे करे[1] फिर 'अत्तहिय्यात', 'दरूद और दुआ' ढ़कर दोनों तरफ़ सलाम फेरे। हदीस में यह भी है कि 'तशह्हुद', 'दुरूद शरीफ़ और दुआ' ो फ़ारिग़ होकर अल्लाहु-अकबर कहकर दो सजदे करे और फिर दोनों तरफ़ सलाम फेरे, सलिए कुछ लोग ऐसा करते हैं। इमाम के साथ मुक़तदी के लिए भी सजदए-सह्व में ारीक होना ज़रूरी है, चाहे मुक़तदी उस वाजिब के छोड़ने में शरीक न हो जिसकी वजह से माम सजदए-सह्व कर रहा है।

. उस्ताद अमली तौर पर समझाएँ।

सजदए-तिलावत

क़ुरआन मजीद में कुछ ऐसी आयतें हैं जिनके पढ़ने या सुनने से एक सजदा वाजिब[1] हो जाता है। इस सजदे को सजदए-तिलावत कहते हैं। सजदे की आयत नम पढ़े या बाहर, तकबीर कहकर सजदा करे। पूरे क़ुरआन मजीद में पन्द्रह आयतें ऐ जिनके पढ़ने या सुनने से सजदए-तिलावत करना ज़रूरी हो जाता है। कुछ लोगों के न चौदह सजदे हैं।[2]

इमाम के पीछे सूरा फ़ातिहा पढ़ना

प्यारे रसूल (सल्ल॰) ने सूरा फ़ातिहा पढ़ने की बहुत ताकीद फ़रमाई है और फ़र "जो शख़्स सूरा फ़ातिहा नहीं पढ़ता उसकी नमाज़ ही नहीं होती।" इसलिए कुछ ह इमाम के पीछे भी सूरा फ़ातिहा पढ़ना ज़रूरी क़रार देते हैं। इमाम अबू-हनीफ़ा (रह॰) अ नमाज़ पढ़नेवाले के लिए तो इसका पढ़ना ज़रूरी क़रार देते हैं, लेकिन इमाम के मुक़तदी को पढ़ने से रोकते हैं, इसलिए कि उनके नज़दीक इमाम का पढ़ना सब मुक़त की तरफ़ से काफ़ी हो जाता है।

रफ़अयदैन

मूँढों या कानों तक दोनों हाथों को उठाना 'रफ़अयदैन' कहलाता है। हदीस किताबों में है कि प्यारे नबी (सल्ल॰) जब नमाज़ शुरू फ़रमाते, रुकूअ में जाते या उठ 'रफ़अयदैन' करते। इसलिए बहुत-से हज़रात रुकूअ में जाते, उठते और तीसरी रकअ लिए खड़े होते वक़्त 'रफ़अयदैन' करते हैं। यानी मूँढों या कानों तक हाथ उठाते हैं। ले बहुत-से उलमा इसको सुन्नत नहीं मानते। वे कहते हैं कि शुरू-शुरू में तो प्यारे नबी (स ने कुछ दिनों तक यह काम किया, लेकिन फिर आप (सल्ल॰) का अमल यह था कि सिर्फ़ 'तकबीरे-तहरीमा' के लिए हाथ उठाते, इसके अलावा न उठाते।

---

1. हनफ़ी मसलकवाले इसे वाजिब कहते हैं और अहले-हदीस सुन्नत कहते हैं।
2. अहले-हदीस पन्द्रह सजदे मानते हैं और हनफ़ी चौदह सजदे क़रार देते हैं और सूरा हज्ज के आ रुकूअ़ का सजदा नहीं करते। शाफ़ई मसलकवाले भी चौदह क़रार देते है, वे सूरा, 'सॉद' का र नहीं मानते।

ामीन-बिल-जह्र

यानी ज़ोर से आमीन कहना। प्यारे रसूल (सल्ल॰) ने फ़रमाया है, "जब इमाम ामीन कहे तो तुम भी आमीन कहो।" मग़रिब, इशा और फ़ज्र की नमाज़ों में सूरा फ़ातिहा बाद जब इमाम आमीन कहे तो मुक़तदी भी ज़ोर से आमीन कहते हैं। यह सुन्नत है, किन इतनी ज़ोर से नहीं कि शोर लगे। इसी को 'आमीन-बिल-जह्र' कहते हैं। लेकिन हुत-से लोग आमीन आहिस्ता ही कहने को सुन्नत कहते हैं।

ुतरा

नमाज़ी के आगे से गुज़रना गुनाह है। इसलिए नमाज़ी को अपने आगे कोई लकड़ी ग़ैरह खड़ी कर लेनी चाहिए, इसी को सुतरा कहते हैं। प्यारे रसूल (सल्ल॰) जब ईदगाह शरीफ़ ले जाते तो अपने सामने बरछी खड़ी कर लेते थे।

अभ्यास

. जवाब दीजिए :

(1) नमाज़ शुरू करते वक़्त जो तकबीर कही जाती है उसे तकबीरे-तहरीमा क्यों कहते हैं?

(2) सजदए-सह्व कब किया जाता है?

(3) सजदए-सह्व का क्या तरीक़ा है?

(4) आमीन-बिल-जह्र क्या है?

(5) सुतरा किसे कहते हैं?

. नमाज़ की नीचे लिखी इस्तिलाहों की तशरीह (व्याख्या) कीजिए :

(1) तअदीले-अरकान, (2) सजदए-सहव, (3) रफ़अयदैन, (4) सजदए-तिलावत

. सही जोड़े लगाइए :

(क)	(ख)
(1) नमाज़ में क़ुरआन मजीद का कुछ हिस्सा पढ़ना	क़अदा
(2) पेशानी और नाक ज़मीन पर टेक देना	तशह्हुद

(3) नमाज़ में तकबीरे-तहरीमा के बाद कुछ देर सीधा खड़ा होना — सजदा
(4) अत्तहिय्यात पढ़ना — क़िरअत
(5) नमाज़ में अत्तहिय्यात पढ़ने के लिए बैठना — जलसा
(6) रुकूअ से उठकर सीधा खड़ा होना — क़ौमा
(7) क़िरअत के बाद झुकना — क़ियाम
(8) पहले सजदे से उठकर ज़रा देर इत्मीनान से बैठना — रुकूअ

4. नीचे लिखी मालूमात को सही (√) या ग़लत (×) का निशान लगाकर वाज़ेह कीजिए।

	सही	ग़लत
(1) तीन रकअतवाली नमाज़ में एक क़अदा होता है।		
(2) चार रकअतवाली नमाज़ में दो क़अदे होते हैं।	......	......
पहले को क़अदए-ऊला और दूसरे को क़अदए-अख़ीरा कहते हैं।	......	......
(3) जिन नमाज़ों में इमाम क़िरअत ज़ोर से करते हैं, उन्हें सिर्री नमाज़ें कहते हैं।	......	......

♦♦♦

नमाज़ के अज़कार

प्यारे रसूल (सल्ल॰) ने फ़रमाया, "नमाज़ ईमानवालों की मेअ़राज है।" मेअ़राज में ल्लाह तआ़ला ने प्यारे रसूल (सल्ल॰) को अपने पास बुलाकर आप (सल्ल॰) से बातें कीं। जब नमाज़ पढ़ते हैं तो अल्लाह तआ़ला के हुज़ूर खड़े होकर उससे बातें करते हैं, उसके मने अपनी ज़रूरतें रखते हैं और उससे माँगते हैं। नमाज़ में हम जो कुछ पढ़ते हैं और जो ाएँ माँगते हैं, उनको 'नमाज़ के अज़कार' कहते हैं। हम कोशिश करते हैं कि उन अज़कार मतलब ख़ूब अच्छी तरह समझ लें, ताकि अपने रब के सामने खड़े होकर हम जो बातें करें सोच-समझकर करें और उससे जो कुछ माँगे सोच-समझकर माँगें।

ना

سُبْحٰنَکَ اللّٰھُمَّ وَبِحَمْدِکَ وَتَبَارَکَ اسْمُکَ
وَتَعَالٰی جَدُّکَ وَلَآ اِلٰہَ غَیْرُکَ

सुब्हा-न कल्ला-हुम-म व बि-हम्दि-क, व तबा-र-कस्मु-क,
व तआला जद्दु-क, व ला इला-ह ग़ैरु-क।

तर्जमा

سُبْحَانَ सुब्हा-न पाक बरतर, बे ऐब	کَ क तू, तेरा, तेरे		اَللّٰھُمَّ अल्लाहुम-म ऐ अल्लाह	وَ व और	بِ बि साथ	حَمْدِ हम्दि शुक्र, तारीफ़
تَبَارَکَ तबा-र-क लाई और बरकतवाला	اِسْمُکَ इस्मु-क तेरा नाम	تَعَالٰی तआला बहुत ऊँची	جَدُّکَ जद्दु-क बुज़ुर्गी, शान	لَا ला नहीं	اِلٰہَ इला-ह कोई माबूद	غَیْرُ ग़ैरु सिवा

"पाक और बरतर है तू ऐ अल्लाह! शुक्र और तारीफ़ तेरे ही लिए है, बरकत और बरतरीवाला है तेरा नाम और बहुत ऊँची है तेरी शान, और तेरे सिवा कोई माबूद नहीं है।"

तअ़व्वुज़

اَعُوْذُبِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ

अऊज़ु बिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम।

اَعُوْذُ	بِاللّٰهِ	مِنَ	الشَّيْطٰنِ	الرَّجِيْمِ
अऊज़ु	बिल्लाहि	मि-न	अश्शैतानि	अर्रजीमि
मैं पनाह लेता हूँ	अल्लाह की	से	शैतान	धुतकारा हुआ,

"मैं पनाह लेता हूँ अल्लाह की शैतान से जो धुतकारा हुआ है।"

तस्मिया

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम।

بِسْمِ	اللّٰهِ	الرَّحْمٰنِ	الرَّحِيْمِ
बिस्मि	**अल्लाहि**	**अर्रहमानि**	**अर्रहीमि**
नाम की बरकत से	अल्लाह (की)	जोश के साथ बहुत ही रहम करनेवाला	बराबर रहम करने

"अल्लाह के नाम की बरकत से जो निहायत जोश के साथ रहम करनेवाला और बराबर रहम करनेवाला है।"

1. कुछ लोग तकबीरे-तहरीमा के बाद यह दुआ पढ़ते हैं—

اَللّٰهُمَّ بَاعِدْ بَيْنِيْ وَبَيْنَ خَطَايَایَ كَمَا بَاعَدْتَّ بَيْنَ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ ○ اَللّٰهُمَّ نَقِّنِيْ مِنْ خَطَايَایَ كَمَا يُنَقَّى الثَّوْبُ الْاَبْيَضُ مِنَ الدَّنَسِ ○ اَللّٰهُمَّ اغْسِلْ خَطَايَایَ بِالْمَآءِ وَالثَّلْجِ وَالْبَرْدِ○

अल्लाहुम-म बाइद बैनी व बैना ख़ताया-य कमा बाअत-त बैनल मशरिक़ि वल मग़रिब, अल्लाहुम-म नक़्क़िनी मिन ख़ताया-य कमा युनक़्क़सौबुल-अब्यज़ु मिनद-दनसि, अल्लाहुम्मग़सिल ख़ताया-य बिल-माइ वस्सल्जि वल बर्द।

"ऐ अल्लाह! तू मेरे गुनाहों को मुझसे इतना दूर कर दे जितनी दूरी तूने पूरब और पश्चिम के बीच कर रखी है। ऐ अल्लाह! तू मुझे गुनाहों से इस तरह पाक-साफ़ कर दे, जिस तरह सफ़ेद कपड़ा (धुलकर) मैल-कुचैल से पाक-साफ़ हो जाता है। ऐ अल्लाह! मेरे गुनाहों को धोकर साफ़ फ़रमा दे, पानी से, बर्फ़ से, ओलों से (और मेरे दिल को पाकी, ठंडक और इत्मीनान अता कर)।"

ा फ़ातिहा

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ○الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○مَالِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ○اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ○اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ○صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ○(اٰمِيْن)

अलहम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन। अर्रहमानिर्रहीम। मालिकी यौमिद्दीन। इय्या-क नअबुदु व इय्या-क नसतईन। इहदिनस्सिरातल मुस्तक़ीम। सिरातल लज़ी-न अन अम-त अलैहिम, ग़ैरिल मग़ज़ूबि अलैहिम व लज़्ज़ाल्लीन। (आमीन)

اَلْ	حَمْدُ	لِ	رَبِّ	اَلْعٰلَمِيْنَ
अल	**हम्दु**	**लि**	**रब्बि**	**आ-लमीन**
तमाम	तारीफ़, शुक्र	वास्ते	पालनेवाला, सारी ज़रूरतें पूरी करनेवाला मालिक, आक़ा, परवरदिगार	सारे जहान

مٰلِكِ	يَوْمِ	اَلدِّيْنِ	اِيَّاكَ	نَعْبُدُ
मालिकि	**यौम**	**दीन**	**इय्या-क**	**नअबुदु**
इख़्तियारात रखनेवाला	दिन	बदला, इनसाफ़	तेरी ही, तुझ ही से	हम इबादत करते हैं

نَسْتَعِيْنُ	اِهْدِنَا	اَلصِّرَاطَ	اَلْمُسْتَقِيْمَ	اَنْعَمْتَ	ـمْ
नस्तईन	इहदिना	सिरात	अलमुस्तकीम	अन अम-त	अ
हम मदद चाहते हैं	हमको दिखा और जमा	रास्ता	सीधा-सच्चा	तूने इनाम फ़रमाया	उ

اَلْمَغْضُوْبِ	اَلضَّآلِّيْنَ	اٰمِيْنَ
अलमग़ज़ूब	अज़-ज़ाल्लीन	आमीन
जिन पर ग़ज़ब नाज़िल किया गया	सीधी राह से गुमराह होनेवाले	ऐसा ही हो

"तमाम तारीफ़ और शुक्र अल्लाह ही के लिए है, जो परवरदिगार है सारे जहान का जो निहायत जोश व ख़रोश से रहम फ़रमाता है और बराबर रहम फ़रमाता रहता है। बदले के दिन का मालिक है। हम तेरी ही इबादत करते हैं और तुझी से मदद माँगते हैं। हमको सीधा-सच्चा रास्ता दिखा और उसपर जमा, उन लोगों का रास्ता जिनपर तूने इनाम फ़रमाया। उन लोगों का रास्ता नहीं जिनपर तेरा ग़ज़ब नाज़िल हुआ और न उन लोगों का रास्ता जो सीधी राह से भटक गए।" (ख़ुदाया! ऐसा ही हो।)

रुकूअ़ की तस्बीह

سُبْحَانَ رَبِّیَ الْعَظِیْمِ

सुब्हा-न रब्बियल अज़ीम

"पाक है मेरा परवरदिगार, अज़मतवाला।"

रुकूअ़ से उठने की तस्मीअ़

سَمِعَ اللّٰہُ لِمَنْ حَمِدَہٗ

समिअल्लाहु लिमन हमिदह

'अल्लाह ने उसकी सुन ली जिसने उसकी तारीफ़ की।'

े की तहमीद

رَبَّنَا لَکَ الْحَمْدُ

रब्बना लकल हम्द

"ऐ हमारे मालिक! सारी तारीफ़ तेरे ही लिए है।"

حَمْدًا کَثِیْرًا طَیِّبًا مُبَارَکًا فِیْهِ

हमदन कसीरन तय्यिबन मुबारकन फ़ीह।[1]

"बहुत ही ज़्यादा तारीफ़, पाकीज़गी और बरकत से भरपूर तारीफ़।"

दे की तस्बीह

سُبْحَانَ رَبِّیَ الْاَعْلٰی

सुब्हा-न रब्बियल आला

"पाक है मेरा परवरदिगार, सबसे ऊँचे मरतबेवाला।"

से की दुआ

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِیْ وَارْحَمْنِیْ وَاهْدِنِیْ وَاجْبُرْنِیْ وَعَافِنِیْ وَارْزُقْنِیْ ○

अल्लाहुम-मग़फ़िरली वरहम्नी वहदिनी वजबुरनी व आफ़िनी वरज़ुक़्नी।[2]

"ऐ अल्लाह! मुझे बख़्श दे, मुझपर रहम कर, मुझे सही राह पर चला, मेरी परेशानी दूर कर, मुझे सलामती दे और मुझे रोज़ी अता कर।"

शहुद

اَلتَّحِیَّاتُ لِلّٰهِ وَالصَّلَوٰةُ وَالطَّیِّبَاتُ اَلسَّلَامُ عَلَیْکَ اَیُّهَا النَّبِیُّ وَ
رَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَکَاتُهٗ ○ اَلسَّلَامُ عَلَیْنَا وَعَلٰی عِبَادِ اللّٰهِ الصّٰلِحِیْنَ ○ اَشْهَدُ اَنْ
لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ ○

छ लोग क़ौमे में ये अल्फ़ाज़ नहीं पढ़ते। 'रब्बना लकल हम्द' कहने ही को काफ़ी समझते हैं।

छ लोग दोनों सजदों के बीच बैठते वक़्त ये दुआ पढ़ते हैं और कुछ लोग ख़ामोश रहते हैं।

अत्तहिय्यातु लिल्लाहि वस्स-ल-वातु वत्तय्यिबातु, अस्सलामुअलै-क अय्युहन-नबिय्यु व रहमतुल्लाहि व बरकातुह। अस्सलामु अलैना व अला इबादिल्लाहिस-सालिहीन। अशहदु अल्ला-इला-ह इल-लल्लाहु व अशहदु अन-न मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुह।

اَلتَّحِيَّاتُ	الصَّلَوٰةُ	الطَّيِّبَاتُ	اَلسَّلَامُ	عَلَيْکَ	يُّهَا
अत्तहिय्यातु	**अस्स-ल-वातु**	**अत्तय्यिबातु**	**अस्सलामु**	**अलै-क**	**अय्यु**
तमाम पाकीज़ा ज़बानी इबादतें	तमाम बदनी इबादतें	तमाम पाकीज़ा माली इबादतें	सलामती व रहमत	आप पर	ऐ

بَرَكَاتُهٗ	عَلَيْنَا	عِبَادِ	اَلصَّالِحِيْنَ	اَشْهَدُ	اِلَّا	
ब-रकातुहू	**अलैना**	**इबादि**	**अस्सालिहीन**	**अश्हदु**	**इल्ला**	
उसकी बरकतें	हम सबपर	बन्दे	नेक लोग	मैं गवाही देता हूँ	मगर, सिवा	

"तमाम ज़बानी इबादतें, तमाम बदनी इबादतें, तमाम पाकीज़ा माली इबादतें अल्लाह ही के लिए हैं। सलाम हो आप पर, ऐ अल्लाह के नबी! और अल्लाह की रहमत हो और उसकी बरकतें नाज़िल हों, और सलामती हो हमपर और अल्लाह के सारे ही नेक बन्दों पर। मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं और मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद (सल्ल०) अल्लाह के बन्दे और रसूल हैं।"

दुरूद शरीफ़

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَاصَلَّيْتَ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّکَ حَمِيْدٌ مَجِيْدٌ ۰ اَللّٰهُمَّ بَارِکْ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَابَارَكْتَ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّکَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ۰

अल्लाहुम-म सल्लि अला मुहम्मदिंव व अला आलि मुहम्मदिन कमा

सल्लै-त अला इबराही-म व अ़ला आलि इबराही-म इन्न-क हमीदुम-मजीद।

अल्लाहुम-म बारिक अ़ला मुहम्मदिंव व अ़ला आलि मुहम्मदिन कमा बारक-त अला इबराही-म व अ़ला आलि इबराही-म इन्न-क हमीदुम-मजीद।

صَلِّ सल्लि रहमत भेज	عَلٰى अला पर	اٰلِ आलि औलाद, माननेवाला	كَمَا कमा जैसा कि	صَلَّيْتَ सल्लै-त तूने रहमत फ़रमाई	اِنَّكَ इन्न-क बेशक तू

حَمِيْدٌ हमीदुन अपनी ज़ात में ख़ूबियोंवाला	مَجِيْدٌ मजीदुन बुज़ुर्गी और शानवाला	بَارِكْ बारि-क बरकत दे	بَارَكْتَ बारक-त तूने बरकत दी

"ऐ अल्लाह! रहमत भेज (हज़रत) मुहम्मद (सल्ल॰) पर और आप (सल्ल॰) के माननेवालों पर, जिस तरह तूने रहमत भेजी (हज़रत) इबराहीम (अलैहि॰) पर और (हज़रत) इबराहीम (अलैहि॰) की आल-औलाद पर। बेशक तू अपनी ज़ात में ख़ूबियोंवाला और बुज़ुर्गीवाला है। ऐ अल्लाह! बरकतें उतार (हज़रत) मुहम्मद (सल्ल॰) पर और आप (सल्ल॰) के माननेवालों पर जिस तरह तूने बरकत उतारी (हज़रत) इबराहीम (अलैहि॰) पर और उनकी आल-औलाद पर। बेशक तू अपनी ज़ात में बड़ी ख़ूबियोंवाला और बड़ी शानवाला है।"

द के बाद की दुआ

اَللّٰهُمَّ اِنِّى ظَلَمْتُ نَفْسِىْ ظُلْمًا كَثِيْرًاوَّ لَا يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اَنْتَ
فَاغْفِرْلِىْ مَغْفِرَةً مِّنْ عِنْدِكَ وَارْحَمْنِىْ اِنَّكَ اَنْتَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ۝

अल्लाहुम-म इन्नी ज़लम्तु नफ़्सी ज़ुल्मन कसीरंव वला यग़फ़िरुज़्ज़ुनू-ब इल्ला अन-त फ़ग़फ़िरली मग़फ़िरतम मिन इन्दि-क वरहम्नी इन्न-क अन्तल ग़फ़ूरुर्रहीम।

نِى नी पर	ظَلَمْتُ ज़लम-तु मैंने ज़ुल्म किया	نَفْسِىْ नफ़्सी जान	ظُلْمًا كَثِيْرًا ज़ुलमन कसीरन बहुत ज़्यादा ज़ुल्म	لَايَغْفِرُ ला-यग़फ़िरु नहीं बख़्शता	الذُّنُوْبُ ज़ुनूबु गुनाह	اَنْتَ अन-त तू	فَاغْفِرْ फ़ग़फ़िर पस, बख़्श दे

لِیْ	مَغْفِرَةً	مِنْ عِنْدِکَ	وَارْحَمْ	اِنَّکَ	غَفُوْرٌ
ली	मग़फ़ि-रतन	मिन इन्दि-क	वरहम	इन्न-क	ग़फ़ूरुन
मेरी, मुझको	बख़्शिश, माफ़ी	अपने पास से	और रहम फ़रमा	बेशक तू	बहुत ज़्यादा, माफ़ फ़

"ऐ अल्लाह! मैंने अपनी जान पर ज़ुल्म किया, बहुत ही ज़्यादा ज़ुल्म और तेरे सिवा कोई नहीं जो गुनाहों को बख़्श दे। इसलिए तू मेरे गुनाहों के बख़्श दे, अपनी ख़ास बख़्शिश से, और मुझपर रहम कर। बेशक तू बहुत ज़्यादा माफ़ करनेवाला और बहुत ही ज़्यादा रहम करनेवाला है।"

सलाम

اَلسَّلَامُ عَلَیْکُمْ وَرَحْمَةُاللّٰهِ

अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाह

"सलाम हो तुमपर और अल्लाह की रहमत हो।"

दुआ

नमाज़ पढ़ने के बाद जो दुआ चाहें माँग सकते हैं, दीन की भलाई की हो य की भलाई की। हाँ, क़ुरआन और हदीस में जो दुआएँ आई हैं उनका पढ़ना ज़्याद है। क़ुरआन और हदीस की दुआओं में बड़ा असर और बड़ी बरकत है। और दी की कोई भलाई ऐसी नहीं है जो नबी (सल्ल॰) ने ख़ुदा से न माँगी हो और जिस का तरीक़ा न सिखाया हो।

सलाम फेरने के बाद तीन बार

اَسْتَغْفِرُاللّٰهَ

'असतग़ फ़िरुल्लाह' यानी 'मैं ख़ुदा से माफ़ी चाहता हूँ' कहे और फिर यह इसे इस तरह पढ़ना मसनून है—

للّٰهُمَّ اَنْتَ السَّلَامُ وَمِنْکَ السَّلَامُ تَبَارَکْتَ یَاذَ الْجَلَالِ وَالْاِکْرَامِ ○

अल्लाहुम-म अन्तस्सलामु, व मिनकस्सलामु, तबारक-त या ज़ल-जलालि वल-इक

اَلسَّلَامُ	مِنْکَ	یَا	ذَا	اَلْجَلَالِ	اِکْرَامِ
अस्सलामु	**मिन्-क**	**या**	**ज़ा**	**जलाल**	**इकराम**
ःरासर सलामती और सलामती देनेवाला	तेरी तरफ़ से	ऐ	वाला	अज़मत, बुज़ुर्गी	बुज़ुर्गी, शर्फ़

"ऐ अल्लाह! तू हर कमी से सलामत है और तेरी ही तरफ़ से सलामती है। तू बहुत ही ऊँचा और बरकतवाला है, ऐ अज़मत और बुज़ुर्गीवाले!"

अभ्यास

जवाब दीजिए :

(1) नमाज़ के अज़कार का क्या मतलब है? इसकी कोई दो मिसालें लिखिए।
(2) 'नमाज़ ईमानवालों की मेअ्राज' क्यों है?
(3) तअव्वुज़, तस्मीअ और रुकूअ् की तस्बीह के कलिमात और उनका तर्जमा सुनाइए।
(4) जलसे की दुआ में क्या बातें बताई गई हैं?
(5) हम दुरूद शरीफ़ में अल्लाह से किस-किस पर रहमत भेजने की दुआ करते हैं?

नीचे दिए हुए कलिमात के मानी लिखिए :

(1) अल्लाह......................
(2) अकबर......................
(3) सुब्हान......................
(4) रब्बी......................
(5) अलूआला......................

कुछ और काम

नमाज़ के अज़कार और उनका तर्जमा याद करके क्लास में सुनाइए।

◆◆◆

13

जमाअत की नमाज़

नमाज़ बा-जमाअत की फ़ज़ीलत

हम पाँचों वक़्त की नमाज़ जमाअत से मस्जिद में पढ़ते हैं और कभी जमाअ छोड़ते। अल्लाह का हुक्म है, "नमाज़ पढ़नेवालों के साथ मिलकर नमाज़ पढ़ो।" प्य (सल्ल०) ने भी जमाअत की बहुत ज़्यादा ताकीद फ़रमाई है। ख़ुद प्यारे रसूल (स हमेशा जमाअत से नमाज़ पढ़ी है और ज़िन्दगी भर जमाअत नहीं छोड़ी। एक ब (सल्ल०) सख़्त बीमार थे, मस्जिद तक जाने की ताक़त नहीं थी, दो आदमियों वे मस्जिद पहुँचे और ज़माअत से नमाज़ पढ़ी। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "जमाअत से पढ़ना अकेले नमाज़ पढ़ने से सत्ताईस गुना ज़्यादा बेहतर है।" इब्ने-उम्मे-मक्तूम (रवि नाबीना सहाबी थे, कोई हाथ पकड़नेवाला नहीं था, मगर उनको भी आप (स जमाअत से नमाज़ पढ़ने का हुक्म दिया। हज़रत अब्दुल्लाह-बिन-मसऊद (रज़ि०) फ़ कि प्यारे रसूल (सल्ल०) के ज़माने में हम सब हमेशा जमाअत से नमाज़ पढ़ते थे। सि लोग जमाअत में न आते जो बहुत बीमार होते या खुले मुनाफ़िक़ होते।

जमाअत की नमाज़ में हमारे लिए दीन-दुनिया की भलाई है। प्यारे रसूल (स फ़रमाया कि आदमी का जितना वक़्त जमाअत के इन्तिज़ार में गुज़रता है वह सब में गिना जाता है। आप (सल्ल०) ने यह भी फ़रमाया कि उन लोगों को ख़ुशख़बरी जो अँधेरी रातों में जमाअत से नमाज़ पढ़ने के लिए मस्जिद जाते हैं कि क़ियामत अल्लाह तआला उन्हें रौशनी बख़्शेगा। एक दिन हज़रत सुलैमान-बिन-अबी हसमा जमाअत में शरीक न हुए। हज़रत उमर (रज़ि०) उनके घर पूछने गए। उनकी माँ ने सुलैमान (रज़ि०) रात भर नमाज़ पढ़ते रहे, इसलिए फ़ज्र के वक़्त उनकी आँख ल हज़रत उमर (रज़ि०) ने फ़रमाया कि अगर रात भर सोते और फ़ज्र की नमाज़ जम पढ़ते तो यह रात भर नफ़्ल पढ़ने से ज़्यादा बेहतर था।

जो लोग अज़ान सुनकर जमाअत से नमाज़ न पढ़ें और उन्हें कोई उज़्र भी उनकी नमाज़ क़बूल नहीं होती। प्यारे रसूल (सल्ल०) ने एक बार फ़रमाया, "मेरा जी

कि किसी को हुक्म दूँ कि लकड़ियाँ जमा करे, फिर किसी को अज़ान का हुक्म दूँ और सी से कहूँ कि नमाज़ पढ़ाए, और मैं उन लोगों के घरों में जाऊँ जो नमाज़ पढ़ने नहीं ते और उनके घरों को जला दूँ।" आप (सल्ल॰) ने यह भी फ़रमाया कि अगर मुझे छोटे च्चों और औरतों का ख़याल न होता तो मैं इशा की नमाज़ पढ़ता और ख़ादिमों को हुक्म ा कि उनके घरों को आग लगा दें जो जमाअत से नमाज़ पढ़ने के लिए नहीं आते।

माज़े-बा-जमाअत के मसाइल

अक्सर लोगों के नज़दीक जमाअत से नमाज़ पढ़ना वाजिब है। कुछ के नज़दीक न्नते-मुअक्कदा है और कुछ फ़र्ज़ कहते हैं। कुछ भी हो, प्यारे रसूल (सल्ल॰) के इन शादात के बाद कौन मुसलमान ऐसा होगा जो जमाअत से नमाज़ न पढ़ेगा और प्यारे ूल (सल्ल॰) की नाफ़रमानी करेगा।

माअत का तरीक़ा

अगर दो आदमी भी हों तब भी जमाअत बना लेना चाहिए। लेकिन दो आदमी हों आगे-पीछे न खड़े हों, बल्कि बराबर-बराबर खड़े हों और अगर तीसरा आदमी आकर नाज़ में शरीक हो तो या तो मुक़्तदी पीछे हट जाए या इमाम आगे बढ़ जाए जैसा मौक़ा । जमाअत में सबसे पहले मर्दों की सफ़ हो, फिर बच्चों की और सबसे आख़िर में औरतों ी। जमाअत में सफ़ों को ख़ूब ठीक कर लेना चाहिए। ख़ूब मिल-मिलकर खड़े होना ाहिए। आप (सल्ल॰) ने फ़रमाया कि अल्लाह के बन्दो! सफ़ें ख़ूब दुरुस्त कर लिया करो, ना अल्लाह तआला तुम्हारे दिलों में इख़्तिलाफ़ डाल देगा। और फ़रमाया कि अगर सफ़ें ढ़ी होंगी तो तुम्हारे दिलों में भी टेढ़ापन पैदा हो जाएगा।

मामत

जमाअत में इमाम उस शख़्स को बनाना चाहिए जो सबसे ज़्यादा क़ुरआन मजीद का ल्म रखता हो और क़ुरआन मजीद अच्छी तरह पढ़ता हो। इसके बाद वह जो सुन्नत का ल्म रखता हो। बग़ैर सोचे-समझे हर एक को इमाम बना देना मुनासिब नहीं। इमाम को रदार कहते हैं और मुक़्तदी पीछे चलनेवाले को। उसी शख़्स को सरदार बनाना चाहिए जो रदारी के लायक़ हो। हर एक के पीछे चलना कोई अक़्लमन्दी का काम नहीं है। नमाज़ ी इमामत बहुत अहम बात है, इसलिए ऐसे ही शख़्स को इमाम बनाना चाहिए जो दीन ा इल्म रखता हो, नेक और मुत्तक़ी हो, अच्छे अख़लाक़वाला हो और जिसे आमतौर पर

लोग अच्छा समझते हों। क्योंकि जो शख़्स नमाज़ में हमारा इमाम है, वही दुनियावी में भी हमारा सरदार और रहनुमा है। प्यारे रसूल (सल्ल.) के बाद जब ख़िलाफ़त का सामने आया तो हज़रत उमर (रज़ि.) ने सबसे पहले अबू-बक्र (रज़ि.) के हाथ पर बैः और फ़रमाया कि जब प्यारे रसूल (सल्ल.) ने इन्हें हमारी नमाज़ का इमाम बनाया त हम इन्हें ज़िन्दगी के हर मामले का इमाम क्यों न बनाएँ?

ऐसे लोगों को हरगिज़ इमाम न बनाया जाए जो जाहिल हों, अख़लाक़ी लिः पस्त हों, हलाल, हराम की तमीज़ न रखते हों, या जिनको इमाम बनाने में लड़ाई-झः ख़तरा हो।

इमाम की ज़िम्मेदारी

इमाम को चाहिए कि वह नमाज़ ज़्यादा लम्बी न पढ़ाए। जमाअत में हर त लोग होते हैं, कमज़ोर, बूढ़े, बच्चे, औरतें इन सबका ख़याल रखना चाहिए कि व परेशान न हो जाएँ। प्यारे रसूल (सल्ल.) कभी लम्बी नमाज़ पढ़ानी चाहते भी तो किस के रोने की आवाज़ सुनकर मुख़्तसर कर देते कि कहीं बच्चे की माँ को तकलीफ़ न हो (सल्ल.) ने सहाबा किराम (रज़ि.) को हिदायत फ़रमाई कि नमाज़ मुख़्तसर पढ़ाएँ।

शब्दार्थ और टिप्पणी

बैअत=फ़रमाँबरदारी का वादा, आज्ञापालन का वचन
मुत्तकी=परहेज़गार, बुरी बातों से बचनेवाला

अभ्यास

1. जवाब दीजिए–
   (1) नमाज़े-बा-जमाअत की फ़ज़ीलत बयान कीजिए।
   (2) बग़ैर किसी उज़्र के जमाअत से नमाज़ न पढ़नेवालों के बारे में प्यारे रसूल (सल्ल.) फ़रमाया है?
   (3) नमाज़ में सफ़ों को अच्छी तरह दुरुस्त करने की ताकीद क्यों की गई है?
   (4) इमाम कैसे शख़्स को बनाना चाहिए?
   (5) नबी (सल्ल.) ने सहाबा किराम (रज़ि.) को नमाज़ मुख़्तसर पढ़ाने की हिदायत क्यों फ़

ख़ाली जगहों को भरिए–

(1) रसूल (सल्ल॰) के ज़माने में वही लोग नमाज़े-बा-जमाअत में न आते थे जो बहुत..................होते या खुले....................होते।

(2) जमाअत की नमाज़ में हमारे लिए दीन-दुनिया की................है।

(3) जो लोग अँधेरी रातों में जमाअत से नमाज़ पढ़ने के लिए मस्जिद जाते हैं क़ियामत के दिन अल्लाह तआला उन्हें.......................बख़्शेगा।

(4) ऐसे लोगों को हरगिज़....................न बनाया जाए जो जाहिल और अख़लाक़ी लिहाज़ से पस्त हों।

नीचे लिखी मालूमात में सही की जगह (√) और ग़लत की जगह (×) का निशान लगाएँ :

(1) इब्ने-उम्मे-मक्तूम एक नाबीना सहाबी (रज़ि॰) थे। नबी (सल्ल॰) ने उनको तनहा नमाज़ पढ़ने की इजाज़त दी थी। ☐

(2) जमाअत से नमाज़ पढ़ना तनहा नमाज़ पढ़ने से सत्ताइस दर्जे ज़्यादा बेहतर है। ☐

(3) आदमी का जितना वक़्त जमाअत के इन्तिज़ार में गुज़रता है वह सब इबादत में शुमार होता है। ☐

(4) अगर सिर्फ़ दो आदमियों की जमाअत बनानी हो तो बराबर-बराबर खड़े होना चाहिए। ☐

(5) जमाअत में सबसे पहले मर्दों की सफ़ हो, फिर औरतों की और सबसे आख़िर में बच्चों की। ☐

♦♦♦

मुक़्तदी के अहकाम

इमाम के पीछे नमाज़ पढ़नेवाले को 'मुक़्तदी' कहते हैं। मुक़्तदी की क़िस्म मुक़्तदी के अहकाम को हमें अच्छी तरह याद कर लेना चाहिए, ताकि नमाज़ में कोई न हो और हम अल्लाह की इबादत सही-सही कर सकें।

इमाम की पैरवी

मुक़्तदी के लिए ज़रूरी है कि वह नमाज़ के सारे ही अरकान में इमाम की करे। पैरवी या इत्तिबा का मतलब यह है कि इमाम जो-जो रुक्न अदा करे, वही मुक़्त करता रहे। न तो कोई रुक्न इमाम से पहले अदा करे और न बिना वजह देर करे। में है कि जो शख़्स इमाम से पहले सजदे से सिर उठाता है, क़ियामत के दिन उसक गधे की तरह होगा। तौबा! तौबा! सही बात यही है कि जब हमने इमाम को अपना बना लिया, तो फिर हर उस बात में उसकी पैरवी करनी चाहिए जिसमें शरीअत ने पैर हुक्म दिया है। इसलिए कि पैरवी के बग़ैर फिर जमाअत का मतलब ही क्या होगा? ज का तो मतलब ही यह है कि मुक़्तदी इमाम की पैरवी में नमाज़ पढ़े और वही करे जो कर रहा हो, यहाँ तक कि अगर कोई मुक़्तदी कुछ अज़्कार न पढ़ सके तब भी अ अधूरे छोड़कर इमाम की पैरवी करे। जैसे रुकूअ़ और सजदे में मुक़्तदी तीन बार भी न पढ़ने पाया था कि इमाम रुकूअ़ या सजदे से उठ गया तो मुक़्तदी को भी साथ जाना चाहिए। लेकिन अगर इमाम 'क़अ़दए-ऊला' में अत्तहिय्यात पढ़कर उठ ज 'क़अ़दए-अख़ीरा' में सलाम फेर दे और मुक़्तदी की अत्तहिय्यात पूरी न हुई तो मुक़्त चाहिए कि अत्तहिय्यात पूरी करके उठे या सलाम फेरे।

रहीं वे बातें जिनमें इमाम और मुक़्तदी के बीच मसलक का इख़्तिलाफ़ हो, पैरवी ज़रूरी नहीं। मिसाल के तौर पर इमाम कन्धों तक हाथ उठाकर तकबीरे-त कहता है और मुक़्तदी कान की लौ तक उठाना सही समझता है, या इमाम सीने प रखता है और मुक़्तदी नाफ़ पर हाथ रखना सही समझता है, या वित्र की जमाअत में एक दुआ-ए-क़ुनूत पढ़ता है और मुक़्तदी कोई दूसरी दुआ-ए-क़ुनूत पढ़ता है, या

ःअयदैन का क़ायल नहीं है और मुक़्तदी रफ़अयदैन करता है, तो इस तरह की तमाम बातों इमाम की पैरवी न करने से नमाज़ में कोई ख़राबी नहीं आती।

ाम और मुक़्तदी के मसाइल

अगर मुक़्तदी से नमाज़ में कोई भूल-चूक हो जाए, और सजदए-सह्व भी लाज़िम जाए, तब भी मुक़्तदी सजदए-सह्व न करे और न नमाज़ दुहराये, उसकी नमाज़ में कोई ाबी नहीं आती। हाँ, अगर कोई फ़र्ज़ छूट जाए, जैसे रुकूअ रह गया या एक ही सजदा या तो ऐसी सूरत में नमाज़ दोबारा पढ़नी होगी।

अगर इमाम की नमाज़ में कोई ख़राबी आ जाए तो सारे मुक़्तदियों की नमाज़ नहीं ी। मिसाल के तौर पर इमाम का कोई रुक्न रह गया लेकिन मुक़्तदियों से कोई कोताही ं हुई तब भी मुक़्तदियों को इमाम के साथ नमाज़ दुहरानी होगी। या इमाम पर ादए-सह्व लाज़िम हो और वह सजदए-सह्व करना भूल गया तो चाहे मुक़्तदियों से कोई ी कोताही न हुई हो जिससे सजदए-सह्व लाज़िम आता है, तब भी मुक़्तदियों को इमाम साथ नमाज़ दोबारा पढ़नी होगी।

़्तदी की क़िस्में

मुक़्तदी तीन क़िस्म के होते हैं—(1) मुदरिक (2) मसबूक़ (3) लाहिक़।

इन तीनों के कुछ अलग-अलग मसाइल हैं जिनका जानना बहुत ज़रूरी है—

मुदरिक : वह नमाज़ी जो शुरू से आख़िर तक इमाम के पीछे नमाज़ में शरीक रहा उसको 'मुक़्तदी' और 'मुअ्तम' कहते हैं। इसके मसाइल ऊपर 'इमाम और मुक़्तदी के ाइल' में आ चुके हैं।

मसबूक़ : वह नमाज़ी जो एक या एक से ज़्यादा रकअत हो जाने के बाद जमाअत शामिल हुआ हो।

लाहिक़ : वह नमाज़ी जो जमाअत में शुरू से शरीक रहा हो, लेकिन बीच में सोने वुज़ू टूट जाने की वजह से जमाअत में शरीक न रह सका हो और उसकी एक या एक ज़्यादा या सभी रकअतें छूट गई हों।

ासबूक़ के मसाइल

मसबूक़ जिस रकअत में भी आकर इमाम के साथ शामिल हुआ हो, उसके नमाज़

अदा करने का तरीक़ा यह है कि पहले वह बाक़ी नमाज़ इमाम के साथ पूरी करे। जब सलाम फेर ले तो वह सलाम फेरे बग़ैर उठ खड़ा हो और अपनी छूटी हुई नमाज़ अदा मसबूक़ अपनी छूटी हुई नमाज़ इस तरह अदा करे जैसे वह तनहा नमाज़ पढ़ने की सू अदा करता, यानी क़िरअत भी करे और अगर कोई भूल-चूक हो जाए तो सजदए-सह्व करे। मिसाल के तौर पर ज़ुह्र की नमाज़ में किसी की एक रकअत छूट गई तो वह तीन रकअतें इमाम के साथ पूरी करे, फिर जब इमाम सलाम फेर ले तो उठ खड़ा हो अपनी छूटी हुई पहली रकअत पहली रकअत की तरह अदा करे, यानी सना, तअ तस्मिया, सूरा फ़ातिहा पढ़कर सूरा मिलाए और क़अदए-अख़ीरा करके सलाम फेर दे

और अगर चार रकअतवाली नमाज़ में दो रकअतें छूट गई हों तो दो रकअतें के साथ अदा करने के बाद अपनी पहली दो रकअतें इस तरह अदा करे कि उठने के पहली रकअत में सना, तअव्वुज़, तस्मिया, सूरा फ़ातिहा पढ़कर सूरा मिलाए और रकअत में भी फ़ातिहा के साथ सूरा मिलाए और नमाज़ पूरी करके सलाम फेर दे। किसी की तीन रकअतें छूट गई हों तो वह एक रकअत इमाम के पीछे अदा करने के उठ खड़ा हो और सना, तअव्वुज़, तस्मिया, सूरा फ़ातिहा और सूरा मिलाकर अपनी रकअत पढ़े। लेकिन इस रकअत के बाद क़अदए-ऊला भी करे। क्योंकि उसको एक र इमाम के साथ मिल चुकी है और इस तरह यह उसकी दूसरी रकअत है। अब क़अदए- से उठकर एक रकअत में सूरा फ़ातिहा के साथ सूरा भी मिलाए और आख़िरी रकअ सिर्फ़ सूरा फ़ातिहा पढ़कर क़अदए-अख़ीरा करे और अपनी नमाज़ पूरी करके सलाम फे

इमाम जब नमाज़ पूरी करके सलाम फेर दे तो मसबूक़ सलाम न फेरे, बल्कि उ अपनी नमाज़ पूरी करे। लेकिन अगर भूले से उसने भी सलाम फेर दिया और बाद में आया तो इत्मीनान के साथ खड़ा होकर अपनी नमाज़ पूरी करे। अगर एक तरफ़ स फेरकर उठ खड़ा हुआ था तो सजदए-सह्व करने की भी ज़रूरत नहीं है और अगर तरफ़ सलाम फेर कर कुछ देर बाद याद आया और फिर खड़े होकर उसने अपनी नमाज़ की तो इस सूरत में उसको सजदए-सह्व भी करना चाहिए। अगर नमाज़ के बाद बा करने लगा, फिर किसी ने याद दिलाया या खुद याद आ गया कि कुछ नमाज़ छूट ग तो अब बाक़ी नमाज़ पढ़ने के बजाए उसे पूरी नमाज़ दोबारा पढ़नी होगी।

हिक़ के मसाइल

लाहिक़ की जो रकअतें इमाम के साथ अदा करने से रह गई हैं पहले वह उन्हें यानी नी छूटी हुई नमाज़ अदा करे और उन रकअतों में वह अपने को मुक़्तदी समझे यानी उन अतों में क़िरअत न करे और अगर भूल-चूक हो जाए तो सजदए-सहूव भी न करे। फिर छूटी हुई नमाज़ पूरी कर चुके तो जमाअत में शामिल हो जाए, अगर इमाम फ़ारिग़ न ा हो। अगर इमाम नमाज़ पढ़ाकर फ़ारिग़ हो चुका हो तो अलाहिदा अपनी बाक़ी नमाज़ पूरी करे। मिसाल के तौर पर एक आदमी इमाम के साथ नमाज़ पढ़ रहा था कि एक अत पढ़ने के बाद उसका वुज़ू टूट गया। अब उसने किसी से बातचीत किए बग़ैर जाकर किया। आने-जाने और वुज़ू करने में एक रकअत और भी हो गई, तो अब लाहिक़ ग खड़े होकर पहले अपनी छूटी हुई एक रकअत अदा करेगा और इस रकअत में वह को मुक़्तदी समझेगा और अगर इस दौरान इमाम नमाज़ से फ़ारिग़ हो गया तो लाहिक़ नी बाक़ी रकअतें भी अलाहिदा पूरी करेगा।

शब्दार्थ और टिप्पणी

मसलक = रास्ता, तरीक़ा
क़ायल = तस्लीम कर लेनेवाला, मान लेनेवाला

अभ्यास

जवाब दीजिए–

(क) इमाम की पैरवी का क्या मतलब है?
(ख) किस सूरत में मुक़्तदी के लिए इमाम की पैरवी ज़रूरी नहीं है?
(ग) मुदरिक, मसबूक़ और लाहिक़ की तारीफ़ कीजिए।
(घ) मसबूक़ के नमाज़ अदा करने का क्या तरीक़ा है?
(ङ) नमाज़े-बा-जमाअत अदा करने के दर्मियान में किसी का वुज़ू टूट गया हो तो उसे क्या करना चाहिए?

2. नीचे दी गई मालूमात सही हैं या ग़लत? 'हाँ' या 'नहीं' में जवाब दीजिए। हाँ

(क) वित्र की जमाअत में इमाम एक दुआ-ए-क़ुनूत पढ़ता है और मुक़्तदी कोई दूसरी दुआ-ए-क़ुनूत पढ़ता है, तो क्या उसमें इमाम की पैरवी न करने से नमाज़ में कोई ख़राबी आएगी।

(ख) अगर मुक़्तदी कुछ अज़्कार न पढ़ सके, तो क्या तब भी वह अज़्कार अधूरे छोड़कर इमाम की पैरवी करेगा।

(ग) मसबूक़ अपनी नमाज़ पूरी करने से पहले भूले से एक तरफ़ सलाम फेरकर उठ खड़ा हुआ तो क्या वह सजदए-सह्व करेगा।

3. नीचे दी गई सूरतों में क्या हुक्म है? मुख़्तसर तहरीर कीजिए।

(क) मुक़्तदी रुकूअ में तीन बार तस्बीह न पढ़ सका और इमाम रुकूअ से उठ गया

....

(ख) इमाम अगर क़अदए-ऊला में अत्तहिय्यात पढ़कर उठ जाए या क़अदए-अख़ीरा मे फेर दे और मुक़्तदी की अत्तहिय्यात पूरी न हुई तो..

(ग) अगर जमाअत से नमाज़ पढ़ते हुए मुक़्तदी से कोई भूल-चूक हो जाए तो........

....

(घ) ज़ुहर की नमाज़ जमाअत से अदा करते हुए किसी आदमी की तीन रकअतें छूट तो..

(ङ) आप मग़रिब की नमाज़ में शरीक हुए और आपने इमाम साहब के साथ सिर्फ़ रकअत पाई तो..

(च) अगर मसबूक़ भूले से दोनों तरफ़ सलाम फेर दे तो..

4. कोष्ठक में से सही जवाब चुनकर ख़ाली जगहों को भरिए—

(क) इमाम के पीछे नमाज़ पढ़नेवाले को............................कहते हैं।
(मुअज़्ज़िन, मुत्तक़ी,

(ख) वह नमाज़ी जो शुरू से आख़िर तक इमाम के पीछे नमाज़ में शरीक रहा हो उ ....कहते हैं। (मसबूक़, मुदरिक,

(ग) जो शख़्स इमाम से पहले सजदे से सर उठाता है, क़ियामत के दिन उसका सिर की तरह होगा। (बन्दर, घो

(घ) इमाम सीने पर हाथ रखता है और मुक़्तदी नाफ़ पर हाथ रखना सही समझता है, इ में इमाम की पैरवी न करने से.............................।
(नमाज़ न होगी, नमाज़ हो जाएगी, नमाज़ में कमी रह

◆◆◆

वित्र की नमाज़

प्यारे नबी (सल्ल॰) ने 'वित्र की नमाज़' की बड़ी ताकीद फ़रमाई है। आप (सल्ल॰) ःरमाया, "जो शख़्स वित्र की नमाज़ न पढ़े वह मेरा पैरो नहीं।" प्यारे रसूल (सल्ल॰) के : साथी हज़रत अबू-हुरैरा (रज़ि॰) फ़रमाते हैं, "मेरे दोस्त ने मुझे तीन बातों की वसीयत गाई थी। एक उनमें से यह है कि मैं सोने से पहले वित्र की नमाज़ ज़रूर पढ़ लिया ।"

। की नमाज़ का हुक्म

हनफ़िया के नज़दीक वित्र की नमाज़ वाजिब है। वाजिब होने का मतलब यह है कि ाँकि उसका इनकार करनेवाला काफ़िर नहीं होता, लेकिन उसका पढ़ना फ़र्ज़ नमाज़ों की ; ज़रूरी है और अगर कभी किसी वजह से रह जाए तो फ़र्ज़ नमाज़ों की तरह उसकी ा पढ़नी चाहिए। कुछ लोगों के नज़दीक वित्र की नमाज़ सुन्नते-मुअक्कदा है।

इस नमाज़ को वित्र इसलिए कहते हैं कि इसमें ताक़[1] रकअतें पढ़ी जाती हैं।

। की नमाज़ का वक़्त

वित्र की नमाज़ का वक़्त इशा की नमाज़ के बाद से सुबह सादिक़ तक है। ार तो यही है कि वित्र की नमाज़ रात के आख़िरी हिस्से में उठकर पढ़ी जाए। लेकिन र यह डर हो कि आँख न खुलेगी और वित्र रह जाएगी तो इशा की नमाज़ के बाद न पढ़ लेनी चाहिए। ऐसा न हो कि बेपरवाही में छूट जाए और फ़िर क़ज़ा पढ़नी ।

ज़्यादातर लोग वित्र की तीन रकअतें पढ़ते हैं। इसके पढ़ने का तरीक़ा वही है जो नमाज़ों का है। बस फ़र्क़ यह है कि फ़र्ज़ नमाज़ों में तो सिर्फ़ दो रकअतों में सूरा

इस बारे में तो सबका इत्तिफ़ाक़ है कि प्यारे नबी (सल्ल॰) ने वित्र में ताक़ (विषम संख्यावाली) रकअतें पढ़ी हैं। लेकिन इसमें इख़्तिलाफ़ है कि वित्र की एक रकअत है या तीन या पाँच या सात। अपने उस्तादों से मुख़्तलिफ़ मसलक मालूम करें।

फ़ातिहा के बाद कोई सूरा मिलाते हैं और वित्र की तीनों रकअतों में सूरा फ़ातिहा सूरा मिलाते हैं। तीसरी रकअत में सूरा पढ़ने के बाद हाथ उठाकर तकबीर कहते दुआ-ए-क़ुनूत पढ़ते हैं।[1] प्यारे रसूल (सल्ल॰) ने कई दुआएँ पढ़ी हैं--

لّٰهُمَّ اِنَّا نَسْتَعِيْنُكَ وَنَسْتَغْفِرُكَ وَنُؤْمِنُ بِكَ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْكَ وَنُثْنِيْ
لَيْكَ وَنُثْنِيْ عَلَيْكَ الْخَيْرَ وَنَشْكُرُكَ وَلَانَكْفُرُكَ وَنَخْلَعُ وَنَتْرُكُ
نْ يَّفْجُرُكَ اَللّٰهُمَّ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَلَكَ نُصَلِّيْ وَنَسْجُدُ وَاِلَيْكَ نَسْعٰى
حْفِدُ وَنَرْجُوْارَحْمَتَكَ وَنَخْشٰى عَذَابَكَ اِنَّ عَذَابَكَ بِالْكُفَّارِمُلْحِقٌ۝

अल्लाहुम-म इन्ना नस्तईनु-क व नस्तग़ फ़िरु-क व नुअमिनु बि-क व न-त-वक्कलु अलै-क व नुस्नी अलैकल ख़ै-र व नशकुरु-क वला नकफ़ुरु-क व नख़लउ व नतरुकु मैंयफ़ जुरु-क अल्लाहुम-म इय्य-क नअ्बुदु व-ल-क-नुसल्ली व नस्जुदु व इलै-क नसआ व नह-फ़िदु व नरजू रह-म-त-क व नख़श अज़ा-ब-क इन-न अज़ा-ब-क बिल कुफ़्फ़ारि मुलहिक़।

"ऐ अल्लाह! हम तुझसे मदद चाहते हैं, और तुझी से बख़्शिश माँगते हैं, और तुझपर ईमान लाते हैं, और तुझ पर भरोसा करते हैं, और तेरी अच्छी-अच्छी तारीफ़ें करते हैं। हम तेरा शुक्र अदा करते हैं, और तेरी नाशुक्री नहीं करते, और जो तेरी नाशुक्री और नाफ़रमानी करे उसको छोड़ देते हैं, उससे अलग हो जाते हैं। ऐ अल्लाह! हम तेरी ही बन्दगी करते हैं, और तेरे लिए ही हम नमाज़ प्रढ़ते हैं, और तुझी को सजदा करते हैं, और हम तेरी ही तरफ़ लपकते हैं। तेरा हुक्म बजा लाने के लिए तैयार रहते हैं। तेरी रहमत के उम्मीदवार हैं, तेरे अज़ाब से डरते हैं। बेशक तेरा अज़ाब काफ़िरों को मिलकर रहेगा।"

प्यारे नबी (सल्ल॰) के नवासे हज़रत हसन (रज़ि॰) फ़रमाते हैं कि मुझे अल रसूल (सल्ल॰) ने वित्र में पढ़ने के लिए यह दुआ सिखाई थी—इसलिए कुछ लोग य पढ़ते हैं—[2]

1. कुछ लोग दुआ-ए-क़ुनूत रुकूअ से उठने के बाद पढ़ते हैं।
2. अच्छा तो यह है कि दोनों ही दुआएँ पढ़ ली जाएँ।

اَللّٰهُمَّ اهْدِنِیْ فِیْمَنْ هَدَیْتَ۔ وَعَافِنِیْ فِیْمَنْ عَافَیْتَ وَتَوَلَّنِیْ فِیْ مَنْ تَوَلَّیْتَ۔ وَبَارِکْ لِیْ فِیْمَا اَعْطَیْتَ وَقِنِیْ شَرَّمَاقَضَیْتَ۔ فَاِنَّکَ تَقْضِیْ وَلَا یُقْضٰی عَلَیْکَ اِنَّهٗ لَایَذِلُّ مَنْ وَّالَیْتَ ۔ وَلَایَعِزُّ مَنْ عَادَیْتَ۔ تَبَارَکْتَ رَبَّنَا وَتَعَالَیْتَ وَصَلَّی اللّٰهُ عَلَی النَّبِیِّ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ۔

अल्लाहुम-मह दिनी फ़ीमन हदैत, व आफ़िनी फ़ीमन आफ़ै-त व तवल्लनी, फ़ी मन तवल्लै-त, व बारिक ली फ़ीमा आतै-त व क़िनी शर-र मा क़ज़ैत, फ़ इन्न-क तक़्ज़ी वला युक़्ज़ा अलै-क इन्नहु ला यज़िल्लु मंवालैत वला यइज़्ज़ु मन आदैत, तबारक-त रब्बना व तआलै-त व सल्लल्लाहु अलन्नबिय्यि व आलिही व सल्लम।

"ऐ अल्लाह! तू मुझे हिदायत देकर उन लोगों में शामिल फ़रमा जिनको तूने हिदायत दी, और मुझे हर तरह के अज़ाब और मुसीबत से बचाकर उन लोगों में शामिल फ़रमा जिनको तूने आफ़ियत बख़्शी और मेरी सरपरस्ती फ़रमाकर उन लोगों में शामिल कर जिनकी तूने सरपरस्ती फ़रमाई, और जो कुछ तूने मुझे दिया है उसमें मुझे बरकत दे, और मुझे उन तमाम बुराइयों से बचा ले जिनका आना तूने तय फ़रमाया है, क्योंकि तय करने का हक़ तुझी को है, तेरे ख़िलाफ़ कोई फ़ैसला नहीं किया जा सकता। बेशक वह शख़्स कभी ज़लील नहीं हो सकता जिसको तूने अपनी सरपरस्ती में लिया है, और वह शख़्स कभी इज़्ज़त नहीं पा सकता जिससे तू निगाह फेर ले। तू बहुत बुज़ुर्गीवाला है, ऐ हमारे परवरदिगार! और बहुत बुलन्द व बरतर है। दुरूद व सलाम हो प्यारे नबी (सल्ल॰) पर और उनकी आल-औलाद पर।"

हदीस की किताबों में इसके अलावा भी एक दुआ लिखी है।

प्यारे नबी (सल्ल॰) आमतौर पर वित्र की पहली रकअत में सूरा 'अल-आला' दूसरी सूरा 'अल-काफ़िरून' और तीसरी में सूरा 'अल-इख़लास' पढ़ते थे। इसलिए इसी के ताबिक़ पढ़ना बहुत अच्छा है, लेकिन ज़रूरी नहीं। हमें जो सूरतें याद हों और जो पढ़ना हें, पढ़ सकते हैं।

शब्दार्थ और टिप्पणी

वसीयत = नसीहत

हनफ़िया = हज़रत इमाम अबू-हनीफ़ा की पैरवी करनेवाला

सरपरस्ती = निगरानी

अभ्यास

1. जवाब दीजिए–

(क) वित्र की नमाज़ को वित्र क्यों कहते हैं?

(ख) वित्र की नमाज़ का वक़्त कब से कब तक है?

(ग) वित्र की नमाज़ कब अदा करना बेहतर है?

(घ) फ़र्ज़ नमाज़ों और वित्र की नमाज़ में क्या फ़र्क़ है?

(ङ) वित्र की नमाज़ में किन सूरतों (सूरों) का पढ़ना ज़्यादा बेहतर है?

2. नीचे लिखे अरबी अल्फ़ाज़ के मानी लिखिए–

अल्लाहुम-म इन्ना नस्तईनु-क...

व नस्तग़फ़िरु-क...

व नु मिनु बि-क...

व न-त-वक्कलु अलै-क...

व नशकुरु-क...

वला नकफ़ुरु-क...

3. दुआ और इसके तर्जमे (अनुवाद) में कौन-सा किस जुम्ले का है? मुनासिब जोड़े लगाइए।

	(अ)	(ब)
(क)	**अल्लाहुम-महदिनी फ़ीमन हदैत**	(i) और मुझे हर तरह के अज़ाब और मुसीबत स उन लोगों में शामिल फ़रमा जिनको तूने आफ़ीयत
(ख)	**व आफ़िनी फ़ीमन आफ़ैत**	(ii) और मुझे उन तमाम बुराइयों से बचा ले आना तूने तय फ़रमा दिया।
(ग)	**व तवल्लनी फ़ीमन तवल्लैत**	(iii) और मेरी सरपरस्ती फ़रमाकर उन लोगों म फ़रमा जिनकी तूने सरपरस्ती फ़रमाई।
(घ)	**व बारिक ली फ़ीमा आतैत**	(iv) ऐ अल्लाह! तू मुझे हिदायत देकर उन शामिल फ़रमा जिनको तूने हिदायत दी।
(ङ)	**व क़िनी शर-र मा क़ज़ैत**	(v) और जो कुछ तूने मुझे दिया है उसमें ब

ाली जगहों को भरिए–

(1) नबी (सल्ल॰) ने फ़रमाया, "जो शख़्स वित्र की नमाज़ न पढ़े वह मेरा........नहीं।"

(2) नबी (सल्ल॰) ने अपने दोस्त को तीन बातों की वसीयत फ़रमाई थी। उनमें से एक यह थी कि वे सोने से पहले.............................ज़रूर पढ़ लिया करें।

(3) वित्र की नमाज़ किसी वजह से रह जाए तो फ़र्ज़ नमाज़ों की तरह उसकी..पढ़नी चाहिए।

(4) हनफ़िया के नज़दीक वित्र की नमाज़...है।

(5) वित्र की नमाज़ की तीसरी रकअत में सूरा पढ़ने के बाद हाथ उठाकर तकबीर कहते हैं और..पढ़ते हैं।

कुछ और काम

दुआ-ए-कुनूत तर्जमा (अनुवाद) के साथ याद करके दरजे (कक्षा) में सुनाइए।

◆◆◆

रोज़ा

रमज़ान मुबारक के रोज़े मुसलमानों पर फ़र्ज़ हैं। जो इसका इनकार व मुसलमान ही नहीं, और जो बिना वजह रोज़ा न रखे, वह अल्लाह तआला का बा रमज़ान शरीफ़ बहुत बरकतवाला महीना है। इसी महीने में अल्लाह तआला ने हिदायत के लिए अपनी पसन्दीदा किताब प्यारे नबी (सल्ल॰) पर उतारी। रमज़ान के मुबारक रात में क़ुरआन मजीद उतरना शुरू हुआ उसको 'लैलतुल-क़द्र' कहते हैं। य अल्लाह तआला के नज़दीक हज़ार महीनों से बेहतर है। रमज़ान के महीने में एक फ़ करने का सवाब दूसरे महीनों के सत्तर फ़र्ज़ों के बराबर है। और नफ़्ल का सवाब दूसरे के फ़र्ज़ों के बराबर है। प्यारे रसूल (सल्ल॰) इस महीने में रोज़े रखते। रात को इबादत क़ुरआन मजीद पढ़ते। तरावीह पढ़ते। ग़रीबों-मुहताजों के साथ अच्छा सुलूक करते। और ख़ैरात करते और ज़्यादा से ज़्यादा भलाई के काम करते। प्यारे रसूल (सल फ़रमाया, "जो शख़्स रमज़ान का महीना पाकर भी अपने गुनाह न बख़्शवाले व बदनसीब है।" और फ़रमाया, "अगर कोई आदमी बिना वजह रमज़ान का एक रो छोड़ दे तो फिर उम्र भर के रोज़े भी उसकी बराबरी (तलाफ़ी) नहीं कर सकते।"

रोज़ा किसे कहते हैं

अल्लाह तआला के लिए सुबह सादिक़ से सूरज डूबने तक खाना-पीना बुराइयों और बेशर्मी की बातों से बचने को रोज़ा कहते हैं। रोज़ा बहुत ही अहम इबा इस्लाम की इमारत का रुक्न (सुतून) है। रोज़े का इनकार करके न कोई इस्लाम की को क़ायम रख सकता है और न मुसलमान ही रह सकता है।

रोज़े के फ़ायदे

रोज़े से हमें बहुत-से फ़ायदे हासिल होते हैं। रोज़े के ज़रीए से हमारे अन्दर तआला की शुक्रगुज़ारी का जज़्बा पैदा होता है। सब्र पैदा होता है, बुराइयों से ब नेकियाँ कमाने की ताक़त पैदा होती है और आख़िरत में बहुत बड़ा सवाब मिलत

रोज़ा रखकर हम अपनी ख़्वाहिशात को दबाते हैं। भूखे-प्यासे रहकर नेकी पर जमते
ल्लाह के लिए तकलीफ़ें बर्दाश्त करने की आदत डालते हैं, ताकि हर हाल में हम
ह की राह में जमे रहें और मुश्किलों को देखकर न घबराएँ।

यों से बचना

रोज़ा हमें तमाम बुराइयों से बचाता है। रोज़ा रखकर हम झूठ नहीं बोलते, लड़ाई-झगड़ा
करते, किसी को बुरा-भला नहीं कहते, किसी की चुग़ली नहीं खाते, पीठ पीछे किसी की
नहीं करते, किसी का हक़ नहीं मारते, चोरी नहीं करते। बुराई के क़रीब तो हम वैसे
हीं फटकते, लेकिन रोज़ा रखकर तो पूरी तरह चौकन्ने रहते हैं और अगर कोई उलझना
भी तो हम कह देते हैं कि भाई हम रोज़े से हैं, हम कोई बुरी बात नहीं कर सकते। इसी
तो प्यारे रसूल (सल्ल॰) ने फ़रमाया, "रोज़ा गुनाह से बचने की ढाल है।" हम अल्लाह
ए खाना-पीना तो छोड़ दें, लेकिन बुरी बातें न छोड़ें तो अल्लाह तआला हमसे कैसे
होगा?

याँ कमाना

रोज़ा रखकर हमारे अन्दर नेकियाँ कमाने का शौक़ पैदा होता है। हम ज़्यादा से
इबादत करते हैं, क़ुरआन शरीफ़ पढ़ते हैं, ग़रीबों और मुहताजों की मदद करते हैं,
से ज़्यादा सदक़ा-ख़ैरात करते हैं और जहाँ तक बन पड़ता है हर एक के साथ भलाई
हैं। प्यारे रसूल (सल्ल॰) ने फ़रमाया, "हर घर का एक दरवाज़ा होता है, और इबादत
रवाज़ा रोज़ा है।"

का सवाब

अल्लाह तआला फ़रमाता है, "हर नेकी का बदला दस गुना से सात सौ गुना तक
है, लेकिन रोज़ा ख़ास मेरे लिए है इसलिए मैं जितना चाहूँगा उसका सवाब दूँगा।" प्यारे
(सल्ल॰) ने फ़रमाया, "जिनका रोज़ा अल्लाह तआला क़बूल फ़रमाएगा वे जन्नत में
रवाज़े से दाख़िल होंगे जिसका नाम 'रैयान' है।" आप (सल्ल॰) ने यह भी फ़रमाया
जो शख़्स सच्चे दिल से अल्लाह तआला को ख़ुश करने के लिए रोज़ा रखेगा, अल्लाह

तआला उसके पिछले गुनाह माफ़ फ़रमा देगा।" और यह भी फ़रमाया, "क़ियामत रोज़ा सिफ़ारिश करेगा कि ऐ परवरदिगार! इस शख़्स ने मेरी वजह से खाना-पीना छो बुराइयों से बचा; ऐ अल्लाह, तू इसे बख़्श दे।"

रोज़े की नीयत

रोज़े के लिए नीयत करनी भी ज़रूरी है। अगर कोई शख़्स बग़ैर नीयत भूखा-प्यासा रहा तो उसका रोज़ा न होगा। ज़बान से नीयत करना ज़रूरी नहीं, दिल से करना काफ़ी है। अगर ज़बान से भी कर ले तो बेहतर है। नीयत रात ही को क चाहिए। अगर भूल जाए तो दोपहर से पहले-पहले कर ले।

सहरी

सुबह सादिक़ (भोर) से पहले रोज़े की नीयत से जो कुछ खाया-पिया जाता 'सहरी' कहते हैं। सहरी खाना सुन्नत है और इसका बहुत सवाब है। अगर खाने की र बिल्कुल न हो तो दो-चार घूँट पानी ही पी ले, ताकि सहरी की सुन्नत का सवाब मिल प्यारे रसूल (सल्ल॰) ने फ़रमाया, "सहरी खा लिया करो, इसलिए कि सहरी खाने में है।" सहरी देर करके खाना चाहिए, यह नहीं कि आधी रात से खा-पीकर बैठ रहें। बर सादिक़ से ज़रा पहले फ़ारिग़ हो जाएँ। अगर कोई सोता रह जाए और सहरी न खा स भी रोज़ा ज़रूर रखे। सहरी न खाने की वजह से रोज़ा न रखना बहुत बड़ा गुनाह है

इफ़्तार

सूरज डूबते ही रोज़ा खोलने के लिए कुछ खाना-पीना 'इफ़्तार' कहलाता है। सूरज डूबते ही कर लेना चाहिए। बिना वजह अँधेरे का इन्तिज़ार करना सही नहीं रसूल (सल्ल॰) ने फ़रमाया, "मुसलमान उस वक़्त तक अच्छी हालत में रहेंगे जब तक में जल्दी करेंगे।"

इफ़्तार की दुआ

اَللّٰهُمَّ لَکَ صُمْتُ وَعَلٰى رِزْقِکَ اَفْطَرْتُ

अल्लाहुम-म ल-क सुम्तु व अ़ला रिज़्क़ि-क अफ़्तरतु।

"ऐ अल्लाह मैंने तेरे लिए ही रोज़ा रखा और तेरी ही दी हुई रोज़ी से रोज़ा खोला।"

रोज़ा खोलकर यह दुआ भी पढ़ लें—

ذَهَبَ الظَّمَأُ وَابْتَلَّتِ الْعُرُوْقُ وَثَبَتَ الْاَجْرُ اِنْشَآءَ اللّٰهُ

ज़-ह-बज़्ज़मउ वबतल्लतिल अरूक़ु व स-ब-तल अजरु इंशाअल्लाह।

"प्यास बुझ गई, रगें तर हो गईं और सवाब मिलकर रहेगा, अगर अल्लाह ने चाहा।"

रावीह की नमाज़

तरावीह की नमाज़ सुन्नते-मुअक्कदा है। प्यारे रसूल (सल्ल०) ने ख़ुद भी तरावीह की ाज़ पढ़ी है और पढ़ने का हुक्म भी दिया है। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "रमज़ान की तों में जो शख़्स सच्चे दिल से अल्लाह तआला की ख़ुशी के लिए इबादत करे, अल्लाह आला उसके पिछले गुनाह माफ़ कर देगा।" हुज़ूर (सल्ल०) के पीछे तरावीह पढ़नेवालों की ानी तादाद होती कि मस्जिद में तिल धरने की जगह न होती। हम पाबन्दी से रमज़ान की तों में तरावीह पढ़ते हैं। भला इतनी अहम नमाज़ हम कैसे छोड़ सकते हैं?

रावीह का वक़्त

तरावीह का वक़्त इशा की नमाज़ के बाद से सुबह सादिक़ तक है।

रावीह की रकअतें

प्यारे रसूल (सल्ल०) ने तरावीह की आठ[1] रकअतें भी पढ़ी हैं और इससे ज़्यादा दस, लह और बीस भी। शुरू में कुछ दिन जमाअत से पढ़ी, फिर लोगों का शौक़ और कसरत व्रकर जमाअत से पढ़ना छोड़ दी और फ़रमाया : मुझे डर है कि कहीं तुमपर तरावीह की ाज़ फ़र्ज़ न हो जाए।

हज़रत उमर (रज़ि०) ने अपने ज़माने में तरावीह की जमाअत क़ायम फ़रमाई और

कुछ लोग आठ रकअत पढ़ते हैं और कुछ बीस रकअत पढ़ते हैं। उस्ताद तल्बा के मसलक के मुताबिक़ अमली तफ़्सीलात बताएँ और बताएँ कि इख़्तिलाफ़ की बुनियाद दरअस्ल सुन्नत से इन्तिहाई मुहब्बत और एहतिमाम है।

उबई-बिन-कअ़ब को इमाम मुक़र्रर फ़रमाया और बीस रकअत पढ़ना भी तय फ़रमाया। हज़रत उसमान (रज़ि॰) और हज़रत अली (रज़ि॰) के दौर में भी इसी पर अमल रहा। इस बहुत-से लोग इसी को सुन्नत क़रार देते हैं। जो लोग तरावीह जमाअत से पढ़ते हैं उन्हें भी जमाअत से पढ़ना चाहिए। तरावीह में हर चौथी रकअत के बाद थोड़ी देर बैठकर अ करना चाहिए।

तरावीह में ख़त्मे-क़ुरआन

प्यारे रसूल (सल्ल॰) हर साल रमज़ान में हज़रत जिबरील (अलैहि॰) को पूरा क़ुर सुना दिया करते थे, बल्कि आख़िरी साल तो आपने दो मर्तबा क़ुरआन सुनाया। हज़रत (रज़ि॰) तरावीह में पूरा क़ुरआन पढ़ने का बड़ा एहतिमाम फ़रमाते थे। कुछ लोग तरावि जमाअत से पूरा क़ुरआन तर्तीबवार पढ़ने को सुन्नते-मुअक्कदा कहते हैं और इसका एहतिमाम करते हैं। आजकल तो वाक़ई इसका ज़्यादा से ज़्यादा एहतिमाम करना चा ताकि लोगों में क़ुरआन सुनने और पढ़ने का शौक़ पैदा हो और दीन से ताल्लुक़ क़ुरआन मजीद ख़ूब ठहर-ठहर कर इत्मीनान से थोड़ा-थोड़ा पढ़ना चाहिए। एक रात में क़ुरआन पढ़ना गुनाह है। प्यारे रसूल (सल्ल॰) ने फ़रमाया, "जो शख़्स तीन दिन से क क़ुरआन ख़त्म करता है वह कुछ नहीं समझता।" आप (सल्ल॰) ने हुक्म दिया कि क कम सात दिन में क़ुरआन मजीद ख़त्म किया करो।

एतिकाफ़

रमज़ान शरीफ़ के आख़िरी दस दिनों में सबसे अलग होकर मस्जिद में ठहरने 'एतिकाफ़' कहते हैं। प्यारे रसूल (सल्ल॰) पाबन्दी से एतिकाफ़ फ़रमाते थे। एक साल गया तो आपने क़ज़ा फ़रमाई। क़ुरआन शरीफ़ में भी एतिकाफ़ का ज़िक्र है और हदी भी उसकी फ़ज़ीलत आई है। बस्ती और मुहल्ले के कुछ लोगों को तो ज़रूर ही एति में बैठना चाहिए।

बीस तारीख़ को अस्र[1] की नमाज़ के बाद एतिकाफ़ में बैठ जाना चाहिए और ईद का चाँद नज़र आए तो मस्जिद से बाहर आना चाहिए। एतिकाफ़ करनेवाले को र

---

1. कुछ लोग सुबह की नमाज़ के बाद एतिकाफ़ में बैठते हैं।
2. कुछ लोग रोज़े को एतिकाफ़ के लिए शर्त नहीं मानते।

ना भी ज़रूरी है। अगर रोज़ा टूट गया तो एतिकाफ़ भी ख़त्म हो जाएगा। मर्दों को ाकाफ़ मस्जिद में करना चाहिए। इसके लिए पाक होना और नीयत करना भी ज़रूरी है। ाकाफ़ के दिनों में बिना ज़रूरत मस्जिद से बाहर न निकलना चाहिए। बस पेशाब-पाख़ाने रह के लिए निकल सकता है।

एतिकाफ़ में क़ुरआन मजीद की तिलावत, दीनी किताबों का मुताला, नफ़्ल नमाज़ें र ज़िक्र वग़ैरह करना चाहिए।

ातुल-क़द्र

रमज़ान के आख़िरी दस दिनों में, जो ताक़ (विषम संख्यावाली) रातें हैं उनमें, एक ा बड़ी बरकतवाली है। क़ुरआन मजीद में आया है कि यह रात एक हज़ार महीनों से ्तर है। साल भर में जो कुछ होनेवाला होता है उसका ख़ाका इसी रात को तैयार होता । जो आदमी इस मुबारक रात में अल्लाह तआला की इबादत करता है, फ़रिश्ते उसके ए दुआएँ करते हैं और अल्लाह के यहाँ उसकी बड़ी क़द्र होती है।

दक़ए-फ़ित्र

रमज़ान में तो यूँ भी आम महीनों के मुक़ाबले में मुसलमान सदक़ा और ख़ैरात का ादा एहतिमाम करते हैं। इसलिएं कि इस महीने में प्यारे नबी (सल्ल॰) की सख़ावत और ने का अमल बहुत ज़्यादा बढ़ जाता था। और आप (सल्ल॰) ने मुसलमानों को हुक्म भी ाया है कि यह महीना ख़ुसूसियत के साथ ग़रीबों और फ़क़ीरों के साथ हुस्ने-सुलूक का हीना है। इस आम सदक़े के अलावा प्यारे रसूल (सल्ल॰) ने इस महीने में एक और सदक़ा सलमानों के लिए ज़रूरी क़रार दिया है, जिसको 'सदक़ए-फ़ित्र' कहते हैं। सदक़ए-फ़ित्र हम सलिए अदा करते हैं कि रोज़े में हमसे जो छोटी-मोटी ग़लतियाँ हो गई हैं उनको अल्लाह आला माफ़ फ़रमा दे और यह सदक़ा उनका कफ़्फ़ारा बन जाए। दूसरे यह कि हमारे ग़रीब ाई भी हमारे साथ ईद की ख़ुशी में शरीक हों और बाल-बच्चों के लिए ईद का सामान ले ं। सदक़ए-फ़ित्र में हम ग़ल्ला भी देते हैं और पैसे भी, जिसमें ग़रीबों का फ़ायदा देखते हैं, ही दे देते हैं। अल्लाह तआला हमारी नेकियों को क़बूल फ़रमाए। आमीन!

शब्दार्थ और टिप्पणी

सख़ावत = बख़्शिश, फ़ैयाज़ी
ढाल = जिस पर तीर व तलवार के वार को रोका जाता है।
बाग़ी = नाफ़रमान

अभ्यास

1. जवाब दीजिए :

(1) रोज़े की क्या अहमियत है?
(2) रोज़े के चन्द फ़ायदे लिखिए।
(3) अल्लाह तआला रोज़ा रखने पर क्या अज्र अता फ़रमाएगा?
(4) रोज़ा क़ियामत के दिन अल्लाह तआला से क्या सिफ़ारिश करेगा?
(5) प्यारे नबी (सल्ल.) ने जमाअत से तरावीह की नमाज़ पढ़ना क्यों छोड़ दी थी?
(6) एतिकाफ़ की मुद्दत कब से कब तक है?
(7) क़ुरआन क़रीम को ख़ूब ठहर-ठहर कर थोड़ा-थोड़ा क्यों पढ़ना चाहिए?
(8) सदक़ए-फ़ित्र क्यों अदा किया जाता है?
(9) रोज़ा हमें किस तरह बुराइयों से बचाता है?

2. नीचे दर्ज अल्फ़ाज़ की तारीफ़ (परिभाषा) लिखिए :

रोज़ा, सहरी, इफ़्तार, एतिकाफ़, लैलतुल-क़द्र, सदक़ए-फ़ित्र।

3. सही और ग़लत की निशानदेही कीजिए–

	सही
(1) बग़ैर किसी वजह के जो रोज़ा न रखे वह अल्लाह तआला का बाग़ी है।	
(2) क़ुरआन करीम जिस मुबारक रात में उतरा उसको शबे-बराअत कहते हैं।	
(3) हर घर का एक दरवाज़ा होता है, और इबादत का दरवाज़ा ज़कात है।	
(4) हज़रत उमर (रज़ि.) ने अपने ज़माने में बीस रकअत तरावीह जमाअत से पढ़ना तय फ़रमाया।	
(5) तरावीह में हर चौथी रकअत के बाद थोड़ी देर बैठकर आराम करना चाहिए।	
(6) एतिकाफ़ के दिनों में बिना ज़रूरत भी मस्जिद से बाहर निकल सकते हैं।	
(7) रोज़े के टूट जाने से एतिकाफ़ ख़त्म नहीं होगा।	

नीचे लिखी दुआओं का अनुवाद लिखिए–

(क) अल्लाहुम-म ल-क सुम्तु ....
व अ़ला रिज़्क़ि-क अफ़्तरतु। ....

(ख) ज़हबज़्ज़मउ ....
वबतल्लतिल अरूकु ....
व स-ब-तल अजरु ....
इंशाअल्लाह ....

ख़ाली जगहों को भरिए–

(1) रमज़ान के रोजे मुसलमानों पर................................हैं।
(2) ....एक हज़ार महीनों से बेहतर है।
(3) जो शख़्स रमज़ान का महीना पाकर भी अपने गुनाह न बख़्शवा ले वह बड़ा............है।
(4) ....गुनाहों से बचने की ढाल है।
(5) जिनका रोज़ा अल्लाह के यहाँ क़ाबिले-क़बूल होगा वे जन्नत में......................नाम के दरवाज़े से दाख़िल होंगे।
(6) मुसलमान उस वक़्त तक अच्छी हालत में रहेंगे जब तक कि...................में जल्दी करेंगे।
(7) प्यारे (रसूल) ने फ़रमाया, "जो शख़्स.......................दिन से कम में क़ुरआन ख़त्म करता है वह कुछ नहीं समझता।"

♦♦♦

17

हुक़ूक़ और आदाब

पढ़ने-लिखने का बड़ा मक़सद यह है कि हम अदब और तमीज़ सीखें, हर
हक़ पहचानें, हर एक के साथ उसी तरह पेश आएँ जैसा कि उसका मर्तबा है और सुलूक करें जिसके वह लायक़ है। बाअदब और तमीज़दार इनसान हर जगह इज़्
निगाह से देखा जाता है। दूसरों का हक़ अदा न करनेवाला और बेअदब आदमी हर
नज़र से गिर जाता है और अल्लाह तआला के यहाँ भी सज़ा पाता है। यहाँ हम कुछ
व आदाब लिखते हैं–

मुलाक़ात के आदाब

लोगों से मेल-जोल रखने और एक-दूसरे के काम आने के लिए कभी हम
मिलने जाते हैं और कभी हमारे यहाँ कोई मिलने आता है। हर काम का एक सली
कुछ आदाब होते हैं। मुलाक़ात के वक़्त इन बातों का ख़याल रखना चाहिए–

1. जब किसी से मुलाक़ात हो तो सलाम करने में पहल करें, इसका बड़ा सवाब मुसाफ़ह करें और मिज़ाज पूछें। मुनासिब हो तो घरवालों की ख़ैरियत भी करें।
2. जब किसी से मिलने जाएँ तो साफ़-सुथरे कपड़े पहनकर जाएँ। मैले-कुचैले पहनकर किसी के यहाँ जाना बड़ी बेतमीज़ी की बात है।
3. जब किसी से मिलने जाएँ तो पहले उससे वक़्त ले लें। उसकी फ़ुरसत व मालूम कर लें। यूँ ही वक़्त-बेवक़्त किसी के यहाँ जाना मुनासिब नहीं। इस का भी हरज होता है और खुद भी आदमी दूसरों की नज़रों में गिर जाता
4. जब कोई हमसे मिलने आए तो मुस्कराते चेहरे से उसका इस्तिक़बाल व इज़्ज़त से बिठाएँ, ख़ैरियत मालूम करें और मुमकिन हो तो मुनासिब ख़ातिर करें।
5. किसी से मिलने जाएँ तो काम की बातें करें, बेकार बातों में वक़्त बर्बाद न

उसको हमारा बैठना बोझ मालूम हो।

. किसी के यहाँ जाएँ तो कभी-कभी कोई चीज़ तोहफ़े के तौर पर साथ लेते जाएँ। तोहफ़ा देने से मुहब्बत बढ़ती है।

. किसी के मकान में यूँ ही न घुस पड़ें, पहले इजाज़त लें, फिर सलाम करके अन्दर जाएँ और अगर तीन आवाज़ें देने पर कोई जवाब न आए तो बुरा न मानें, वापस आ जाएँ।

. जब कोई ज़रूरतमन्द मिलने आए तो ध्यान से उसकी ज़रूरत मालूम करें। अगर मुमकिन हो तो उसकी ज़रूरत पूरी कर दें और अगर पूरी न कर सकें तो बिना वजह उसे उम्मीद न दिलाएँ। ख़ुद किसी के यहाँ अपनी ज़रूरत लेकर जाएँ तो मुनासिब अन्दाज़ में अपनी ज़रूरत बयान कर दें, पूरी हो जाए तो शुक्रिया अदा करें और पूरी न हो सके तो शिकवा-शिकायत न करें, वापस आ जाएँ।

. सिर्फ़ यही ख़ाहिश न रखें कि दूसरे ही हम से मिलने आएँ। ख़ुद भी दूसरों से मिलने जाया करें। आपस में मेल-जोल बढ़ाना, एक-दूसरे के काम आना बड़ी पसन्दीदा बात है।

बातचीत के आदाब

1. ज़रूरत के वक़्त बात करें, और काम की बात करें। हर वक़्त बोलना और बेकार बातें बनाना बहुत बुरी आदत है।
2. हमेशा सच बोलें। झूठ से कभी अपनी ज़बान गन्दी न करें। झूठ बहुत बड़ा गुनाह है। सच्ची बात कहने से कभी न झिझकें, चाहे कितना ही बड़ा नुक़सान हो रहा हो।
3. कभी किसी बुरी बात से ज़बान गन्दी न करें। दूसरों की बुराई न करें। चुग़ली न खाएँ। शिकायतें न करें। दूसरों की नक़लें न उतारें। झूठा वादा न करें। किसी की हँसी न उड़ाएँ। अपनी बड़ाई न जताएँ। अपनी तारीफ़ न करें। कठहुज्जती न करें। मुँह देखी बात न करें। बात-बात पर क़सम न खाएँ। हमेशा दरमियानी आवाज़ से बोलें। बिना वजह चीख़-चीख़कर न बोलें। क़ुरआन मजीद में है कि सबसे ज़्यादा नागवार आवाज़ गधे की है।
4. जो बात करें, सोच-समझकर करें। बिना वजह बात को न बढ़ाएँ और न अपने इल्म

का रोब जमाने के लिए मोटे-मोटे लफ़्ज़ बोलें। ऐसी बात कहें कि सुननेवाला जाए और एक बार में न समझे या न सुन सके तो फिर दोहरा दें और ज़रा न

5. कभी ख़ुशामद और चापलूसी की बातें न करें। अपनी इज़्ज़त का हमेशा ख़या और कभी अपने मर्तबे से गिरी हुई बात न करें।

6. ठहर-ठहर कर सलीक़े से बात करें। बात करने में जल्दी और तेज़ी न करें। हर मज़ाक़ और दिल्लगी न करें, इससे आदमी की वक़अत जाती रहती है।

7. कोई सवाल करे तो पूरा सवाल ख़ूब ग़ौर से सुनें और सोच-समझकर जवाब दे नहीं कि पूरी बात सुने बग़ैर अललटप जवाब देना शुरू कर दें। अगर दूसरे से किया जा रहा हो तो ख़ुद बढ़-बढ़कर जवाब न दें।

8. कोई बात कर रहा हो तो बीच में अपनी बात न छेड़ें। अगर कोई कुछ बतान तो पहले ही से न कहें कि हमें मालूम है। बड़ों से किसी बात में न झगड़ें ? किसी मामलेवाले से झगड़ें, इनसाफ़ और सलीक़े की बात कहकर ख़ामोश हो

9. हर हाल में इनसाफ़ की बात कहें। अगर अपनी ग़लती हो तो फ़ौरन मान लें। बात की पच न करें और अगर दूसरे की ग़लती हो तो ग़ुस्से में बेजा बात न

10. बात करते वक़्त किसी की तरफ़ इशारा न करें कि दूसरे को बदगुमानी हो औ कोई ग़लत बात समझ जाए। दूसरों की बातें कान लगाकर न सुनें। जो बातें की हों वे किसी से न कहें। दूसरों का राज़ छिपाना अमानतदारी है।

11. कम कहें और ज़्यादा सुनें। किसी बुज़ुर्ग से लोगों ने कहा : आप सुनते बहुत हैं और बोलते बहुत कम हैं। फ़रमाया : हाँ, ज़्यादा सुनना चाहिए और कम चाहिए। देखते नहीं कि अल्लाह तआला ने कान दो दिए हैं और ज़ुबान एक

माँ-बाप के हक़

बन्दों के हक़ में सबसे बड़ा हक़ तुम्हारे माँ-बाप का है। माँ-बाप की ख़िदमत, मदद, उनकी इज़्ज़त करना और उनका एहसान मानना तुम्हारा सबसे पहला फ़र्ज़ है। अ तआला ने अपनी किताब में माँ-बाप के साथ अच्छे सलूक की बहुत ताकीद फ़रमाई है हर जगह अपने शुक्र के साथ माँ-बाप का शुक्रगुज़ार रहने की वसीयत की है। प्यारे (सल्ल॰) ने तो यहाँ तक फ़रमाया है कि माँ-बाप ही तुम्हारे हक़ में जन्नत हैं और म

म्हारे हक़ में जहन्नम हैं। यानी माँ-बाप की ख़िदमत व इताअत करके ही तुम जन्नत ात कर सकते हो, और उनकी नाफ़रमानी इख़्तियार करके तुम जहन्नम का ईंधन बन ा हो।

दारों के हक़

माँ-बाप के बाद सबसे बड़ा हक़ रिश्तेदारों का है। क़ुरआन मजीद में इसकी बड़ी द है और प्यारे रसूल (सल्ल॰) ने रिश्तेदारों का बड़ा हक़ बताया है। एक बार एक शख़्स ज़ूर (सल्ल॰) से कहा कि मुझे कोई ऐसी बात बताइए जो मुझे जन्नत में ले जाए। नबी ल॰) ने फ़रमाया, "अल्लाह की बन्दगी करो, किसी को उसका साझी न बनाओ, नमाज़ ठीक अदा करो, ज़कात दो और रिश्तेदारों का हक़ अदा करो।" और आप (सल्ल॰) ने भी फ़रमाया, "जो रोज़ी में बरकत चाहे, वह रिश्तेदारों के साथ अच्छा सुलूक करे।" रसूल (सल्ल॰) रिश्तेदारों के साथ हमेशा अच्छा बर्ताव करते थे। एक बार आप (सल्ल॰) बाँट रहे थे कि एक औरत आई। हुज़ूर (सल्ल॰) ने जल्दी से चादर बिछा दी और वे र बैठ गईं। वह ख़ातून हज़रत हलीमा (रज़ि॰) थीं। उन्होंने प्यारे रसूल (सल्ल॰) को न में दूध पिलाया था।

रिश्तेदारों के दर्जा-ब-दर्जा हक़ हम दीनी किताबें पढ़कर मालूम करते हैं। उनके हक़ करने की पूरी कोशिश करते हैं और उनके साथ बड़ी मुहब्बत और ख़ुलूस से पेश आते उनके साथ अच्छा सुलूक करते हैं, उनके दुख-दर्द में शरीक होते हैं। अगर वे ज़रूरतमन्द ो अपनी हैसियत के मुताबिक़ उनकी मदद करते हैं। उनके काम-काज में उनका हाथ ो हैं। उनके यहाँ कभी तोहफ़े भेजते हैं। बड़ों की इज़्ज़त करते हैं और छोटों के साथ से पेश आते हैं। अगर वे क़र्ज़ माँगें तो क़र्ज़ दे देते हैं। ग़रज़ हर तरह उनके साथ अच्छा क करते हैं और उनपर कोई एहसान नहीं जताते।

सियों के हक़

अल्लाह तआला ने पड़ोसियों का भी बड़ा हक़ रखा है। प्यारे रसूल (सल्ल॰) ने भी सियों के साथ अच्छा बर्ताव करने की बड़ी ताकीद फ़रमाई है। आप (सल्ल॰) ने ाया, "वह शख़्स मोमिन ही नहीं जो ख़ुद तो पेट भरकर खाए और उसकी दीवार तले ी भूखा हो।" प्यारे रसूल (सल्ल॰) ने एक प्यारे साथी को हिदायत फ़रमाई कि जब

शोरबा पकाओ तो उसमें पानी ज़्यादा डाल दिया करो और अपने पड़ोसी के यहाँ दिया करो। हुज़ूर (सल्ल॰) ने यह भी फ़रमाया, "जो शख़्स अल्लाह का प्यारा बनना वह अपने पड़ोसियों के साथ अच्छा बर्ताव करे।"

प्यारे रसूल (सल्ल॰) पड़ोसियों का बहुत ख़याल रखते थे और आप (सल्ल॰) सहाबा (रज़ि॰) भी बहुत ख़याल रखते थे। पड़ोसी चाहे मुसलमान हो या ग़ैर-मुस्लिम ख़याल रखना चाहिए। हाँ, रिश्तेदार और मुस्लिम पड़ोसी का हक़ और ज़्यादा है

मुसलमान कभी पड़ोसी को तकलीफ़ नहीं पहुँचाता। वह हमेशा उसके सा सुलूक करता है, उसकी इज़्ज़त करता है, उसके दुख-दर्द और ख़ुशी में शरीक होता वक़्त पर काम आता है। वह क़र्ज़ माँगे और उसके पास देने के लिए कुछ हो इनकार नहीं करता। बीमार हो तो अयादत करता है। दवा और सौदा वग़ैरह ला अगर कोई मर जाए तो जनाज़े में शिरकत करता है। जो उसके पास हो उसमें भेजता है और उसकी इज़्ज़त-आबरू की उसी तरह हिफ़ाज़त करता है, जिस तर इज़्ज़त-आबरू की हिफ़ाज़त करता है।

आम मुसलमानों के हक़

तमाम मुसलमान आपस में भाई-भाई हैं। मुसलमानों को आपस में ऐसे रहन जैसे भाई-भाई रहते हैं। इस्लाम का रिश्ता दुनिया के तमाम रिश्तों से ज़्यादा मज़ब है। इस रिश्ते की अहमियत बताते हुए प्यारे रसूल (सल्ल॰) ने एक बार बड़ी अच्छ दी। फ़रमाया, "मुसलमान एक-दूसरे के लिए ऐसे हैं जैसे एक इमारत की ईंटें, जो में गुथी हुई होती हैं और एक-दूसरे को मज़बूत रखती हैं।" फिर आप (सल्ल॰) ने की उंगलियाँ दूसरे हाथ की उंगलियों में डालकर और अच्छी तरह समझाया।

हम मुसलमानों के साथ मिल-जुलकर, मेल-मिलाप से रहते हैं और एक- सहारा बनकर इत्तिहाद और इत्तिफ़ाक़ की ज़िन्दगी गुज़ारते हैं। मुसलमानों से कट उनसे बेनियाज़ होकर अलग-थलग नहीं रहते।

प्यारे रसूल (सल्ल॰) का इरशाद है, "हर मुसलमान पर दूसरे मुसलमानों के हैं—

1. सलाम का जवाब देना।

छींक आए तो 'यरहमुकल्लाह' (तुमपर अल्लाह की रहमत हो) कहना।

उसकी दावत क़बूल करना।

बीमार हो तो मिज़ाजपुर्सी के लिए जाना।

मर जाए तो उसके जनाज़े के साथ जाना।"

हमें चाहिए कि हमेशा अपने मुसलमान भाई की इज़्ज़त करें, उसकी मदद करें, नेक ामों का मशवरा दें, बुरे कामों से बचाएँ। ग़रज़ जिस तरह हम अपनी जान, माल, ज़्ज़त-आबरू और फ़ायदे का ख़याल रखते हैं, उसी तरह दूसरे मुसलमान का भी ख़याल ्खें।

शब्दार्थ और टिप्पणी

कठहुज्जती करना	=	ख़ाह-मख़ाह बहस करना
इस्तिक़बाल करना	=	आवभगत करना
वक़अत	=	इज़्ज़त
अललटप	=	बे-सोचे-समझे

अभ्यास

. जवाब दीजिए :

(1) पढ़ने-लिखने का सबसे बड़ा मक़सद क्या है?
(2) किसी के मकान में दाख़िल होने के क्या आदाब हैं?
(3) अल्लाह तआला ने ज़बान एक और कान दो क्यों दिए?
(4) हुज़ूर (सल्ल॰) ने जन्नत में ले जानेवाली जो बातें बताईं, वे क्या-क्या हैं?
(5) "माँ-बाप ही तुम्हारे हक़ में जन्नत और माँ-बाप ही तुम्हारे हक़ में जहन्नम हैं।" इसका क्या मतलब है?
(6) रिश्तेदारों के हमपर क्या-क्या हक़ हैं?
(7) पड़ोसियों के हक़ के सिलसिले में कोई दो हदीसें लिखिए।

(8) मुसलमानों को आपस में कैसे रहना चाहिए? प्यारे रसूल (सल्ल.) ने इस बात को र
के लिए कौन-सी मिसाल पेश की है? लिखिए।

(9) एक मुसलमान के दूसरे मुसलमान पर क्या-क्या हुक़ूक़ हैं?

2. नीचे कुछ बातें बाअदब आदमी की और कुछ बेअदब आदमी की लिखी हुई हैं। सामने क में बातों की मुनासिबत से "बाअदब" और "बेअदब" लिखिए।

(1) हर जगह इज़्ज़त की निगाह से देखा जाता है। (बाअदब)

(2) जब किसी से मिलने जाता है तो पहले उससे वक़्त ले लेता है। ( )

(3) ज़रूरत पर काम आनेवाले शख़्स का शुक्रिया अदा न करनेवाला। ( )

(4) ज़रूरत के अलावा बातें करने और बेकार बातें करनेवाला। ( )

(5) वह जो अपने इल्म का रोब जमाने के लिए मोटे-मोटे अल्फ़ाज़ बोलता है। ( )

(6) ग़लती हो जाने पर फ़ौरन अपनी ग़लती मान लेनेवाला। ( )

(7) वह शख़्स जो हर हाल में इनसाफ़ की बातें करता है। ( )

3. नीचे कुछ नापसन्दीदा बातें लिखी हुई हैं जिनसे बचना बहुत ही ज़रूरी है। इनके अलाव क्या-क्या नापसन्दीदा बातें हैं? लिखिए–

(1) झूठ बोलना, (2) दूसरों की बुराई करना,
(3) चुग़ली करना, (4) शिकायतें करना,
(5) (6)
(7) (8)
(9) (10)

4. सही और ग़लत की निशानदेही कीजिए, सही (√) या ग़लत (×) का निशान बनाकर–

(1) किसी से मुलाक़ात हो तो सलाम करने में पहल करें, मुसाफ़ह करें और मिज़ाज पूछें। (

(2) कोई आपसे मिलने आए तो मुस्कराते चेहरे से उसका इस्तक़बाल करना बेअदबी है। (

(3) कोई ज़रूरतमन्द मिलने आए तो तवज्जोह से उसकी ज़रूरत मालूम करें और मुम्किन हो तो उसकी ज़रूरत पूरी कर दें। (

(4) आपस में मेल-जोल बढ़ाना और एक-दूसरे के काम आना पसन्दीदा बात है। (

(5) बात करने में जल्दी और तेज़ी दिखाना और ठहर-ठहरकर सलीक़े से बात न करना गुफ़्तगू के आदाब के ख़िलाफ़ है। (

(6) जब कोई बात कर रहा हो तो उसकी पूरी बात सुने बग़ैर बीच में अपनी बात न छेड़ें। (

8

प्यारे रसूल (सल्ल॰)

हर तरह की शुक्रगुज़ारी अल्लाह तआला के लिए है, जो सारे जहानों का ख़ालिक़ ़ बादशाह है। उसकी बादशाहत बहुत बड़ी है। ज़मीन उसकी बादशाहत का एक ा-सा हिस्सा है। ज़मीन पर अल्लाह ने इनसानों को बसाया, इनसान को अपना ख़लीफ़ा ाया। ख़लीफ़ा बनाकर सबसे बड़ा दर्जा दिया, सही इल्म दिया, रहने-सहने का ढंग ाया, अपनी मर्ज़ी बताई। इसके लिए रसूल भेजे। तमाम रसूल इनसान थे। अल्लाह के ़ बन्दे और ग़ुलाम थे। रसूलों को अल्लाह ने भेजा, इसलिए रसूल कहलाए। अल्लाह का म लाए, इसलिए वे 'पैग़म्बर' कहलाए। रसूल आकर अल्लाह की बातें पूरी-पूरी बताते, कमी-ज़्यादती न करते, अल्लाह की मर्ज़ी पर चलकर दिखाते, लोगों को अल्लाह की पर चलाते, अल्लाह का फ़रमाँबरदार बनाते और जन्नत की ख़ुशख़बरी सुनाते।

दुनिया में बहुत-से रसूल आए, सबका सही-सही इल्म तो सिर्फ़ अल्लाह ही को है। े पहले हज़रत आदम (अलैहिस्सलाम) आए, आपके बाद हज़रत नूह (अलैहिस्सलाम), त इबराहीम (अलैहिस्सलाम), हज़रत मूसा (अलैहिस्सलाम), हज़रत ईसा (अलैहिस्सलाम) ह आए। ये सब रसूल अपने-अपने वक़्त में अल्लाह का पैग़ाम लाए। सबसे आख़िर में जहान के सरदार हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) तशरीफ़ लाए। आप ल॰) को अल्लाह तआला ने सारी दुनिया की हिदायत के लिए भेजा। अब आप (सल्ल॰) ाद कोई रसूल न आएगा।

दरूद हो प्यारे रसूल (सल्ल॰) पर,
सलाम हो प्यारे रसूल (सल्ल॰) पर।

(सल्ल॰) से पहले

अब से कोई साढ़े-चौदह सौ साल पहले की बात है। दुनिया का बहुत बुरा हाल था। रफ़ लूट-मार, चोरी, झूठ, धोखा, फ़रेब, जुआ, शराब, बेशर्मी और बेहयाई फैली हुई थी। दुनिया पर कुफ़्र और शिर्क का अँधेरा छाया हुआ था। अल्लाह की मर्ज़ी बतानेवाला

कोई रसूल न था। रसूल सब जा चुके थे। दुनियावाले गुमराह हो गए थे, अल्लाह टे बन गए थे, रसूलों की तालीम भुला बैठे थे, अल्लाह का रास्ता छोड़ चुके थे। मनमानी करते या अपने जैसे आदमियों का हुक्म मानते थे या ख़ानदान और बिर रस्म व रिवाज पर चलते। अल्लाह की किताबें बिगाड़ दी थीं, उनमें अपनी-अपनी बा दी थीं। लोग पत्थर के बुत बनाकर पूजते, देवी-देवताओं को पूजते, उनके नाम पर ज़ब्ह करते, मन्नत मानते, चढ़ावे चढ़ाते। पेड़-पहाड़, नदी-नाले जानदार-बेजान सब माबूद थे। ग़रज़ जितने आदमी थे, उतने ही रास्ते हो गए थे।

जब दुनियावाले बहुत ज़्यादा बिगड़ गए, बिल्कुल ही गुमराह हो गए तो अल उनपर रहम आया और उनकी हिदायत के लिए दोनों जहान के सरदार हज़रत (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को भेजा।

"जब ज़ुल्म व सितम हद से गुज़रे तशरीफ़ मुहम्मद ले आए।"

पैदाइश

प्यारे रसूल (सल्ल०) 9 रबीउल अव्वल पीर (सोमवार) के दिन मक्का में पै मक्का अरब देश का एक मशहूर शहर है। अल्लाह तआला का पाक घर 'काबा' उ में है। अरब हमारे हिन्दुस्तान से दूर बहुत दूर, समुद्र पार एक देश है। वह देश ह से पश्चिम की तरफ़ है।

ख़ानदान

अरब देश में बहुत-से क़बीले थे। उनमें सबसे ज़्यादा इज़्ज़तवाला क़बीला था। उसी क़बीले के लोग काबा की ख़िदमत करते थे। सारा अरब क़ुरैश की इज़्ज़ था। प्यारे रसूल (सल्ल०) उसी क़बीले से थे।

आप (सल्ल०) के क़बीले में कुछ बहुत मशहूर आदमी गुज़रे हैं। उनमें एक क़ुसई अपने क़बीले के सरदार थे। हज के मौक़े पर सारे हाजियों को अपना मेहम और तीन दिन तक उन्हें मुफ़्त खाना खिलाते। क़ुसई की औलाद में हाशिम बहुत क़बीले के सभी लोगों में उनकी बड़ी इज़्ज़त थी। हाशिम बहुत बहादुर और सख़ी (एक बार क़हत (सूखा) पड़ा। हाशिम ने अपने पैसों से बहुत ज़्यादा ग़ल्ला ख़रीदा में मुफ़्त बाँट दिया। हाशिम के कई बेटे थे, उनमें सबसे मशहूर अब्दुल-मुत्तलिब

ो क़बीले के सरदार थे।

अरब में पानी की बहुत कमी थी। मक्कावालों के लिए 'ज़मज़म का कुआँ' अल्लाह बहुत बड़ी नेमत है, मगर काफ़ी दिनों से वह अटा पड़ा था। किसी को यह पता न था वह कहाँ है। अब्दुल-मुत्तलिब ने कोशिश करके उसका पता लगाया। बड़ी मेहनत से उसे ़ कराया। मक्कावालों को पानी की आसानी हो गई। इस एहसान की वजह से कावाले उनकी बड़ी क़द्र करते थे।

अब्दुल-मुत्तलिब के कई बेटे थे। उनमें सबसे छोटे और चहेते बेटे अब्दुल्लाह थे। यही ुल्लाह प्यारे रसूल (सल्ल॰) के अब्बा थे। अब्दुल्लाह की शादी बीबी आमिना से हुई थी। ी आमिना प्यारे रसूल (सल्ल॰) की अम्मी जान थीं।

प्यारे रसूल (सल्ल॰) की पैदाइश से कुछ दिन पहले ही आप (सल्ल॰) के वालिद का तक़ाल हो गया था। दादा जान अब्दुल-मुत्तलिब ज़िन्दा थे, जब उन्हें पोते की मुबारकबाद गई तो बहुत खुश हुए। घर आए, पोते को गोद में लिया, प्यार किया, काबे में ले गए, दुआ माँगी। 'मुहम्मद' नाम रखा, आठवें दिन अक़ीक़ा किया और सबकी दावत की। ों ने पूछा, "यह नाम क्यों रखा?" बोले, "मैं चाहता हूँ कि मेरे बेटे की सारी दुनिया ाफ़ करे।" अल्लाह ने उनकी आरज़ू पूरी की।

दरूद हो प्यारे रसूल (सल्ल॰) पर,
सलाम हो प्यारे रसूल (सल्ल॰) पर।

रत हलीमा सादिया (रज़ि॰)

मक्का में रिवाज था, लोग बच्चों को देहात भेज देते थे। वहीं उनकी परवरिश होती । आप (सल्ल॰) की अम्मी जान ने भी आप (सल्ल॰) को देहात भेज दिया। हज़रत हलीमा ज़ि॰) ने आप (सल्ल॰) की परवरिश की। वे बहुत नेक बीबी थीं। आप (सल्ल॰) ने उनका पिया, खुली हवा में पले-बढ़े, ख़ूब तन्दुरुस्त हो गए। साफ़-सुथरी बोली सीखी। दो साल ़ मक्का आए। अम्मी जान ने देखा, बहुत खुश हुईं। मक्का में बीमारी फैली हुई थी। लिए आपकी अम्मी जान ने हज़रत हलीमा (रज़ि॰) के साथ आप (सल्ल॰) को फिर भेज या।

आप (सल्ल॰) की भोली सूरत जो देखता, प्यार करता। आप (सल्ल॰) की मं सुनता, खुश होता। आप (सल्ल॰) बीबी हलीमा (रज़ि॰) के बच्चों से मुहब्बत करते थे आप (सल्ल॰) से बहुत मुहब्बत करते, अपने साथ खेल में शरीक करते, बकरियाँ च तो आप (सल्ल॰) को अपने साथ ले जाते। उस ज़माने में बकरियाँ चराना बुरा समझा जाता था। बड़े-बड़े शरीफ़ घरानों के लोग बकरियाँ चराते थे। आप (सर हज़रत हलीमा सादिया (रज़ि॰) की बकरियाँ चराते थे।

माँ भी चल बसीं

चार साल के हुए तो अपनी अम्मी के पास वापस आ गए। वे आप (सर देखकर बहुत ख़ुश हुईं, मुहब्बत से पालने लगीं। छः साल के हुए तो आप (सल्ल॰) व मैके गईं। रास्ते में बीमार होकर चल बसीं। आप (सल्ल॰) के वालिद का पहले ही इ हो गया था और आप (सल्ल॰) यतीम हो गए थे, अब माँ का साया भी सिर से उ उम्मे-ऐमन आप (सल्ल॰) को दादा जान के पास लाईं। दादा जान को बहुत दुख हुअ करते, जीना-मरना अल्लाह के इख़्तियार में है। आई हुई घड़ी को कौन टाल सकत

बड़े होकर प्यारे रसूल (सल्ल॰) एक बार मक़ामे 'अबवा' से गुज़रे। अम्मी र क़ब्र देखकर आपका दिल भर आया। आप (सल्ल॰) की आँखों में आँसू देखकर स रोने लगे।

अबू-तालिब की परवरिश में

दादा जान ने आप (सल्ल॰) की परवरिश की। वे आप (सल्ल॰) से बहुत प्या थे। उन्होंने बहुत मुहब्बत से पाला। आठ साल के हुए तो दादा भी चल बसे। मर उन्होंने आप (सल्ल॰) को अबू-तालिब के हवाले किया। अबू-तालिब आप (सल्ल॰) जान थे। आप (सल्ल॰) के कई चचा थे, अबू-तालिब उन सबमें अच्छे थे। आप (स बहुत मुहब्बत करते, हमेशा साथ लिए फिरते, किसी तरह की तकलीफ़ न होने देते, भी आप (सल्ल॰) को साथ रखते।

ग़श खाकर गिर गए

एक बार की बात है। आप (सल्ल॰) अभी छोटे-से थे। काबा की एक दीवार थी। लोग मरम्मत कर रहे थे। बच्चे भी कन्धों पर पत्थर लादकर ला रहे थे।

ानेवालों में आप (सल्ल॰) भी थे। कुछ देर में जब कन्धे दुखने लगे तो बच्चों ने अपना-ापना तहबन्द खोल कर कन्धों पर रख लिया। लेकिन आप (सल्ल॰) ने तहबन्द उतारना सन्द नहीं किया। आप (सल्ल॰) के चचा जान भी मौजूद थे। भतीजे की तकलीफ़ देखी तो ोले, "बेटे तुम भी तहबन्द उतार कर कन्धे पर रख लो।" आप (सल्ल॰) ने चचा के हुक्म र तहबन्द खोलना चाहा, मगर नंगा होना बर्दाश्त न कर सके। शर्म के मारे ग़श खाकर गिर ड़े। चचा ने जब यह हाल देखा तो ऐसा करने से मना कर दिया।

ावान होते हैं

प्यारे रसूल (सल्ल॰) चचा जान के साये में पले-बढ़े, जवान हुए। जवानी में आप सल्ल॰) सबसे अच्छे थे। अरब के जवान आपस में लड़ते-भिड़ते, लेकिन आप (सल्ल॰) ाड़ाई से हमेशा दूर रहते। सब शराब पीते, जुआ खेलते, बुरे-बुरे काम करते, लेकिन आप सल्ल॰) को इन चीज़ों से नफ़रत थी। सब लोग बुत-पूजते, बेशर्मी के काम करते, लेकिन आप (सल्ल॰) इन चीज़ों को बुरा समझते। आप (सल्ल॰) ग़रीबों को खाना खिलाते, कमज़ोरों की मदद करते।

अम्न की कोशिश

पन्द्रह साल के थे, जब नबी (सल्ल॰) फुज्जार की लड़ाई में शरीक हुए। इस नाम की कई लड़ाइयाँ हुईं। मक्का तो लड़ाई का घर था। आए दिन की लड़ाइयाँ और ज़ुल्म व सितम देखकर आप (सल्ल॰) बहुत कुढ़ते, ख़राबियाँ दूर करने की फ़िक्र में रहते। आप (सल्ल॰) ने अपने हमउम्र नौजवानों को समझाया। सबने मिलकर 'हिलफ़ुल-फ़ुज़ूल' के नाम से एक अनजुमन बनाई। अनजुमन का हर शख़्स इक़रार करता—

"हम देश से बदअम्नी दूर करेंगे। मुसाफ़िरों की हिफ़ाज़त करेंगे। ग़रीबों की मदद करेंगे। किसी पर ज़ुल्म न होने देंगे।"

अनजुमन ने कोशिशें कीं। ज़ुल्म घटने लगा। बदअम्नी दूर होने लगी। सब लोगों में आप (सल्ल॰) की शोहरत हो गई। लोग आप (सल्ल॰) पर भरोसा करने लगे।

तिजारत

चचा जान तिजारत करते थे। आप (सल्ल॰) भी तिजारत करने लगे। तिजारत को

आप (सल्ल॰) बहुत अच्छा समझते थे। आप (सल्ल॰) बहुत अच्छे ताजिर थे। हमेश बोलते, झूठ के पास न जाते। सब आप (सल्ल॰) को 'सादिक़' कहते। आप (सल्ल॰) म साफ़ रखते, बहुत अमानतदार थे। सब आप (सल्ल॰) को 'अमीन' कहते। सब आप (र की इज़्ज़त करते, सब आप (सल्ल॰) पर भरोसा करते। घर-घर आप (सल्ल॰) की अमान और सच्चाई की चर्चा थी।

शाम (सीरिया) का सफ़र

मक्का में एक मालदार बीबी थीं। उनका नाम ख़दीजा (रज़ि॰) था। बीबी ख़ (रज़ि॰) बेवा थीं। उनके शौहर मर चुके थे। उनका बड़ा कारोबार था। वे तिजारत के लोगों को रुपया देतीं और उन्हें नफ़े में शरीक कर लेतीं। प्यारे रसूल (सल्ल॰ अमानतदारी और सच्चाई की चर्चा सुनी तो बीबी ख़दीजा (रज़ि॰) ने चाहा कि आप (र उनका माले-तिजारत लेकर सफ़र पर जाएँ। आप (सल्ल॰) ने मंज़ूर फ़रमा लिया और ख़दीजा (रज़ि॰) के ग़ुलाम मैसरा को साथ लेकर शाम (सीरिया) के सफ़र पर रवाना आप (सल्ल॰) ने बड़ी मेहनत, अक़्लमन्दी और सच्चाई से काम किया।

निकाह

नबी (सल्ल॰) बहुत-सा नफ़ा कमाकर शाम (सीरिया) के सफ़र से लौटे। पैसे-पै हिसाब दे दिया। बीबी ख़दीजा (रज़ि॰) नेक थीं। आप (सल्ल॰) की अच्छाइयाँ देखकर ख़ुश हुईं। मैसरा ने भी आप (सल्ल॰) की ईमानदारी, नेकी, लोगों के साथ आपकी ह और मुहब्बत का आँखों देखा हाल बयान किया। बीबी ख़दीजा (रज़ि॰) पर इस बात क असर पड़ा। उन्होंने आप (सल्ल॰) को शादी का पैग़ाम दिया। आप (सल्ल॰) तैयार हो चचा जान और क़ुरैश के कुछ और लोगों को साथ लेकर बीबी ख़दीजा (रज़ि॰) के पर पहुँचे और शादी हो गई। उस वक़्त आप (सल्ल॰) पच्चीस साल के थे और बीबी ख़ (रज़ि॰) की उम्र चालीस साल थी।

हजरे-असवद का फ़ैसला

एक बार की बात है। काबा की मरम्मत हो रही थी। पुरानी दीवारें तोड़कर बन रही थीं। एक दीवार में हजरे-असवद लगा हुआ था। यह एक काला पत्थर है। यह हज़रत इबराहीम (अलैहि॰) की यादगार है। सब उसको बरकतवाला पत्थर समझते थे

ार में उस पत्थर को चुनने का वक़्त आया तो आपस में झगड़ा होने लगा। हर आदमी चाहता था कि यह बरकतवाला पत्थर मैं लगाऊँ। क़रीब था कि ख़ून-ख़राबा हो जाए। ख़िर तय हुआ कि जो शख़्स दूसरे दिन सबसे पहले काबा में आए, उसी का फ़ैसला मान या जाए। इत्तिफ़ाक़ से दूसरे दिन सबसे पहले आप (सल्ल॰) ही काबा में तशरीफ़ लाए। बको आप (सल्ल॰) पर भरोसा था। सबने आप (सल्ल॰) को पंच मान लिया। आप ल्ल॰) ने बड़ा अच्छा फ़ैसला किया। एक चादर ली। उसमें हजरे-असवद को रखा। हर बीले के सरदार को एक-एक किनारा पकड़ने को कहा। सबने मिल-जुलकर उठाया। जब थर वहाँ तक ले आए जहाँ उसे रखना था, तो आप (सल्ल॰) ने उसे उठाकर दीवार में चुन या। इस तरह हर क़बीले को इस काम में शरीक होने का मौक़ा मिल गया।

ूल होते हैं

मक्का के क़रीब एक पहाड़ी थी। पहाड़ी में एक ग़ार (गुफा) था, ग़ारे-हिरा। नबी सल्ल॰) ग़ारे-हिरा में जाते। सत्तू-पानी साथ ले जाते। कई-कई दिन तक वहाँ अकेले रहते। ल्लाह की इबादत करते। लोगों की भलाई की तदबीरें सोचते। बुराइयों को मिटाने और कियों को फैलाने के रास्ते ढूँढते। जब सत्तू-पानी ख़त्म हो जाता तो फिर घर आते। त्तू-पानी लेते और लौट जाते।

आख़िर अल्लाह ने आप (सल्ल॰) को रसूल बनाया। अपने फ़रिश्ते हज़रत जिबरील (अलैहि॰) को आप (सल्ल॰) के पास भेजा। हज़रत जिबरील अल्लाह का पैग़ाम लाए। आप (सल्ल॰) को सुनाया। आप (सल्ल॰) घर लौटे। बीबी ख़दीजा (रज़ि॰) से ज़िक्र किया। आप (सल्ल॰) कुछ परेशान थे। बीबी ख़दीजा (रज़ि॰) ने ढारस बँधाई। बोलीं, "आप घबराते क्यों हैं। अल्लाह आपको नुक़सान न होने देगा। आप नेकी करते हैं। सदक़ा देते हैं। ग़रीबों की मदद करते हैं। यतीमों और बेवाओं को सहारा देते हैं। मेहमानों की ख़ातिर करते हैं। लोगों का बोझ उठाते हैं। दुखियों के काम आते हैं। आपको किस चीज़ का डर है?"

अल्लाह का पैग़ाम

रमज़ान का मुबारक महीना था, जब अल्लाह का पैग़ाम आया। जिबरील (अलैहि॰) अल्लाह का कलाम लेकर आए। नबी (सल्ल॰) ने उसे लोगों तक पहुँचाना शुरू किया। आप (सल्ल॰) लोगों से कहते—

"अल्लाह एक है, वही सबका ख़ालिक़, राज़िक़ और हाकिम है। उसी का हुक्म मानो और उसी की इबादत करो। मैं अल्लाह का रसूल हूँ, मेरी पैरवी करो। बुराइयों से बचो, भले काम करो, अल्लाह तुमसे ख़ुश होगा। रहने को जन्नत देगा। बुरे आदमियों से अल्लाह नाराज़ होगा और बहुत ही सख़्त सज़ा देगा।"

पहले ईमान लानेवाले

नेक लोग नबी (सल्ल॰) की बात मान गए। हज़रत अबू-बक्र सिद्दीक़ (रज़ि॰ (सल्ल॰) के गहरे दोस्त थे। मर्दों में सबसे पहले वे ईमान लाए। हज़रत ख़दीजा (रज़ि॰ (सल्ल॰) की नेक बीवी थीं। औरतों में सबसे पहले वे ईमान लाईं। हज़रत अली (रज़ि॰ (सल्ल॰) के चचेरे भाई थे, लड़कों में सबसे पहले वे ईमान लाए। हज़रत ज़ैद (रज़ि॰ (सल्ल॰) के गुलाम थे, गुलामों में सबसे पहले वे ईमान लाए। ये चारों बहुत नेक थे (सल्ल॰) के साथ रहते थे। आप (सल्ल॰) की अच्छाइयों को जानते थे। आप (सल्ल बात सुनते ही सच जाना और फ़ौरन ईमान ले आए। अल्लाह तआला उनसे राज़ी

पहाड़ी की तक़रीर

कुछ दिन बाद अल्लाह का हुक्म आया कि अपने गुमराह भाइयों को अल्ल अज़ाब से डराओ। नबी (सल्ल॰) ने ऐसा ही किया। मक्का के क़रीब एक पहाड़ी है, नाम सफ़ा है। आप (सल्ल॰) उस पहाड़ी पर चढ़ गए और मक्कावालों को आवाज़ दी सब लोग जमा हो गए तो आप (सल्ल॰) ने फ़रमाया, "मैं पहाड़ी के ऊपर हूँ, तुम पहा नीचे। मैं इधर भी देख रहा हूँ, उधर भी। (मगर तुम्हारी नज़र सिर्फ़ एक तरफ़ है।) अ कहूँ कि इस पहाड़ी के पीछे डाकुओं की एक फ़ौज है, जो तुम पर हमला करनेवाली क्या तुम यक़ीन करोगे?"

सबने एक ज़बान होकर कहा, "बेशक आप ऊपर हैं। हर तरफ़ देख रहे हैं। सादिक़ (सच्चे) हैं, अमानतदार हैं। आप कभी झूठ नहीं बोलते। हम आपकी बात पर यक़ीन करेंगे।"

फिर आप (सल्ल॰) ने फ़रमाया, "लोगो! यह तो समझाने के लिए एक मिसाल यक़ीन करो, मौत तुम्हारे सिर पर खड़ी है। तुम्हें एक दिन मरना है। मरकर अल्लाह के

ा है। अपने किए का बदला पाना है। अगर तुम ईमान लाकर नेक न बन गए तो तुम सख़्त अज़ाब आएगा। तुम सिर्फ़ दुनिया को देख रहे हो और मैं आख़िरत को भी देख हूँ।"

मक्केवालों ने आप (सल्ल॰) का पैग़ाम सुना। कितनी सच्ची बातें थीं। प्यारे नबी ल्ल॰) ने कितने अच्छे ढंग से समझाया था। सब आप (सल्ल॰) को सच्चा जानते थे, मगर सच्ची बात पर यक़ीन न किया। आप (सल्ल॰) को बुरा-भला कहने लगे। बुरा-भला नेवालों में आप (सल्ल॰) का चचा अबू-लहब सबसे आगे-आगे था। बोला, "क्या तुमने इसी लिए बुलाया था?"

कोहे-सफ़ा पर

वो फ़ख़्रे-अरब ज़ेबे-मेहराबो-मिम्बर
तमाम अहले-मक्का को हमराह लेकर
गया एक दिन हस्बे-फ़रमाने-दावर
सूए दश्त और चढ़के कोहे-सफ़ा पर

यह फ़रमाया सबसे कि ऐ आले-ग़ालिब
समझते हो तुम मुझको सादिक़ या काज़िब
कहा सबने, "क़ौल आज तक कोई तेरा
कभी हमने झूठा सुना और न देखा"

कहा, "गर समझते हो तुम मुझको ऐसा
तो बावर करोगे अगर मैं कहूँगा
कि फ़ौजे-गराँ पुश्ते-कोहे-सफ़ा पर
पड़ी है कि लूटें तुम्हें घात पाकर"

कहा, "तेरी हर बात का याँ यक़ीं है
कि बचपन से 'सादिक़' है तू और 'अमीं' है"
कहा, "गर मिरी बात यह दिलनशीं है
तो सुन लो, ख़िलाफ़ इसमें असलन नहीं है

कि सब क़ाफ़िला याँ से है जानेवाला
डरो उससे जो वक़्त है आनेवाला"

वो बिजली का कड़का था या सौते-हादी
अरब की ज़मीं जिसने सारी हिला दी

नई इक लगन सबके दिल में लगा दी
इक आवाज़ में सोती बस्ती जगा दी

पड़ा हर तरफ़ गुल यह, पैग़ामे-हक़ से
कि गूँज उट्ठे दश्तो-जबल नामे-हक़ से।

(ख़्वाजा अल्ताफ़ हुसैन

अल्लाह का दीन फैलता रहा

अल्लाह का दीन आहिस्ता-आहिस्ता फैलता रहा। काफ़िर परेशान थे, क्या क हक़ की राह रोकें। मुहम्मद अकेले हैं, थोड़े-से साथी हैं, बेयारो-मददगार हैं, फिर भ उनकी तरफ़ खिंच रहे हैं। बाप-दादा का दीन मिट रहा है। सब मिलकर अबू-तालिब गए। बोले, "अबू-तालिब! सारे ख़ानदान की इज़्ज़त ख़ाक में मिल रही है। भती रोकिए। वे हमारे और आपके माबूदों को झुठला रहे हैं। उनका कहना है कि इबा लायक़ सिर्फ़ अल्लाह है। हम सब नादान हैं कि लात और मनात की पूजा कर रहे है पानी सिर से ऊँचा हो रहा है।" अबू-तालिब ने किसी तरह उनसे पीछा छुड़ाया। प्या (सल्ल॰) अपना काम करते रहे, दीन फैलता रहा।

काफ़िर फिर अबू-तालिब के पास आए। डराया, धमकाया, जान का ख़ौफ़ दि अबू-तालिब सोच में पड़ गए। भतीजे को बुलाया। कहा, "बेटे मुझपर इतना बोझ न ड प्यारे रसूल (सल्ल॰) ज़रा न घबराए। बोले, "चचा जान! यह काम तो अल्लाह का मेरी मदद करेगा। अगर ये लोग मेरे एक हाथ में सूरज और दूसरे हाथ में चाँद लाव दें तब भी मैं इस काम से नहीं रुकूँगा।" यह कहते हुए आप (सल्ल॰) की आँखों म भर आए। अबू-तालिब बोले, "जाओ बेटा! इत्मीनान से अपना काम करते रहो, ज़ालिमों के हाथ में न दूँगा।"

म का साल

कुछ ही दिन बाद आप (सल्ल॰) के चचा अबू-तालिब चल बसे। प्यारी बीवी ख़दीजा ज़ि॰) का भी इन्तिक़ाल हो गया। इन दोनों से आप (सल्ल॰) को बहुत ढारस रहती थी। नके मरने का आप (सल्ल॰) को बहुत दुख हुआ। काफ़िर पहले अबू-तालिब से डरते थे, बीबी दीजा (रज़ि॰) का लिहाज़ करते थे। इनके मरने पर जी भर कर सताने लगे। यह साल प्यारे सूल (सल्ल॰) के लिए बहुत सख़्त था। इस साल को आप (सल्ल॰) ग़म का साल कहते थे।

ब्शा की हिजरत

काफ़िर बराबर प्यारे रसूल (सल्ल॰) को और प्यारे रसूल (सल्ल॰) के प्यारे साथियों को ताते रहे और तरह-तरह के दुख देते रहे। जब पानी सिर से ऊँचा हो गया, क़ुरआन पढ़ना, ल्लाह की इबादत करना, दीन पर चलना, दूसरों को दीन की बातें बताना, सब दूभर हो या तो आप (सल्ल॰) ने मुसलमानों से फ़रमाया—

प्यारे साथियो! तुमने दीन के लिए बहुत दुख झेले। अब जो चाहे हब्शा देश चला ाए। हब्शा का बादशाह नज्जाशी है। नज्जाशी बहुत नेक है। वहाँ कोई रोक-टोक नहीं है। ाज़ादी से दीन पर अमल कर सकोगे। दीन फैलाने का भी मौक़ा मिलेगा।

चुनाँचे बहुत-से मुसलमान घर-बार छोड़कर हब्शा चले गए। काफ़िरों के ज़ुल्म से तंग ाकर वतन छोड़ दिया। दीन के लिए दूसरे देश में जा बसे। इसी को 'हिजरत' कहते हैं।

काफ़िरों ने अब भी चैन न लेने दिया। मुसलमानों का पीछा करते हुए हब्शा पहुँचे। ज्जाशी से शिकायत की। मुसलमान दरबार में बुलाए गए। हज़रत अली (रज़ि॰) के भाई ज़रत जाफ़र (रज़ि॰) मुसलमानों के सरदार थे। उन्होंने नज्जाशी के दरबार में एक तक़रीर ी। तक़रीर बहुत अच्छी थी।

ज़रत जाफ़र (रज़ि॰) की तक़रीर

हज़रत जाफ़र (रज़ि॰) ने फ़रमाया, "ऐ बादशाह! हम नादान थे, जाहिल थे, बुत पूजते, ुर्दार खाते, बदकारी करते, गाली बकते, नापाक रहते, आपस में लड़ते, अमीर ग़रीबों पर ज़ुल्म करते, न मेहमानों की इज़्ज़त होती, न पड़ोसियों के साथ अच्छा बर्ताव होता, भाई-भाई से लड़ता, ताक़तवर कमज़ोरों को सताता। ग़रज़ हम बुरे थे। हमारे काम बुरे थे। अल्लाह को

हम पर रहम आया, हमारी हिदायत का इन्तिज़ाम फ़रमाया। हममें एक रसूल भेजा। हम उससे पहले से वाक़िफ़ थे। वह बहुत ही नेक था, सादिक़ और अमीन था। उसने सीध दिखाई, सच्चे दीन की दावत दी। अल्लाह का रास्ता बताया, आपस में मुहब्बत सिखाया। उसने हमें समझाया कि हम बुत पूजना छोड़ दें। अल्लाह की इबादत करें बोलें, वादा पूरा करें, बुराइयों से बचें, गुनाहों से दूर रहें। यतीमों का माल न खाएँ, जु बाज़ आ जाएँ। पड़ोसियों को दुख न दें, उन्हें हर तरह का आराम पहुँचाएँ। भोली- औरतों पर तोहमत न लगाएँ। नमाज़ पढ़ें, रोज़े रखें, अल्लाह की राह में माल ख़र्च आपस में मिल-जुलकर रहें। हमने उसे नबी जाना, अल्लाह का रसूल माना। उसकी पर अमल किया। हमारी क़ौम हमारी दुश्मन बन गई, हमें सताने लगी। इसलिए हम वतन छोड़कर यहाँ चले आए।"

नज्जाशी ने हज़रत जाफ़र (रज़ि॰) की तक़रीर सुनी। तक़रीर बहुत अच्छी थी, ब से सुनी, हज़रत जाफ़र (रज़ि॰) की बातों का असर लिया। उनसे क़ुरआन मजीद क़ुरआन मजीद सुनकर रोने लगा। काफ़िरों को निकलवा दिया और मुसलमानों के अच्छा बर्ताव किया। कुछ दिन बाद ख़ुद भी मुसलमान हो गया। (अल्लाह की रहम उसपर!)

प्यारे रसूल (सल्ल॰) ने हिजरत नहीं की। आप (सल्ल॰) हब्शा नहीं गए, मक्के रहे, दुख सहते रहे, लोगों को अल्लाह की तरफ़ बुलाते रहे। आप (सल्ल॰) मेलों में मंडियों में जाते, हज के मौक़े पर जगह-जगह से आए हुए लोगों को दीन की बातें ब इस तरह धीरे-धीरे मक्का के बाहर दीन फैलता रहा।

ताइफ़ का सफ़र

मक्का से क़रीब अस्सी किलोमीटर दूर एक बस्ती है, उसका नाम 'ताइफ़' है। ग में लोग वहाँ सैर-सपाटे के लिए जाया करते थे। मक्का में दीन का काम करते-करते रसूल (सल्ल॰) बहुत दिन हो गए थे। मक्के का एक-एक आदमी आप (सल्ल॰) का था। कोई आप (सल्ल॰) की बात पर ध्यान न देता। आप (सल्ल॰) ने सोचा कि अब जाकर क्यों न अल्लाह का पैग़ाम सुनाऊँ। हो सकता है कि वहाँ कुछ लोग सुनें और साथी मिल जाएँ और मिलकर अल्लाह के दीन का काम करें। यह सोचकर आप (स ताइफ़ गए। ताइफ़ के लोग बहुत बुरे थे। उन्होंने आप (सल्ल॰) की बातें नहीं सुनीं।

त॰) के साथ बहुत बुरा सुलूक किया। पत्थरों से मारा, गालियाँ दीं, सताने के लिए न और शरारती बच्चे पीछे लगा दिए। आप (सल्ल॰) लहुलूहान हो गए, मगर बद्दुआ ो, बराबर दुआ ही करते रहे, "ऐ अल्लाह, ये अनजान हैं इनको हिदायत दे।"

दुरूद हो प्यारे रसूल (सल्ल॰) पर,
सलाम हो प्यारे रसूल पर।

शब्दार्थ और टिप्पणी

हिदायत	=	रहनुमाई, राह दिखाना
बाग़ी	=	सरकश, हुक्म न माननेवाला
ग़श खाना	=	बेहोश हो जाना
अनजुमन	=	महफ़िल, कमेटी, मजलिस, समिति, सभा

अभ्यास

ाब दीजिए :

1) प्यारे रसूल से पहले दुनिया का क्या हाल था?
2) नबी (सल्ल॰) ने नौजवानी में किस तरह अमन की कोशिश की और उसका क्या असर हुआ?
3) सब लोग नबी (सल्ल॰) को 'सादिक़' और 'अमीन' क्यों कहते थे?
4) हज़रत ख़दीजा (रज़ि॰) ने नबी (सल्ल॰) को शादी का पैग़ाम क्यों दिया?
5) नबी (सल्ल॰) किस साल को ग़म का साल कहते थे?
6) नबी (सल्ल॰) ने शाम (सीरिया) का सफ़र क्यों किया था?
7) हब्शा देश के बादशाह का नाम क्या था?
8) हज़रत जाफ़र (रज़ि॰) की तक़रीर का नज्जाशी पर क्या असर हुआ?
9) हिजरत किसे कहते हैं?

2. ख़ाली ख़ानों में क़ुरैश क़बीले के मशहूर अफ़राद के नाम इस तर्तीब के साथ लिखिए कि रिश्ते सिलसिला हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) से मिल जाए–

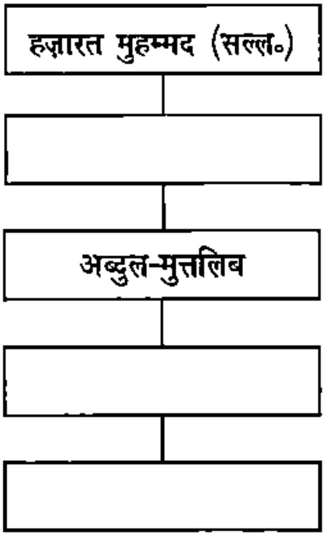

3. ख़ाली जगहों को भरिए :

(1) सबसे पहले रसूल हज़रत......................थे।
(2) हमारे रसूल (सल्ल॰).......................पीर के रोज़ मक्का में पैदा हुए।
(3) अब्दुल-मुत्तलिब ने.......................का पता लगाया और उसे साफ़ कराया।
(4) आप (सल्ल॰)............................की उम्र तक बीबी हलीमा सादिया के पास रहे।
(5) छह साल की उम्र में आप (सल्ल॰) की.......................का इन्तिक़ाल हुआ।
(6) आप (सल्ल॰) जब आठ साल के हुए तो आप सल्ल॰ के......................का इन्तिक़ाल
(7) ....साल की उम्र में आप (सल्ल॰) फ़ुज्जार की लड़ाई में शरीक हुए
(8) नबी बनाए जाने से पहले आप (सल्ल॰)....................में तशरीफ़ ले जाते और अल्ला इबादत करते।
(9) नबी बनाए जाने के बाद.......................पहाड़ी के दामन में आप (सल्ल॰) ने लोगों किया और तक़रीर की।

4. एक जैसे नम्बर शुमार लिखकर मुनासिब जोड़े लगाइए। जैसे–

(क)	(ख)
(1) अब्दुल-मुत्तलिब	अब्बू जान
अब्दुल्लाह	प्यारे चचा
अबू-तालिब	हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) के गुलाम

हज़रत ख़दीज़ा (रज़ि॰)		अम्मी जान
हज़रत अली (रज़ि॰)		हज़रत ख़दीजा (रज़ि॰) के गुलाम
हज़रत हलीमा (रज़ि॰)		प्यारी बीवी
बीबी आमिना		दूध अम्मा
हज़रत जाफ़र (रज़ि॰)		हज़रत अली (रज़ि॰) के भाई
हज़रत ज़ैद (रज़ि॰)		चचेरे भाई
मैसरा	(1)	दादा

ीचे लिखे उनवानों (विषयों) पर छह-सात जुमले (वाक्य) लिखिए–

(1) हजरे-असवद का झगड़ा आप (सल्ल॰) ने कैसे सुलझाया?

(2) ताइफ़ के सफ़र का हाल।

ीचे लिखी बातें सही हैं या ग़लत? निशानदेही कीजिए–

	सही	ग़लत
(1) प्यारे रसूल (सल्ल॰) 10 रबीउल-अव्वल पीर के दिन पैदा हुए।		
(2) मक्का हमारे मुल्क हिन्दुस्तान से दक्षिण की तरफ़ है।		
(3) सात साल की उम्र में नबी (सल्ल॰) की अम्मी जान अल्लाह को प्यारी हो गईं।		
(4) नबी (सल्ल॰) की अम्मी जान की क़ब्र 'अबवा' में है।		
(5) आठ साल की उम्र में नबी (सल्ल॰) के दादा चल बसे।		
(6) हज़रत ख़दीजा (रज़ि॰) नबी (सल्ल॰) से उम्र में 15 साल बड़ी थीं।		
(7) रमज़ान का मुबारक महीना था, जब आप (सल्ल॰) के पास जिबरील (अलैहि॰) अल्लाह का पैग़ाम लेकर आए।		

ख़ाली जगहों में सबसे पहले ईमान लानेवालों के नाम लिखिए।

(1) मर्दों में ____________

(2) औरतों में ____________

(3) लड़कों में ____________

(4) गुलामों में ____________

कुछ और काम

हज़रत जाफ़र (रज़ि॰) ने नज्जाशी के दरबार में जो तक़रीर की थी, उसे ज़बानी याद करके ाइए।

19

हमारी पाक माएँ

प्यारे रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) की कई बीवियाँ थीं। सब ही बड़ी ने सच्ची थीं। उनको हम 'उम्महातुल-मोमिनीन' कहते हैं। 'उम्महातुल-मोमिनीन' के मुसलमानों की माएँ। प्यारे रसूल (सल्ल॰) हम सब मुसलमानों के रूहानी बाप हैं (सल्ल॰) ने हमें सीधी राह बताई, अल्लाह की मर्ज़ी पर चलना सिखाया, इसी ि अल्लाह तआला ने प्यारे रसूल (सल्ल॰) की बीवियों को मुसलमानों की माएँ कहा

हम सब मुसलमान उनका बड़ा अदब और एहतिराम करते हैं, जिस तरह अ का अदब और एहतिराम करते हैं, बल्कि उससे भी बढ़कर। इन बीबियों ने दीन की की। दीन के फैलाने में बड़ी कोशिशें कीं। हर हाल में प्यारे रसूल (सल्ल॰) का साथ उनकी ज़िन्दगियाँ तमाम दुनिया की औरतों के लिए बेहतरीन नमूना हैं। नबी (सल बीवियों में हज़रत ख़दीजा (रज़ि॰) और हज़रत आइशा (रज़ि॰) बहुत मशहूर हैं। दार्द अक्सर मुझे उनके हालात सुनाती रहती हैं। लीजिए आप भी सुनिए—

हज़रत ख़दीजा (रज़ि॰)

हज़रत ख़दीजा (रज़ि॰) प्यारे रसूल (सल्ल॰) की सबसे बड़ी बीवी थीं। बीबी (रज़ि॰) बड़ी नेक और अच्छी बीबी थीं। उनके अब्बा का नाम ख़ुवैलिद था। उनर्क का नाम फ़ातिमा बिन्ते-ज़ाइदा था। चालीस साल की थीं, जब प्यारे रसूल (सल्ल॰) से शादी हुई। बीबी ख़दीजा (रज़ि॰) प्यारे रसूल (सल्ल॰) को बहुत चाहती थीं। वे बड़ी ख़ातून थीं। उन्होंने अपना सारा माल अल्लाह की राह में लगा दिया। प्यारे रसूल की बड़ी ख़िदमत की। जब काफ़िर लोग प्यारे रसूल (सल्ल॰) को सताते, कहना न म वे आप (सल्ल॰) को तसल्ली देतीं, हर तरह मदद करतीं। प्यारे रसूल (सल्ल॰) को भ बड़ी मुहब्बत थी। उनके इन्तिक़ाल के बाद प्यारे रसूल (सल्ल॰) उनको बहुत याद क जब कोई अच्छी चीज़ घर में पकती, बीबी ख़दीजा (रज़ि॰) की सहेलियों के लिए देते। प्यारे रसूल (सल्ल॰) फ़रमाते, "जब लोगों ने मेरी बात नहीं मानी तो ख़दीजा (र

बात मानी। जब सब लोग काफ़िर थे, उस वक़्त वे मुझपर ईमान लाईं। जब कोई मेरी (करनेवाला नहीं था, उस वक़्त उन्होंने मेरी मदद की।"

पैंसठ (65) साल की उम्र में उनकी वफ़ात हो गई।

इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन।

(हम अल्लाह ही के हैं और अल्लाह की तरफ़ लौटकर जानेवाले हैं।)

बीबी ख़दीजा (रज़ि॰) के इन्तिक़ाल से प्यारे रसूल (सल्ल॰) को बड़ा दुख हुआ। आप ल्ल॰) अक्सर ग़मगीन रहा करते। आप (सल्ल॰) इस साल को 'आमुल-हुज़्न' कहते थे। मुल-हुज़्न' के माने हैं ग़म का साल।

बीबी ख़दीजा (रज़ि॰) का लक़ब 'ताहिरा' था। और सच्ची बात यह है कि वे बड़ी ोज़ा ख़ातून थीं। दीन के फैलाने में उन्होंने बड़े दुख सहे।

एक बार काफ़िरों ने प्यारे रसूल (सल्ल॰) को अबू-तालिब की घाटी में क़ैद कर दिया। रत ख़दीजा (रज़ि॰) भी प्यारे रसूल (सल्ल॰) के साथ उसी घाटी में रहीं और हर तरह के सहती रहीं। लोग उस घाटी में भूख-प्यास की तकलीफ़ें बर्दाश्त करते, लेकिन दीन पर ाम रहे।

प्यारे रसूल (सल्ल॰) ने फ़रमाया, "दुनिया की तमाम औरतों में सबसे बेहतर हज़रत ाम (अलैहि॰) और हज़रत ख़दीजा (रज़ि॰) हैं। अल्लाह तआला उनसे राज़ी हो।"

रत आइशा (रज़ि॰)

प्यारे रसूल (सल्ल॰) की बहुत चहेती बीवी थीं। और क्यों न हों! वे थीं भी ऐसी ही। का इल्म उन्होंने ख़ूब सीखा था। क़ुरआन और हदीस की बड़ी माहिर थीं। बड़े-बड़े बी उनसे दीन की बातें पूछते थे।

हज़रत आइशा (रज़ि॰) के अब्बू जान हज़रत अबू-बक्र सिद्दीक़ (रज़ि॰) प्यारे रसूल ल्ल॰) के बड़े प्यारे सहाबी थे। उनकी अम्मी का नाम ज़ैनब था और 'उम्मे-रूमान' नयत थी। उनके अब्बू ने उनकी शादी कम उमरी में प्यारे रसूल (सल्ल॰) से कर दी। ो आइशा (रज़ि॰) ने प्यारे रसूल (सल्ल॰) की बड़ी ख़िदमत की। बीबी आइशा (रज़ि॰) के रे ही में प्यारे रसूल (सल्ल॰) दफ़न किए गए।

हज़रत आइशा (रज़ि॰) दीन के इल्म में तमाम औरतों से बढ़कर थीं, बल्कि कुछ को ़कर मर्दों से भी उन्हें दीन का इल्म ज़्यादा हासिल था। उन्होंने प्यारे रसूल (सल्ल॰) से

दो सौ इक्कीस हदीसें बयान की हैं, जो हदीस की मशहूर किताबों 'सहीह मुस्लि 'सहीह बुख़ारी' में मौजूद हैं।

क़ुरआन पाक में कई आयतें उनकी तारीफ़ में उतरीं और अल्लाह तआला ने नेकी और पाकी की गवाही दी। प्यारे रसूल (सल्ल॰) भी उनकी बहुत तारीफ़ फ़रमात थे।

बीबी आइशा (रज़ि॰) बहुत ही बहादुर और सख़ी ख़ातून थीं। ग़रीबों का बड़ा रखती थीं। कभी किसी का एहसान नहीं लेती थीं। हर काम अपने हाथ से कर लेतीं। तारीफ़ सुनना बिल्कुल पसन्द न था। कभी किसी की ग़ीबत न करतीं। इन्हीं ख़ूबि वजह से प्यारे रसूल (सल्ल॰) को भी उनसे से बड़ी मुहब्बत थी।

बीबी आइशा (रज़ि॰) प्यारे रसूल (सल्ल॰) के बाद 48 साल तक ज़िन्दा रहीं। तमाम उम्र दीन की ख़िदमत और इशाअत में गुज़ार दी। बड़े-बड़े सहाबा (रज़ि॰) ने दीन का इल्म सीखा। 63 साल की उम्र में आप (रज़ि॰) ने वफ़ात पाई।

इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन।

(हम अल्लाह ही के हैं और अल्लाह ही की तरफ़ लौटकर जानेवाले हैं

शब्दार्थ और टिप्पणी

लक़ब	=	वह नाम जो किसी ख़ास ख़ूबी या बुराई की वजह से पड़ गर
कुन्नियत	=	वह नाम जो माँ-बाप या औलाद की तरफ़ निस्बत करके बोल
इशाअत	=	फैलाना, आम करना

अभ्यास

1. जवाब दीजिए–

(1) 'उम्महातुल-मोमिनीन' किनको कहा जाता है? उन्हें ऐसा क्यों कहते हैं?

(2) प्यारे रसूल (सल्ल॰) से शादी के वक़्त हज़रत ख़दीजा (रज़ि॰) की उम्र क्या थी?

(3) बीबी ख़दीजा (रज़ि॰) के इन्तिक़ाल पर आप (सल्ल॰) को बड़ा सदमा क्यों पहुँचा?

(4) किन औरतों के बारे में प्यारे रसूल (सल्ल॰) ने फ़रमाया कि वे दुनिया की तमाम औरतों से बेह

(5) 'उम्मे-रूमान' किसकी कुन्नियत थी?

(6) किन ख़ूबियों की वजह से प्यारे रसूल (सल्ल॰) को हज़रत आइशा (रज़ि॰) से इन्तिहाई मुहब्बत थी?

ोचे दी गई मालूमात सही हैं या ग़लत? निशानदेही कीजिए। साथ ही जो ग़लत मालूमात दर्ज हैं उन्हें करके लिखिए–

	सही	ग़लत
1. 'उम्महातुल-मोमिनीन' का अदब व एहतिराम अपनी सगी माँ से भी बढ़कर करना चाहिए।		
2. बीबी ख़दीजा की अम्मी का नाम फ़ातिमा बिन्ते-ज़ाइदा था।		
3. 'आमुल-हुज़्न' के मायने हैं ग़म का महीना।		
4. बीबी ख़दीजा (रज़ि॰) का लक़ब अफ़ीफ़ा था।		
5. 'सहीह बुख़ारी' और 'सहीह मुस्लिम' फ़िक़ह की दो मशहूर किताबें हैं।		
6. बीबी आइशा (रज़ि॰) आप (सल्ल॰) के बाद अड़तालीस साल ज़िन्दा रहीं।		
7. बीबी आइशा (रज़ि॰) ने चौंसठ साल की उम्र में वफ़ात पाई।		

पाँच-छह जुम्लों (वाक्यों) में बीबी आइशा (रज़ि॰) की वे ख़ूबियाँ लिखिए जिनकी वजह से आप (रज़ि॰) बड़े सहाबियों से भी बढ़कर थीं।

ख़ाली जगहों को भरिए–

(क) 'उम्महातु-मोमिनीन' के माने हैं..................................।

(ख) ....प्यारे रसूल (सल्ल॰) की सबसे बड़ी बीवी थीं।

(ग) बीबी ख़दीजा (रज़ि॰) के अब्बू जान का नाम..........................था।

(घ) बीबी ख़दीजा (रज़ि॰) की वफ़ात.......................साल की उम्र में हुई।

(ङ) बीबी आइशा (रज़ि॰) के अब्बू जान का नाम.............और अम्मी जान का नाम.............था।

(च) प्यारे रसूल (सल्ल॰)..........................के कमरे में दफ़न किए गए।

(छ) बीबी आइशा (रज़ि॰) ने आप (सल्ल॰) से.....................हदीसें बयान की हैं।

प्यारे रसूल (सल्ल॰) की प्यारी बेटी

हज़रत फ़ातिमा (रज़ि॰)

प्यारे रसूल (सल्ल॰) की आठ औलादें हुईं, चार लड़के और चार लड़कियाँ। हज़रत फ़ातिमा (रज़ि॰) बहुत मशहूर हैं। दादी अम्मा अक्सर उनका हाल सुनाती कहती हैं कि तमाम दुनिया की मुसलमान औरतों के लिए उनकी ज़िन्दगी बेहतरीन है।

बीबी फ़ातिमा (रज़ि॰) प्यारे रसूल (सल्ल॰) की सबसे चहेती बेटी थीं। उनकी जान का नाम हज़रत ख़दीजा (रज़ि॰) था। हज़रत फ़ातिम (रज़ि॰) बड़ी नेक और इबादत बीबी थीं, रात-दिन अल्लाह की इबादत करतीं, सादा ज़िन्दगी गुज़ारतीं, घर के काम-काज खुद करतीं और हर हाल में खुश रहतीं।

बीबी फ़ातिमा (रज़ि॰) का निकाह प्यारे रसूल (सल्ल॰) के चचेरे भाई हज़रत (रज़ि॰) के साथ हुआ था। उनके कई बच्चे हुए, जिनमें हज़रत हसन (रज़ि॰) और हुसैन (रज़ि॰) बहुत मशहूर हैं।

प्यारे रसूल (सल्ल॰) हज़रत फ़ातिमा (रज़ि॰) को बहुत चाहते थे। और क्यों न बीबी फ़ातिमा थीं भी तो बहुत नेक। प्यारे रसूल (सल्ल॰) ने फ़रमाया, "फ़ातिमा जन्नती औरतों की सरदार हैं।" प्यारे रसूल (सल्ल॰) जब कभी सफ़र से वापस आते, में जाकर दो रकअत नफ़्ल पढ़ते और फिर सबसे पहले हज़रत फ़ातिमा (रज़ि॰) तशरीफ़ ले जाते। एक बार एक सहाबी (रज़ि॰) ने हज़रत आइशा (रज़ि॰) से पूछा रसूल (सल्ल॰) को सबसे ज़्यादा प्यारा कौन था? हज़रत आइशा (रज़ि॰) ने ज फ़रमाया—"फ़ातिमा।"

बीबी फ़ातिमा (रज़ि॰) में बहुत-सी ख़ूबियाँ थीं। शर्म और हया तो मान कूट-कूटकर भर दी गई थी। एक बार हज़रत अली (रज़ि॰) के कहने पर अपने अ के पास गईं कि ख़िदमत के लिए कोई ख़ादिमा (नौकरानी) मिल जाए। जाने को

ं लेकिन वहाँ देखा कि कुछ लोग बैठे हुए हैं, मारे शर्म के कुछ न कह सकीं और दबे पाँव पस चली आईं। हज़रत अली (रज़ि॰) के उकसाने पर दोबारा फिर गईं, मगर शर्म के मारे बान से कुछ न कह सकीं। अगले दिन प्यारे रसूल (सल्ल॰) खुद ही बेटी के घर पहुँचे और छा, "बेटी फ़ातिमा! क्या ज़रूरत थी?" फ़ातिमा (रज़ि॰) चुप रहीं। हज़रत अली (रज़ि॰) ने रमाया, "या रसूलुल्लाह! चक्की पीसते-पीसते इनके हाथों में गट्टे और मश्क उठाते-उठाते र्दन में निशान पड़ गए हैं। मैंने देखा कि आप (सल्ल॰) के पास कुछ लौंडी-गुलाम आए हुए । मैंने ही उनसे कहा था कि प्यारे रसूल (सल्ल॰) से जाकर कहो, शायद कि कोई ख़ादिमा ल जाए।"

प्यारे रसूल (सल्ल॰) की आँखों में आँसू भर आए और फ़रमाया, "बेटी! सब्र करो। ल्लाह का तक़वा इख़्तियार करो, अल्लाह के हुक्मों को पूरा करती रहो और रात को सोते क़्त 33 बार 'सुब्हानल्लाह' और 33 बार 'अल-हम्दुलिल्लाह' और 34 बार 'अल्लाहु-अकबर' ढ़ लिया करो। बेटी! जाओ, यह अमल तुम्हारे लिए ख़ादिमा से ज़्यादा बेहतर होगा।"

बीबी फ़ातिमा (रज़ि॰) ने फ़रमाया, "अब्बू जान! मैं अल्लाह और रसूल से इस हाल भी खुश हूँ।" यही तस्बीह 'तस्बीहे-फ़ातिमा' के नाम से मशहूर है।

शर्म और हया लड़कियों का सबसे क़ीमती ज़ेवर है। बीबी फ़ातिमा (रज़ि॰) का तो ह हाल था कि हर वक़्त अपना जिस्म सिर से पाँव तक बड़ी सावधानी से ढके रहतीं, पानी ुद भर-भरकर लातीं, मगर क्या मजाल की जिस्म का कोई हिस्सा खुल जाए। बीबी ातिमा (रज़ि॰) ने ज़िन्दगी भर कोई ऐसा बारीक कपड़ा नहीं पहना जिससे जिस्म की माइश हो। ज़िन्दगी में तो वे हमेशा एहतियात करती रहीं, मगर आख़िरी वक़्त में जब ीमार पड़ीं तो अक्सर फ़िक्रमन्द रहतीं कि मरने के बाद कहीं लाश की बेपरदगी न हो, योंकि उस वक़्त तक औरतों का जनाज़ा भी मर्दों ही की तरह खुला हुआ जाता था।

बीबी असमा (रज़ि॰) से बातों-बातों में ज़िक्र आया। उन्होंने फ़रमाया, "बहन! हब्श ं यह रिवाज है कि औरतों के जनाज़े पर लकड़ी खड़ी करके परदा डाल देते हैं।" फिर न्होंने खजूरों की टहनियाँ लीं और परदा तानकर दिखाया। बीबी फ़ातिमा (रज़ि॰) को यह रीक़ा बहुत पसन्द आया। इसलिए उनके जनाज़े पर भी उसी तरह परदा ताना गया और सी वक़्त से औरतों के जनाज़े पर परदा लगाया जाने लगा। आजकल तो मर्दों और औरतों ोनों ही के जनाज़े ढाँककर ले जाए जाते हैं।

बीबी फ़ातिमा (रज़ि॰) को अपने अब्बू जान से बहुत मुहब्बत थी। वे दिल और जान

से आप (सल्ल॰) का कहना मानतीं, हर काम में आप (सल्ल॰) की ख़ुशी का ख़याल और कभी कोई ऐसा काम न करतीं जिससे प्यारे नबी (सल्ल॰) नाराज़ हों।

एक बार प्यारे रसूल (सल्ल॰) सफ़र से आए तो हज़रत फ़ातिमा (रज़ि॰) ने खु मारे घर सजाया, दरवाज़े पर रंगीन परदा लटकाया और अपने दोनों बेटों—हज़रत (रज़ि॰) और हज़रत हुसैन (रज़ि॰) को चाँदी के कंगन पहनाए। प्यारे रसूल (सल्ल॰) आदत के मुताबिक़ सबसे पहले बेटी से मिलने के लिए गए। दरवाज़े पर जाकर यह स देखा तो बग़ैर मिले वापस चले गए। बीबी फ़ातिमा (रज़ि॰) ने अपने अब्बू जान की न का हाल सुना तो बहुत दुखी हुईं, आँखों से आँसू जारी हो गए। परदा और कंगन उ दिए और अपने अब्बू जान के पास कहला भेजा कि मैंने उनको सदक़ा कर दिया है, जिसको चाहें दे दें। आप (सल्ल॰) ने कंगन बेच डाले और यह रक़म उन ग़रीब मुस पर ख़र्च कर दी जो दीन का इल्म सीखने के लिए मस्जिदे-नबवी के चबूतरे पर रहा थे।

बीबी फ़ातिमा (रज़ि॰) की इसी दीनदारी, सादगी और शर्म व हया का असर उनकी गोद में पलकर हज़रत हुसैन (रज़ि॰) जैसे बहादुर मुजाहिद उठे, जिन्होंने दीन की रखने के लिए अपनी जान तक क़ुरबान कर दी।

प्यारे रसूल (सल्ल॰) जब सख़्त बीमार पड़े तो आप (सल्ल॰) ने बीबी फ़ातिमा (को बुलवाया। जब वे तशरीफ़ ले आईं तो क़रीब बुलाकर कान में कुछ बातें की, लगीं। फिर बुलाकर कान में कुछ कहा तो हँस पड़ीं। हज़रत आइशा (रज़ि॰) ने बीबी फ़ (रज़ि॰) से बाद में पूछा तो कहने लगीं, पहली बार तो अब्बू जान ने फ़रमाया, "मैं इस ब में अब तुमसे जुदा होनेवाला हूँ।" जब मैं रोने लगी तो आप (सल्ल॰) ने फ़रमाया, "फ़ा ख़ानदान में तुम सबसे पहले मुझसे आकर मिलोगी", तो मैं हँसने लगी। बीबी फ़ (रज़ि॰) प्यारे रसूल (सल्ल॰) के बाद छह महीने तक ज़िन्दा रहीं और 3 रमज़ान 11 को दुनिया से हमेशा के लिए रुख़सत हो गईं। हम सब अल्लाह के बन्दे हैं और उ तरफ़ लौटकर जाएँगे। अल्लाह तआला हमें बीबी फ़ातिमा (रज़ि॰) के नक़्शे-क़दम पर की तौफ़ीक़ बख़्शे। आमीन!

अभ्यास

जवाब दीजिए–

(1) सफ़र से वापसी पर प्यारे रसूल (सल्ल॰) का क्या मामूल था?

(2) मुसलमान लड़कियों को किस क़िस्म का लिबास पहनना चाहिए?

(3) हज़रत फ़ातिमा (रज़ि॰) बीमारी की हालत में किस बात के लिए फ़िक्रमन्द रहती थीं?

(4) औरतों के जनाज़े में परदा लगाना कब से शुरू हुआ?

(5) हज़रत फ़ातिमा (रज़ि॰) ने परदा और कंगन क्यों उतरवाए?

(6) मुसलमान लड़कियों और औरतों के लिए हज़रत फ़ातिमा (रज़ि॰) की ज़िन्दगी में क्या-क्या नमूने हैं?

(7) नबी करीम (सल्ल॰) ने हज़रत फ़ातिमा (रज़ि॰) को सब्र और तक़वा इख़्तियार करने की नसीहत किस मौक़े पर की?

(8) तस्बीहे-फ़ातिमा (रज़ि॰) किसे कहते हैं?

(9) बीबी फ़ातिमा (रज़ि॰) के रोने और हँसने की वजह लिखिए?

ख़ाली जगहें मुनासिब अल्फ़ाज़ (शब्दों) से भरिए–

(क) प्यारे रसूल (सल्ल॰) की आठ औलादें हुई......................लड़के और......................लड़कियाँ।

(ख) बीबी फ़ातिमा (रज़ि॰) की अम्मी का नाम..................................था।

(ग) बीबी फ़ातिमा (रज़ि॰) का निकाह...............................के साथ हुआ था।

(घ) बीबी फ़ातिमा (रज़ि॰) के कई बच्चे हुए, उनमें....................और....................बहुत मशहूर हुए।

(ङ) ....को बीबी फ़ातिमा (रज़ि॰) की वफ़ात हुई।

कुछ और काम

1. तस्बीहे-फ़ातिमा (रज़ि॰) याद करके सुनाइए और रोज़ाना पढ़ा भी कीजिए।

♦♦♦

दस जन्नती

वे लोग कितने ख़ुशनसीब थे। जिन्होंने प्यारे रसूल (सल्ल॰) को देखा, आप (स पर ईमान लाए, ज़िन्दगी भर आप (सल्ल॰) के साथ रहे और आप (सल्ल॰) की इताअत हुए इस दुनिया से रुख़्सत हो गए। वे लोग 'सहाबा' (रज़ि॰) कहलाते हैं। सहाबा (रज़ि अच्छे थे। दिन-रात अल्लाह की इबादत करते। प्यारे रसूल (सल्ल॰) से मुहब्बत करते (सल्ल॰) का कहा मानते। दिल-जान से आप (सल्ल॰) पर फ़िदा होते। कभी आप (स की नाफ़रमानी न करते। हर वक़्त अल्लाह तआला की ख़ुशी के काम करते। अ तआला जिनसे ख़ुश होता है, उन्हें जन्नत देता है। यह तो क़ियामत के दिन ही मालूम कि किसको अल्लाह तआला जन्नत में भेजेगा और किसको दोज़ख़ में। लेकिन प्यारे (सल्ल॰) के कुछ सहाबा (रज़ि॰) को दुनिया ही में जन्नत की ख़ुशख़बरी मिल गई थी। बहुत-से सहाबा (रज़ि॰) को प्यारे रसूल (सल्ल॰) ने इशारों-इशारों में जन्नत की ख़ुश सुनाई थी, लेकिन दस सहाबी (रज़ि॰) ऐसे हैं जिनको प्यारे रसूल (सल्ल॰) ने एक साथ ज की ख़ुशख़बरी सुनाई। इनको 'अशरए-मुबश्शरा' कहते हैं, यानी वे दस आदमी जि जन्नत की ख़ुशख़बरी दी गई। हर मुसलमान का जी चाहता है कि वह उन जैसा बन कोशिश करे, उनके पीछे चले और जन्नत की नेमतों से मालामाल हो।

उन दस जन्नतियों में से चार तो बहुत मशहूर हैं—

1. हज़रत अबू-बक्र सिद्दीक़ (रज़ि॰),
2. हज़रत उमर फ़ारूक़ (रज़ि॰),
3. हज़रत उसमान ग़नी (रज़ि॰),
4. हज़रत अली मुर्तज़ा (रज़ि॰)।

ये चारों बुज़ुर्ग प्यारे नबी (सल्ल॰) के बाद इसी तर्तीब से ख़लीफ़ा हुए। इ 'ख़ुलफ़ा-ए-राशिदीन' कहते हैं और इनकी हुकूमत को 'ख़िलाफ़ते-राशिदा' के मुबारक से याद करते हैं। इनके अलावा जो छह और सहाबी (रज़ि॰) हैं उनके नाम ये हैं—

5. हज़रत ज़ुबैर-बिन-अव्वाम (रज़ि॰),
6. हज़रत तल्हा-इब्ने-अब्दुल्लाह (र
7. हज़रत अब्दुर्रहमान-बिन-औफ़ (रज़ि॰),
8. हज़रत सअद-बिन-अबी-वक़्क़ास (र
9. हज़रत अबू-उबैदा-बिन-ज़र्राह (रज़ि॰),
10. हज़रत सईद-बिन-ज़ैद (रज़ि॰)।

हज़रत अबू-बक्र सिद्दीक़ (रज़ि॰)

उनका नाम अब्दुल्लाह-बिन-उसमान है। मर्दों में सबसे पहले वे ही प्यारे रसूल ल्ल॰) पर ईमान लाए। ईमान लाने से पहले भी उनकी ज़िन्दगी बड़ी साफ़-सुथरी थी। गन्दगी और गुनाह से दूर रहते थे। अबू-बक्र उनकी कुन्नियत थी और सिद्दीक़ लक़ब। केन वे अपनी कुन्नियत ही से मशहूर हैं। वे प्यारे रसूल (सल्ल॰) के ख़ुसुर थे। ी (सल्ल॰) के बाद ख़लीफ़ा मुन्तख़ब हुए, दो साल साढ़े तीन महीने तक उनकी लाफ़त रही। वे (रज़ि॰) बहुत ही बहादुर, बा-रोब और अल्लाह से डरनेवाले आदमी थे। जरत की रात प्यारे रसूल (सल्ल॰) के साथ थे। उनकी कोशिशों से बहुत-से लोग लमान हुए। जिहाद के मैदान में भी हमेशा आगे-आगे रहे। 21 जमादल-ऊला सन् 13 जरी को इस दुनिया से हमेशा के लिए जन्नत की तरफ़ कूच कर गए। अल्लाह उनसे राज़ी ।

हज़रत उमर फ़ारूक़ (रज़ि॰)

उनका नाम उमर-बिन-ख़त्ताब है, हज़रत अबू-बक्र (रज़ि॰) के बाद ख़लीफ़ा हुए। वे ड़े ही बहादुर, समझदार और बेहतरीन इन्तिज़ाम करनेवाले थे। हक़ और इनसाफ़ के लिए वक़्त नंगी तलवार बने रहते। इसी वजह से प्यारे रसूल (सल्ल॰) ने उनको 'फ़ारूक़' का क़ब दिया था, यानी हक़ को नाहक़ से बिल्कुल जुदा करनेवाला। अरब में उनकी दिलेरी र ताक़त की बड़ी चर्चा थी। लोग उनके नाम से काँपते थे।

हज़रत उमर फ़ारूक़ (रज़ि॰) भी प्यारे रसूल (सल्ल॰) के ख़ुसुर थे। उन्होंने बसरा और फ़ा दो मशहूर शहर आबाद किए। अपने ज़माने में बैतुलमाल क़ायम किए। बहुत-से हकमे और दफ़्तर खोले और बड़े इनसाफ़ और ख़ूबी के साथ हुकूमत का इन्तिज़ाम लाया। उन (रज़ि॰) के ज़माने में इस्लामी ख़लीफ़ा के लिए 'अमीरुल-मोमिनीन' का लक़ब स्तेमाल हुआ। सन् 24 हिजरी में एक पारसी गुलाम के हाथ से शहीद हुए। अल्लाह उनसे ज़ी हो!

. हज़रत उसमान ग़नी (रज़ि॰)

उनका नाम उसमान इब्ने-अफ़्फ़ान और लक़ब 'ज़ुन्नूरैन' है। दीन के साथ अल्लाह हज़रत उसमान (रज़ि॰) को दौलत भी ख़ूब दे रखी थी, मगर उन्होंने अपनी सारी दौलत

अल्लाह की राह में लुटा दी। वे प्यारे रसूल (सल्ल॰) के दामाद थे। मक्कावालों की से परेशान होकर पहले हब्शा को हिजरत फ़रमाई और फिर मदीना तशरीफ़ ले गए। उमर (रज़ि॰) के बाद ख़लीफ़ा हुए। क़ुरआन की तालीम आम करने की कोशिश में दि लगे रहते और बहुत ही सादा ज़िन्दगी गुज़ारते। ख़िलाफ़त का सातवाँ साल था कि ब ने जुमा के दिन अस्र के वक़्त उन्हें शहीद कर दिया। अल्लाह उनसे राज़ी हो!

4. हज़रत अली मुर्तज़ा (रज़ि॰)

उनका नाम अली इब्ने-अबी तालिब है, अबू-तुराब कुन्नियत और हैदर लक़ प्यारे रसूल (सल्ल॰) के चचाज़ाद (चचेरे) भाई और दामाद हैं। हिजरत की रात में प्यारे (सल्ल॰) हज़रत अली (रज़ि॰) को अपने बिस्तर पर लिटाकर मदीना के लिए रवाना हु आप हज़रत उसमान (रज़ि॰) के बाद ख़लीफ़ा हुए। इल्म और नेकी में बेमिसाल थे, बड़े ब और दिलेर थे। तमाम इस्लामी जंगों में शरीक हुए। ग़जवए-तबूक के मौक़े पर रसूल (स उनको ही घरवालों की देखभाल के लिए छोड़ गए थे। जब कुछ दुखी हुए तो प्यारे (सल्ल॰) ने फ़रमाया, "अली! तुम मेरे लिए ऐसे हो जैसे मूसा (अलैहि॰) के लिए हारून सन् 40 हिजरी में इब्ने-मुलजम के हाथ से शहीद हुए। अल्लाह उनसे राज़ी हो!

5. हज़रत ज़ुबैर-बिन-अव्वाम (रज़ि॰)

ज़ुबैर नाम और अबू-अब्दुल्लाह कुन्नियत थी। बाप का नाम अव्वाम और मं नाम सफ़िया था। हज़रत सफ़िया (रज़ि॰) प्यारे रसूल (सल्ल॰) की फूफी थीं। इस तरह ह ज़ुबैर (रज़ि॰) प्यारे रसूल (सल्ल॰) के फूफीज़ाद (फूफेरे) भाई थे। वे हज़रत अबू-बक्र (र के दामाद और हज़रत ख़दीजा (रज़ि॰) के सगे भतीजे थे।

इस्लाम क़बूल करना

प्यारे रसूल (सल्ल॰) को नबी हुए अभी थोड़े ही दिन हुए थे, सिर्फ़ छह-सात अ ही मुसलमान हुए थे। हज़रत ज़ुबैर (रज़ि॰) की उम्र सोलह साल की थी जब वे ईमान ल उस ज़माने में ईमान लाना कोई आसान बात न थी। हज़रत ज़ुबैर (रज़ि॰) को भी इस उम्री में तरह-तरह की तकलीफ़ें पहुँचाई गईं। और तो और खुद उनके सगे चाचा उन्हें म पीटते, चटाई में बाँध कर धुआँ पहुँचाते कि दम घुटने लगता। लेकिन हज़रत ज़ुबैर (र कहते, "अब इस्लाम तो मैं नहीं छोड़ सकता।"

जरत

हज़रत ज़ुबैर ने पहले तो हब्शा की तरफ़ हिजरत की, लेकिन बाद में जब मदीना की ज़रत का आम हुक्म हुआ तो वे भी मदीना चले गए। वहाँ अपनी बहादुरी के जौहर ख़ाते रहे।

रनामे

ग़ज़वए-बद्र में बड़ी दिलेरी के साथ लड़े, जिस तरफ़ मुड़ते सफ़ें-की-सफ़ें बिछा देते । ख़ुद फ़रमाते थे कि मेरे बदन का कोई हिस्सा ऐसा नहीं जिसपर ज़ख़्म न हों, लेकिन ड़ाई से कभी मुँह नहीं मोड़ा। उहुद की लड़ाई में जब मुशरिकीन ने प्यारे रसूल (सल्ल॰) : तीर बरसाए, उस वक़्त तीरों के वार अपने बदन पर रोकते रहे और प्यारे रसूल (सल्ल॰) । तीरों से बचाते रहे। ख़ैबर की जंग में जब यहूदियों का मशहूर सरदार 'मरहब' क़त्ल हुआ र उसके भाई 'यासिर' ने मैदान में आकर मुक़ाबले के लिए आवाज़ लगाई तो मुसलमानों । फ़ौज से हज़रत ज़ुबैर (रज़ि॰) मुक़ाबले के लिए निकले। यासिर बड़े डील-डौल का ट्टा-कट्टा नौजवान था। उसे देखकर हज़रत ज़ुबैर (रज़ि॰) की माँ हज़रत सफ़िया ज़रा झकीं, लेकिन प्यारे रसूल (सल्ल॰) ने फ़रमाया, "घबराओ नहीं, अल्लाह का सिपाही इसे काने लगा देगा।" ज़रा देर न लगी कि हज़रत ज़ुबैर (रज़ि॰) ने उसे जहन्नम रसीद कर या।

हुनैन, ताइफ़, तबूक सभी लड़ाइयों में हज़रत ज़ुबैर (रज़ि॰) शरीक रहे और बड़ी दिलेरी लड़े। हज़रत उमर (रज़ि॰) के ज़माने में यरमूक की लड़ाई में शरीक रहे और इस ज़ोर से मला किया कि दुश्मनों की फ़ौज को चीरते हुए उस पार निकल गए। वापसी पर रूमियों घोड़े की बाग पकड़ ली और सबने मिलकर सख़्त हमला किया। लेकिन उन्होंने अकेले बका मुक़ाबला किया और वापस आए। अल्लाह ने मुसलमानों को जिताया और शाम देश (मुसलमानों का क़ब्ज़ा हो गया। शाम फ़तह होने के बाद जब मिस्र पर हमला हुआ तो ज़रत उमर (रज़ि॰) ने दस हज़ार फ़ौज और चार अफ़सर भेजे और लिखा कि हर अफ़सर क हज़ार सवारों के बराबर है, हज़रत ज़ुबैर (रज़ि॰) भी उन्हीं में से थे। लगभग सात महीने क लड़ाई जारी रही, लेकिन कोई फ़ैसला न हो सका। एक दिन हज़रत ज़ुबैर (रज़ि॰) ने रमाया, "आज मैं इस्लाम पर क़ुरबान होता हूँ।" यह कहकर तलवार लिए हुए क़िले की वार पर चढ़ गए। कुछ और मुसलमान भी उनके पीछे चढ़े और सबने मिलकर एक साथ

नारे लगाए। बाहर की फ़ौज ने भी जोश में आकर नारे लगाए। दुश्मन यह सम: मुसलमान क़िले में घुस आए और घबराकर इधर-उधर भागने लगे। हज़रत ज़ुबैर (रि उसी भगदड़ में क़िले का दरवाज़ा खोल दिया और मुसलमान अन्दर घुस गए।

शहादत

हज़रत उसमान (रज़ि॰) की शहादत से मुल्क में बड़ी बेचैनी फैली हुई थी। अली (रज़ि॰) ने अम्न व अमान की बड़ी कोशिशें कीं, लेकिन फ़साद की आग दब न और मुसलमान आपस में बुरी तरह लड़ने लगे। इस जंग को 'जंगे-जमल' कहते हैं। अली (रज़ि॰) के मुक़ाबले में एक तरफ़ हज़रत ज़ुबैर (रज़ि॰) भी थे, लेकिन हज़रत (रज़ि॰) ने जब उन्हें प्यारे रसूल (सल्ल॰) का क़ौल याद दिलाया कि "एक दिन तुम अली (रज़ि॰) से लड़ोगे" तो वे लड़ाई से अलग होकर बसरा की तरफ़ चल दिए। अम्र-बिन-जरमूज़ नामी एक सिपाही उनके पीछे हो लिया। अम्र-बिन-जरमूज़ ने बा करके उन्हें वापस लाना चाहा, लेकिन वे किसी तरह तैयार न हुए। अम्र-बिन- साथ-साथ चलता रहा। रास्ते में ज़ुहर की नमाज़ का वक़्त आया। ज़ुबैर (रज़ि॰) स अपने रब के सामने सिर रखे हुए थे कि अम्र-बिन-जरमूज़ ने तलवार का भरपूर वार उनका सिर तन से जुदा होकर ख़ाक व ख़ून में तड़पने लगा। हिजरत के छत्तीसवें सा जमादल-अव्वल को उन्होंने इस दुनिया से जन्नत की तरफ़ कूच किया। रज़ियल्लाहु (अल्लाह उनसे राज़ी हो।)

इब्ने-जरमूज़ हज़रत ज़ुबैर (रज़ि॰) की ज़िरह और तलवार लिए ख़ुश-ख़ुश हज़रत (रज़ि॰) के पास पहुँचा। हज़रत अली (रज़ि॰) ने तलवार देखी तो दिल भर आया, आँ आँसू आ गए और अम्र से फ़रमाया, "जा इब्ने-सफ़िया (रज़ि॰) के क़ातिल, जहन्नम ते तक रही है।"

हज़रत ज़ुबैर (रज़ि॰) की ख़ूबियाँ

1. हज़रत ज़ुबैर (रज़ि॰) बहुत नेक, ख़ुदा-तर्स और सख़ी थे। हमेशा ईसार (त्य काम लेते। हज़रत उसमान (रज़ि॰) फ़रमाते हैं : क़सम है अल्लाह की, ज़ुबैर ज़्यादा नेक हैं, और जहाँ तक मैं जानता हूँ, प्यारे रसूल (सल्ल॰) को बहुत प्य
2. अल्लाह के डर से हर वक़्त काँपते रहते, आख़िरत का हाल सुनते तो लरज़

ज़रा-ज़रा-सी बात से नसीहत लेते।

उनकी अमानतदारी मशहूर थी। लोग मरते वक़्त अपने बाल-बच्चे और माल-दौलत उनके सुपुर्द कर जाते। वे बड़ी ख़ुशी से उनकी देखभाल और हिफ़ाज़त फ़रमाते।

उनको अल्लाह तआला ने माल-दौलत ख़ूब दे रखा था। लेकिन फिर भी बड़ी सादा ज़िन्दगी गुज़ारते। खाना बहुत सादा और मामूली खाते और ज़्यादा से ज़्यादा अल्लाह की राह में ख़र्च करते।

अपनी बीवी और बच्चों से आप बहुत मुहब्बत करते, ख़ासकर अपने बेटे अब्दुल्लाह को बहुत चाहते। उनके बच्चों से बहुत प्यार करते। अब्दुल्लाह ने भी अपने बाप का हक़ अदा कर दिया। चार साल तक हज के मौक़े पर बराबर एलान किया कि जिसका कोई क़र्ज़ हज़रत ज़ुबैर (रज़ि०) पर हो वह आकर ले जाए और जब एक-एक पैसा क़र्ज़ अदा कर चुके तब अपना हिस्सा लिया।

हज़रत तल्हा-बिन-उबैदुल्लाह (रज़ि०)

तल्हा नाम 'अबू-मुहम्मद' कुन्नियत और 'ख़ैर' लक़ब था। बाप का नाम उबैदुल्लाह । तल्हा (रज़ि०) भी उन सात-आठ लोगों में से हैं जो बिल्कुल शुरू में ईमान लाए थे। ारत की ग़र्ज़ से बसरा गए थे, वहाँ एक राहिब से हुज़ूर (सल्ल०) के रसूल होने की ख़बर ी। फिर हज़रत अबू-बक्र (रज़ि०) के समझाने-बुझाने से मुसलमान हो गए। मुसलमान होने दूसरे लोगों की तरह उन्हें भी बहुत दुख पहुँचाए गए। एक बार उनके भाई ने रस्सी में ाकर बहुत मारा, लेकिन उन्होंने फ़रमाया : अब मैं इस्लाम छोड़नेवाला नहीं हूँ।

ारत

प्यारे रसूल (सल्ल०) ने जब मदीना की तरफ़ हिजरत की, उस वक़्त तल्हा (रज़ि०) ारत की ग़र्ज़ से शाम (सीरिया) गए हुए थे। वापसी पर चन्द रोज़ के बाद उन्होंने भी ल्लाह और उसके दीन के लिए अपने प्यारे देश को छोड़कर मदीना की राह ली।

बद्र की लड़ाई के अलावा तमाम लड़ाइयों में उन्होंने शिरकत की और दिलेरी और नेसारी की मिसाल क़ायम कर दी।

'ख़ैर' का लक़ब

उहुद की लड़ाई में जब काफ़िरों ने प्यारे रसूल (सल्ल॰) को घेर लिया तो हज़रत (रज़ि॰) ने अपनी जान पर खेलकर आप (सल्ल॰) की हिफ़ाज़त की। वे तीरों की बारिश थे और तलवार के वार अपने जिस्म पर लेते थे। उन्होंने झपट-झपटकर काफ़िरों के ऐसे हमले किए कि उनके छक्के छूट गए। आख़िर एक काफ़िर (विधर्मी) ने हुज़ूर (पर तलवार से वार किया। तल्हा (रज़ि॰) ने उसे अपनी उँगलियों पर रोका, तीन उँगलि गईं तो बोले : वाह क्या ख़ूब! काफ़िरों का ज़ोर कम हुआ तो हुज़ूर (सल्ल॰) को अप पर बिठाकर एक पहाड़ी पर पहुँचाया। उनकी इस जाँनिसारी की मिसाल नहीं मिल स हज़रत अबू-बक्र सिद्दीक़ (रज़ि॰) ने उनके जिस्म पर सत्तर से ज़्यादा ज़ख़्म गिने थे जाँनिसारी के सिले में प्यारे रसूल (सल्ल॰) के दरबार से उन्हें 'ख़ैर' का लक़ब मिल तमाम सहाबा (रज़ि॰) उनकी बहादुरी और जाँनिसारी का लोहा मानते थे। हज़रत अ (रज़ि॰) फ़रमाते कि यह तल्हा (रज़ि॰) का ख़ास दिन था। हज़रत उमर (रज़ि॰) उनसे 'स उहुद' (उहुदवाले) कहते थे।

रसूल (सल्ल॰) से मुहब्बत

हज़रत तल्हा (रज़ि॰) को प्यारे रसूल (सल्ल॰) से बेहद मुहब्बत थी। आप (सल्ल मुहब्बत में कभी उन्होंने अपनी जान को जान न समझा। उहुद के मैदान में अपनी जा बाज़ी लगा दी और अपनी तीन उँगलियाँ कटवाकर हमेशा के लिए अपने जिस्म पर रसूल (सल्ल॰) की मुहब्बत का निशान लगा लिया। ग़ज़वए-तबूक में जब इस्लामी फ़ौ माल की ज़रूरत थी तो उन्होंने बहुत-सा माल लाकर प्यारे रसूल (सल्ल॰) की ख़िदमत किया और 'फ़ैयाज़' का लक़ब पाया।

प्यारे रसूल (सल्ल॰) से मुहब्बत और फ़ैयाज़ी उनकी दो बड़ी ख़ूबियाँ थीं। ए सात लाख दिरहम में अपनी एक जायदाद बेची और सब-की-सब रक़म ग़रीबों में बाँ हमेशा ग़रीबों का ख़याल रखते, लड़कियों और बेवा औरतों की शादी कराते, क़र्ज़दा क़र्ज़ा अपने पास से अदा कर देते और हर तरह अल्लाह की मख़लूक़ की मदद करते। आमदनी तक़रीबन एक हज़ार दिरहम रोज़ाना थी। लेकिन इसके बावजूद वे बहुत ज़िन्दगी गुज़ारते, न शानदार लिबास होता और न बढ़िया खाने, बस आम आदमि तरह रहते-बसते और खाते-पीते।

जंगे-जमल (जमल की लड़ाई) में हज़रत तल्हा (रज़ि॰) भी हज़रत ज़ुबैर (रज़ि॰) के थे, लेकिन जब हज़रत ज़ुबैर (रज़ि॰) ने लड़ाई से अलहदगी इख़्तियार की तो वे भी ई से अलग हो गए। मरवान नाम का एक सिपाही बहुत दिनों से उनकी तरफ़ से बिला ; दुश्मन बना बैठा था। उसने मौक़े का फ़ायदा उठाकर एक तीर मारा। तीर घुटने में और उसी के सदमे से वे शहीद हो गए। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन।

हज़रत अली (रज़ि॰) ने उनको इस हाल में देखा तो दिल भर आया और फ़रमाया, ग अच्छा होता कि मैं इस दर्दनाक हादसे से बीस बरस पहले ही मर गया होता।" यह ते-कहते उनकी आवाज़ भर्रा गई और अपने साथियों समेत फूट-फूटकर रोने लगे।

प्यारे रसूल (सल्ल॰) ने एक बार फ़रमाया, "जो शहीद को चलता-फिरता देखना चाहे, तल्हा-बिन-उबैदुल्लाह को देखे।" रज़ियल्लाहु अन्हु (अल्लाह उनसे राज़ी हो!)

हज़रत अब्दुर्रहमान-बिन-औफ़ (रज़ि॰)

वालिद का नाम औफ़ और माँ का नाम शिफ़ा था। पहले हज़रत अब्दुर्रहमान (रज़ि॰) नाम अब्दे-अम्र था। जब इस्लाम क़बूल किया तो हुज़ूर (सल्ल॰) ने आपका नाम र्रहमान रखा। वे भी उन्हीं लोगों में से हैं जो शुरू ज़माने में हज़रत अबू-बक्र (रज़ि॰) की ब़ीग़ से ईमान लाए। इस्लाम क़बूल करने से पहले भी वे हर बुराई से दूर रहते थे। बहुत और पाकीज़ा इनसान थे। इस्लाम लाने के बाद जब लोगों ने सताया तो मक्का छोड़कर ा चले गए। फिर वहाँ से वापस आ गए और जब सब मुसलमान मदीना जाने लगे तो ी उनके साथ मदीना चले गए। मदीना में जब मुहाजिरों और अनसार में भाईचारा हुआ सईद-बिन-रबीअ़ अनसारी (रज़ि॰) को हुज़ूर (सल्ल॰) ने उनका दीनी भाई बना दिया।

हज़रत अब्दुर्रहमान-बिन-औफ़ (रज़ि॰) तमाम इस्लामी लड़ाइयों में शरीक रहे और ल्लाह के दीन के लिए हमेशा जान हथेली पर लिए तैयार रहते। उहुद की लड़ाई में प्यारे ल (सल्ल॰) की हिफ़ाज़त करते हुए ऐसी बहादुरी से लड़े कि काफ़िरों (सत्य के इनकारियों) छक्के छुड़ा दिए। इसी लड़ाई में उनके जिस्म पर कोई बीस ज़ख़्म लगे थे। पाँव पर एक ा गहरा ज़ख़्म था कि आख़िर वक़्त तक लँगड़ा कर चलते थे। एक मशहूर लड़ाई नतुल-जन्दल' में फ़ौज के सरदार बनाए गए थे। उसमें प्यारे रसूल (सल्ल॰) ने ख़ुद अपने

हाथ से उनके सिर पर अमामा (पगड़ी) बाँधा, हाथ में अलम (झण्डा) दिया और ?
"बिस्मिल्लाह, रवाना हो जाओ। अल्लाह के नाफ़रमानों से लड़ो, मगर ख़बरदार, कि
धोखा न देना और न बच्चों पर हाथ उठाना। क़बीला कलीब को इस्लाम की दाव
जब वे क़बूल कर लें तो उनके सरदार असबअ की लड़की से शादी कर लेना।"
अपने साथियों समेत ईमान लाए। हज़रत अब्दुर्रहमान-बिन-औफ़ (रज़ि॰) ने असबअ़
की लड़की से निकाह किया और रुख़सत कराके मदीना ले आए।

प्यारे रसूल (सल्ल॰) के बाद वे हज़रत अबू-बक्र (रज़ि॰) और हज़रत उमर (र
मशवरे में हर वक़्त शरीक रहते और नेक-नीयती के साथ मशवरे देते। हज़रत
(रज़ि॰) की ख़िलाफ़त का मामला भी उनकी अक़्लमन्दी और समझदारी से आसानी
तय हुआ।

वफ़ात

हज़रत उसमान (रज़ि॰) की ख़िलाफ़त के ज़माने में, पचहत्तर साल की उम्र में
हिजरी को इस दुनिया से जन्नत के लिए रुख़्सत हुए। अल्लाह उनसे राज़ी हो!

ख़ास-ख़ास ख़ूबियाँ

1. हज़रत अब्दुर्रहमान (रज़ि॰) को प्यारे रसूल (सल्ल॰) से दिली मुहब्बत थी।
लड़ाई में हुज़ूर (सल्ल॰) की हिफ़ाज़त करते हुए बीस ज़ख़्म खाए और लँगड़े हो गए।
घर से खाना आया। कुछ दूसरे सहाबा (रज़ि॰) भी साथ थे। गोश्त-रोटी देखकर
और फ़रमाया कि हुज़ूर (सल्ल॰) और आप (सल्ल॰) के बाल-बच्चों को उम्र भर जौ
भी पेटभर नहीं मिली, और हम इस हाल में हैं। हुज़ूर (सल्ल॰) की याद अक्सर सत
जब याद आती देर तक रोते रहते।

2. अल्लाह के डर से हर वक़्त काँपते रहते। नमाज़ बड़े ख़ुशूअ और ख़ुज़ूअ़
थे। ज़ुहर की नमाज़ से पहले देर तक नफ़्ल पढ़ते। अक्सर रोज़े से रहते और कई
किए।

3. अल्लाह ने उनको दीन और दुनिया की दौलत से मालामाल किया था।
करते थे। अल्लाह ने ऐसी बरकत दी कि ख़ुद फ़रमाते, "पत्थर उठाता हूँ तो उ
सोना पाता हूँ।" इसके बावजूद वे कभी रुपये-पैसे की मुहब्बत में नहीं फँसे। उ

-बाड़ी भी करने लगे थे। उसमें भी अल्लाह ने ऐसी तरक़्क़ी दी कि एक-एक इलाक़े में ƒ खेतों को बीस-बीस ऊँटों से पानी दिया जाता।

4. हज़रत अब्दुर्रहमान (रज़ि॰) बहुत ही फ़ैयाज़ थे। जैसा अल्लाह ने माल दिया था ही दिल भी दिया था। एक-एक दिन में उन्होंने तीस-तीस ग़ुलाम आज़ाद किए। एक उनका तिजारती क़ाफ़िला मदीना वापस आया जिसमें सात सौ ऊँटों पर गेहूँ और आटा हुआ था। उन्होंने पूरा सामान अल्लाह की राह में ख़ैरात कर दिया। वफ़ात के वक़्त उन्होंने पचास हज़ार दीनार और एक हज़ार घोड़े अल्लाह की राह में वक़्फ़ किए। बद्र लड़ाई में शरीक होनेवाले जो सहाबा (रज़ि॰) ज़िन्दा थे उनके लिए चार-चार सौ दीनार वसीयत की। और प्यारे रसूल (सल्ल॰) की पाक बीवियों के लिए एक बाग़ की वसीयत जो चार लाख में बिका।

5. हज़रत अब्दुर्रहमान (रज़ि॰) बड़े मेहमाननवाज़ थे। बहुत-से लोग उनके दस्तरख़्वान खाना खाते थे, लेकिन खाना हमेशा मामूली और सादा होता।

हज़रत सअद-बिन-अबी-वक़्क़ास (रज़ि॰)

नाम सअद और अबू-इसहाक़ कुन्नियत थी। वालिद का नाम मालिक और अबू-वक़्क़ास यत थी। रिश्ते में प्यारे रसूल (सल्ल॰) के मामू होते थे। हज़रत अबू-बक्र (रज़ि॰) की ग़ से शुरू ज़माने में जो लोग मुसलमान हुए हज़रत सअद (रज़ि॰) भी उन्हीं में से हैं। स साल की उम्र थी जब हज़रत अबू-बक्र सिद्दीक़ (रज़ि॰) के साथ हुज़ूर की ख़िदमत में र हुए और ईमान की दौलत से मालामाल हुए।

हज़रत सअद (रज़ि॰) की माँ को जब इसका पता चला तो तीन दिन तक खाना-पीना छोड़ दिया। हज़रत सअद (रज़ि॰) माँ को बहुत मानते थे, लेकिन तौहीद के मुक़ाबले में माँ का कहना क्या मानते। दीन पर जमे रहे और अल्लाह तआला ने उनके क़दमों को त रखा। मक्का के लोगों ने दूसरे मुसलमानों की तरह उनपर भी ज़ुल्म के पहाड़ तोड़े। र अल्लाह और रसूल (सल्ल॰) की मुहब्बत में सब कुछ छोड़-छाड़कर मदीना रवाना हो और अपने भाई उत्बा के मकान पर जाकर ठहरे।

हज़रत सअद (रज़ि॰) तमाम लड़ाइयों में शरीक रहे। बद्र की लड़ाई में तो ऐसी री से लड़े कि दुश्मनों के होश उड़ गए। काफ़िरों के मशहूर सरदार सअद-बिन-आस सा वार किया कि वह वहीं ढेर हो गया। उसकी नामी तलवार प्यारे रसूल (सल्ल॰) ने

हज़रत सअद (रज़ि॰) ही को इनायत फ़रमाई।

उहुद के मैदान में भी उनके क़दम जमे रहे। प्यारे रसूल (सल्ल॰) तरकश में देते जाते और फ़रमाते : ऐ सअद! मेरे माँ-बाप तुझपर क़ुरबान, तीर चलाओ! हज़र (रज़ि॰) फ़रमाते हैं कि मैंने प्यारे रसूल (सल्ल॰) की ज़बान से किसी और के लिए यह कलिमा नहीं सुना।

प्यारे रसूल (सल्ल॰) के बाद हज़रत अबू-बक्र (रज़ि॰) और हज़रत उमर (र ज़माने में भी हज़रत सअद (रज़ि॰) बराबर लड़ाइयों में शरीक रहे और अल्लाह के को मौत के घाट उतारा। क़ादसिया की लड़ाई में आप (रज़ि॰) ही फ़ौज के सरदार अल्लाह ने आपको फ़तूह नसीब फ़रमाई। ईरानियों की फ़ौज का सरदार रुस्तम मा क़ादसिया के बाद बाबुल पर हमला किया और एक ही हमले में बाबुल फ़तूह ह ईरानियों ने दजला के तमाम पुल तोड़ दिए, मगर हज़रत सअद (रज़ि॰) ने फ़ौज द दिया कि अल्लाह के भरोसे पर दरिया में घोड़े डाल दो। मुसलमानों ने पार उतरक महलों पर क़ब्ज़ा किया और तमाम शाही सामान मदीना भेज दिया।

हज़रत उमर (रज़ि॰) के ज़माने में मदाइन के क़रीब हज़रत सअद (रज़ि॰) शहर बसाया और वहाँ एक बहुत बड़ी जामा मस्जिद बनवाई, जिसमें चालीस मुसलमान नमाज़ पढ़ सकते हैं। कूफ़ा शहर को ही उन्होंने फ़ौजी छावनी बना तक़रीबन एक लाख फ़ौज वहाँ रहती थी।

वफ़ात

अक़ीक़ के मक़ाम पर सत्तर साल की उम्र में सन् 55 हिजरी को हज़रत सअद ने वफ़ात पाई। मस्जिदे-नबवी में नमाज़े-जनाज़ा पढ़ाई गई और जन्नतुल-बक़ीअ़ किए गए।

इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन।

हज़रत सअद (रज़ि॰) बहुत ही सादा बुज़ुर्ग थे। दुनिया की शानो-शौकत से उ मतलब न था। बड़े-बड़े मुल्क उन्होंने फ़तूह किए, लेकिन वही ग़रीबों की-सी ज़िन्दगी रहे। अपनी बकरियाँ और ऊँट ख़ुद ही चराते। बड़ी तंगी से गुज़र-बसर होती। उनके लड़के ने कहा, "आप (रज़ि॰) जंगल-जंगल बकरियाँ चराते फ़िरें और लोग

ं।" हज़रत सअद (रज़ि०) बहुत नाराज़ हुए और उनके सीने पर हाथ मारकर फ़रमाया, अल्लाह ग़नी और दुनिया से बेनियाज़ बन्दों ही से प्यार करता है।" हज़रत सअद (रज़ि०) इल्मी मर्तबा भी बहुत ऊँचा था। हज़रत उमर फ़ारूक़ (रज़ि०) फ़रमाते, "जब हज़रत अद (रज़ि०) कोई हदीस बयान करें तो फिर किसी दूसरे से न पूछो।" अल्लाह उनको नी रहमतों में ढाँपे और हमें उनके पीछे चलाए। आमीन!

हज़रत अबू-उबैदा-बिन-जर्राह (रज़ि०)

आमिर नाम था, 'अबू-उबैदा' कुन्नियत और 'अमीनुल-उम्मत' लक़ब। दादा के नाम इब्नुल-जर्राह के नाम से मशहूर हुए। शुरू ज़माने ही में हज़रत अबू-बक्र (रज़ि०) के मझाने-बुझाने से मुसलमान हो गए थे। जब काफ़िरों ने बहुत सताया तो हुज़ूर (सल्ल०) की जाज़त से हब्शा चले गए। कुछ दिनों के बाद वापस आए और फिर सबके साथ मदीना हिजरत की।

हज़रत अबू-उबैदा तमाम लड़ाइयों में शरीक रहे। बद्र की लड़ाई में काफ़िरों के साथ नके बाप अब्दुल्लाह भी मुसलमानों से लड़ने आए और ताक-ताककर बेटे पर तीर चलाते । आख़िर अबू-उबैदा (रज़ि०) ने भी जोश में आकर तलवार का एक ऐसा हाथ मारा कि क ही हाथ में काम तमाम कर दिया।

उहुद की लड़ाई में ज़िरह की दो कड़ियाँ प्यारे रसूल (सल्ल०) के चेहरे में घुस गई थीं। ज़रत अबू-उबैदा (रज़ि०) ने उनको दाँत से पकड़कर खींचा जिसकी वजह से उनके दो दाँत हीद हो गए।

नजरानवालों की तालीम के लिए भी प्यारे नबी (सल्ल०) ने अबू-उबैदा (रज़ि०) को जा और नजरानवालों से कहा, "ये उम्मत के अमीन हैं, तुम्हें तालीम भी देंगे और तुम्हारे गड़ों को भी निबटाएँगे।" इस्लाम फैलाने की उन्होंने बहुत कोशिश की। अकसर क़बीलों आप (रज़ि०) की कोशिशों से इस्लाम फैला। अरब के बहुत-से क़बीले शाम (सीरिया) में बाद थे और ईसाई धर्म को मानते थे। वे लोग सिर्फ़ अबू-उबैदा (रज़ि०) की कोशिशों से स्लाम लाए।

प्यारे रसूल (सल्ल०) के बाद भी अकसर लड़ाइयों में हज़रत अबू-उबैदा (रज़ि०) शरीक है। हज़रत अबू-बक्र (रज़ि०) के ज़माने में शाम के मुल्क में जगह-जगह इस्लामी लश्कर भेजे ए और ख़ास-ख़ास सहाबी उनके सरदार बनाए गए, लेकिन हुक्म यह था कि जब सब

सरदार एक जगह इकट्ठे हों तो अबू-उबैदा (रज़ि॰) ही सबके सरदार होंगे।

हज़रत अम्र-बिन-आस (रज़ि॰) बहुत दिनों से बैतुल-मक्दिस के क़िले को घेरे हु हज़रत अबू-उबैदा जब अपने सारे इलाक़े में क़ब्ज़ा जमा चुके तो अम्र-बिन-आस से अ और हज़रत उमर (रज़ि॰) को बुलाने के लिए एक ख़त लिखा, वे भी आ गए। ईसाई र चुके थे, उन्होंने सुलह की दरख़्वास्त की और सुलहनामा तैयार किया गया और बग़ै भिड़े बैतुल-मक्दिस फ़तह हो गया।

जब मुल्क शाम पूरा फ़तह हो गया तो वहाँ का इन्तिज़ाम हज़रत अबू-उबैदा ही के सुपुर्द किया गया और उन्होंने इस ख़ूबी से इन्तिज़ाम किया कि बहुत-से ग़ैर- उनके बेहतरीन सुलूक से मुसलमान हो गए।

हज़रत अबू-उबैदा (रज़ि॰) बड़ी ही सादा ज़िन्दगी गुज़ारते थे। शाम (सीरिया) मे रहते लोगों में कुछ शान-शौकत की बातें आ गई थीं, लेकिन हज़रत अबू-उबैदा अपनी सरदारी के ज़माने में भी बड़ी ग़रीबी की ज़िन्दगी गुज़ारते थे और तंगी से गुज़ करते। घर में ज़रूरत का सामान भी बहुत ही कम था। एक बार हज़रत उमर (रज़ि॰) सौ दीनार और चार हज़ार दिरहम इनाम में भेजे तो उन्होंने उसी वक़्त सब फ़ौज दिए।

वफ़ात

जाबिया के मक़ाम पर हज़रत अबू-उबैदा (रज़ि॰) ताऊन की बीमारी का शिक और सन् 18 हिजरी में अट्ठावन साल की उम्र में इस दुनिया से जन्नत की तरफ़ हो गए। रज़ियल्लाहु अन्हु (अल्लाह उनसे राज़ी हो)!

10. हज़रत सईद-बिन-ज़ैद (रज़ि॰)

इनका नाम सईद और वालिद का नाम ज़ैद था। ज़ैद प्यारे रसूल (सल्ल॰) क होने से पहले ही दुनिया से जा चुके थे। लेकिन वे सच्चे दीन की तलाश में थे। बु पूजा को तो ज़ैद बहुत ही बुरा समझते थे। अरब में हर तरफ़ बुराइयाँ फैली हुई थीं, वे बुराइयों से बहुत दूर रहते और जहाँ तक होता दूसरों को भी बुराइयों से दूर र कोशिश करते। अरब में लोग अपनी लड़कियों को ज़िन्दा दफ़न कर देते थे, ज ज़ालिम बाप अपनी बेटी को दफ़न करना चाहता तो पहुँच जाते और उससे लेकर उस

ारवरिश फ़रमाते। जवान होने पर कहते : जी चाहे तो ले जाओ, वरना रहने दो।

न लाना

जब हुज़ूर (सल्ल॰) ने इस्लाम की तबलीग़ फ़रमाई तो बिल्कुल शुरू ही में हज़रत सईद ा ले आए। उनकी बीवी हज़रत फ़ातिमा (रज़ि॰) भी ईमान ले आईं। हज़रत फ़ातिमा ़ि॰) हज़रत उमर (रज़ि॰) की बहन थीं। यही वह क़ाबिले-रश्क ख़ातून हैं जिनकी हिम्मत, ाम की मज़बूती और सच्चे ईमान से मुतास्सिर होकर हज़रत उमर (रज़ि॰) ईमान लाए।

दूसरे मुसलमानों की तरह हज़रत सईद (रज़ि॰) भी सताए गए। जब ज़ुल्म-सितम से आ गए तो हुज़ूर (सल्ल॰) की इजाज़त से मदीना की तरफ़ हिजरत फ़रमाई।

यूँ तो हज़रत सईद (रज़ि॰) एक गोशानशीन बुज़ुर्ग थे। लोगों से बहुत कम मिलते-जुलते लेकिन जब अल्लाह की राह में जिहाद का मौक़ा आता तो किसी से पीछे न रहते। हर ई में जी-जान से शरीक होते और बड़ी बहादुरी से लड़ते। बद्र की लड़ाई के मौक़े पर ़ुज़ूर (सल्ल॰) ने उनको एक काम से भेज दिया था। जब वापस हुए तो बद्र के ग़ाज़ी ी के गीत गाते हुए वापस हो रहे थे। प्यारे रसूल (सल्ल॰) ने ग़नीमत के माल में उनका हेस्सा लगाया और फ़रमाया, "अल्लाह ने चाहा तो तुम्हें जिहाद का सवाब भी मिलेगा।"

हज़रत उमर (रज़ि॰) ने कई बार चाहा कि उनको कहीं का सरदार बना दें। लेकिन वे ी तरह तैयार न हुए। शाम की लड़ाई में हज़रत सईद (रज़ि॰) फ़ौज के अफ़सर थे। श्क़ और यरमूक की लड़ाई में भी आप (रज़ि॰) शरीक रहे और बड़ी हिम्मत और दिलेरी ाड़े। जब हज़रत अबू-उबैदा (रज़ि॰) ने दमिश्क़ फ़तह किया तो ज़बरदस्ती हज़रत सईद ा॰) को वहाँ का गवर्नर बना दिया। मगर जब हज़रत अबू-उबैदा (रज़ि॰) जिहाद के लिए ले तो उनसे रहा न गया और अबू-उबैदा (रज़ि॰) को लिखा कि मैं सरदारी के मुक़ाबले जेहाद को ज़्यादा पसन्द करता हूँ। इसलिए आप मेरी जगह पर किसी और को मुक़र्रर ा दें, मैं तो आपके पास आकर जिहाद में शरीक हूँगा।

ात

शाम (सीरिया) की फ़तह के बाद हज़रत सईद (रज़ि॰) ने गोशानशीनी और ख़ामोशी ज़न्दगी गुज़ारी। सन् 50 या 51 हिजरी को जुमा के दिन वे इस दुनिया से हमेशा के लिए ात हो गए।

इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन।

हज़रत सअद-बिन-अबी-वक़्क़ास (रज़ि॰) ने गुस्ल दिया। हज़रत अब्दुल्लाह-बि (रज़ि॰) ने जनाज़े की नमाज़ पढ़ाई और मदीना लाकर दफ़न किया। हज़रत सईद बहुत ही नेक बुज़ुर्ग थे। हर वक़्त अल्लाह की याद में लगे रहते, दुनिया के बखेड़ों मतलब न रखते। उनकी ज़िन्दगी आख़िरत की तैयारी का सच्चा नमूना थी। अल्लाह उनका पैरौ बनाए। आमीन!

शब्दार्थ और टिप्पणी

खुशनसीब	=	अच्छी क़िस्मतवाला,
बाग-डोर संभालना	=	ज़िम्मेदारी क़बूल करना
जहन्नम रसीद करना	=	जहन्नम में पहुँचा देना, दुश्मन को क़त्ल कर देना
छक्के छूटना	=	हिम्मत हारना
शहादत	=	अल्लाह की राह में जान देना
काम तमाम करना	=	मार डालना
पैरौ	=	पैरवी करनेवाला, अनुयायी

अभ्यास

1. जवाब दीजिए–

(1) अशरए-मुबश्शरा का क्या मतलब है?

(2) हज़रत उमर (रज़ि॰) को 'फ़ारूक़' का लक़ब किसने और क्यों दिया?

(3) हिजरत की रात में प्यारे रसूल (सल्ल॰) किसको अपने बिस्तर पर लिटाकर मदीना के लिए हुए थे?

(4) हज़रत तल्हा (रज़ि॰) को आप (सल्ल॰) ने 'ख़ैर' का लक़ब क्यों दिया था?

(5) किस जंग के मौक़े पर किस सहाबी (रज़ि॰) के सर पर प्यारे नबी (सल्ल॰) ने ख़ुद अमामा और उनके हाथ में झण्डा दिया?

(6) क़ादसिया की जंग किन लोगों से लड़ी गई और उनका सरदार कौन था?

(7) कूफ़ा शहर किसने आबाद किया?

(8) किस जंग में, किस सहाबी (रज़ि॰) ने अपने काफ़िर बाप का काम तमाम कर दिया?

(9) किस लड़ाई में ज़िरह की दो कड़ियाँ प्यारे रसूल (सल्ल॰) के चेहरे में घुस गई थीं और उन्हे सहाबी ने निकाला था?

(10) हज़रत उमर (रज़ि॰) ने किस ख़ातून की हिम्मत और सच्चे ईमान से मुतास्सिर होकर इस्लाम क़बूल किया और वे रिश्ते में उनकी कौन थीं।

(11) वे दो सहाबी (रज़ि॰) जो बद्र की लड़ाई में शरीक न हो सके थे, उनके नाम लिखिए।

नीचे लिखे सहाबा किराम (रज़ि॰) का प्यारे रसूल (सल्ल॰) से क्या रिश्ता है?

हज़रत अबू-बक्र (रज़ि॰)

हज़रत उमर (रज़ि॰)

हज़रत उसमान (रज़ि॰)

हज़रत अली (रज़ि॰)

हज़रत ज़ुबैर (रज़ि॰)

नीचे कई सहाबियों के नाम लिखे हुए हैं। इनमें से अशरए-मुबश्शरा (दस जन्नतियों) के नाम चुनिए–

(1) हज़रत अबू-बक्र सिद्दीक़ (रज़ि॰), (2) हज़रत जरीर-बिन-अब्दुल्लाह (रज़ि॰), (3) हज़रत मआज़-बिन-जबल (रज़ि॰), (4) हज़रत उमर फ़ारूक़ (रज़ि॰), (5) हज़रत उसमान ग़नी (रज़ि॰), (6) हज़रत अबू-हुरैरा (रज़ि॰), (7) हज़रत अली मुर्तज़ा (रज़ि॰), (8) हज़रत ज़ुबैर-बिन-अवाम (रज़ि॰), (9) हज़रत तल्हा-बिन-अब्दुल्लाह (रज़ि॰), (10) हज़रत सअद-बिन-अबी वक़्क़ास (रज़ि॰), (11) हज़रत मुग़ीरा-बिन-शोबा (रज़ि॰), (12) हज़रत अब्दुर्रहमान-बिन-औफ़ (रज़ि॰), (13) हज़रत अबू-उबैदा-बिन-जर्राह (रज़ि॰), (14) हज़रत सईद-बिन-ज़ैद (रज़ि॰)।

. ख़ाली ख़ानों को भरिए–

नाम	कुन्नियत	लक़ब	वफ़ात/शहादत (कब और किसके हाथ से हुई)
		ज़ुन्नूरैन	
	अबू-तुराब		
			12 जमादल-ऊला सन् 13 हिजरी को वफ़ात पाई
	ख़ैर		
आमिर			

. जवाब दीजिए–

(1) "तुम मेरे लिए ऐसे हो, जैसे मूसा के लिए हारून थे।"

(क) किसने कहा?

(ख) किससे कहा?

(ग) किस मौक़े पर कहा?

नबियों के हालात

नबी कहाँ-कहाँ और किस-किस क़ौम में आए, इसका सही इल्म तो अल्लाह ः है। हम तो बस इतना जानते हैं कि अल्लाह तआला ने इनसानों की हिदायत के लि जगह नबी भेजे और उन सबने यही कहा कि अल्लाह तआला की बन्दगी करो, इस्ला चलो और अल्लाह की नाफ़रमानी और शिर्क से दूर रहो। नबियों के हालात पढ़ने से ग़ यह है कि हममें भी उनके रास्ते पर चलने और नेक काम करने का जज़्बा पैदा होर अब हम कुछ नबियों के हालात लिखते हैं।

1. हज़रत हूद (अलैहिस्सलाम)

क़ौमे-आद

हज़रत नूह (अलैहिस्सलाम) की क़ौम के बाद एक दूसरी क़ौम ने अल्लाह की में फ़ितना-फ़साद फैलाया। उसका नाम 'आद' था। अल्लाह तआला ने उन्हें बड़ी और कुव्वत दी थी। वे बड़े डील-डौलवाले ताक़तवर लोग थे। बड़े-बड़े बाग़, ऊँची कोठियाँ, माल-दौलत, कौन-सी चीज़ थी जो अल्लाह ने उन्हें नहीं दी थी। लेकिन यः कुछ पाकर भी अल्लाह का शुक्र करने के बजाय घमंड करने लगे और अपने को बड़ी समझने लगे। बुतों की पूजा, अल्लाह की नाफ़रमानी, ज़ुल्म-ज़्यादती, तरह-तरह की बु उनमें पैदा हो गईं और उन्होंने अल्लाह की ज़मीन को फ़ितना-फ़साद से भर दिया।

आख़िर अल्लाह तआला को उनकी हालत पर रहम आया और उनकी हिदाय लिए हज़रत हूद (अलैहि॰) को नबी बनाकर भेजा कि वे उनको बुराइयों से बचाएँ इस्लाम की सीधी-सच्ची राह दिखाएँ। हज़रत हूद (अलैहि॰) बहुत ही नेक और सच्चे दिल से उनकी भलाई चाहते थे। वे थे भी तो उन्हीं की क़ौम में से, और फिर अल्ल पैग़म्बर भी थे। हज़रत हूद (अलैहि॰) ने उन्हें बड़े प्यार और मुहब्बत से समझाया।

हज़रत हूद (अलैहिस्सलाम) की नसीहत

भाइयो! अपने जिस्म की ताक़त, डील-डौल और हुकूमत पर घमंड न करो। अ

आला का शुक्र अदा करो कि उसने तुम्हें यह सब कुछ बख़्शा। नूह (अलैहि॰) की क़ौम के द तुम्हें ज़मीन पर हुकूमत दी, ख़ुशहाली दी और हर तरह का सुख और आराम दिया। ल्लाह को न भूलो। अपने हाथों के बनाए हुए बुतों को न पूजो। वे न तुम्हें सुख पहुँचा कते हैं और न दुख। ज़िन्दगी और मौत, नफ़ा और नुक़सान सब कुछ अल्लाह ही के हाथ है। हालाँकि तुम बहुत दिनों से अल्लाह की नाफ़रमानी कर रहे हो, लेकिन अब भी तुम बा कर लो और अपनी हरकतों से रुक जाओ तो अल्लाह तुम्हें माफ़ कर देगा। उसका हा मानो, पाकीज़ा ज़िन्दगी गुज़ारो, वह तुम्हें दिन-दूनी रात चौगुनी तरक़्क़ी देगा और तुम्हें ज़्ज़त बख़्शेगा। देखो, मैं तुमसे कोई बदला नहीं चाहता, सिर्फ़ तुम्हारे ही भले की कहता हूँ। े रास्ते पर चलो, दीन-दुनिया में इज़्ज़त पाओगे।

ौम का सुलूक

मगर क़ौम ने एक न मानी, सुनी-अनसुनी कर दी। क़ौम के लोग बराबर ज़ुल्म करते हे, बुतों को पूजते रहे, बल्कि उलटा हज़रत हूद (अलैहि॰) ही को झुठलाने लगे। उन्हें सताते, ख पहुँचाते और कहते कि अल्लाह तआला ने कोई नबी नहीं भेजा है और न कोई पैग़ाम जा है। तुम अपने मन से गढ़कर यह सब कुछ कह रहे हो। हज़रत हूद (अलैहि॰) को, ोबा-तौबा! बेवक़ूफ़ और पागल कहते, मज़ाक़ उड़ाते और तरह-तरह से तकलीफ़ें पहुँचाते। ज़रत हूद (अलैहि॰) उनके ज़ुल्मों को सहते, सब्र करते और कहते, "भाइयो! न मैं बेवक़ूफ़ और न पागल। मैं तो अल्लाह का भेजा हुआ नबी हूँ, मैं तुम्हें फिर बताता हूँ, कान खोलकर ुन लो, अगर तुम इन हरकतों से बाज़ न आए तो अल्लाह तआला तुम्हें सख़्त सज़ा देगा। ासमान से अज़ाब भेजेगा और फिर आख़िरत में दुनिया से भी बड़ा अज़ाब झेलना होगा।"

आद गुस्से से और भड़क उठे, अपनी नाफ़रमानियों में और ढीठ हो गए, नबी को ौर ज़्यादा सताने लगे, अल्लाह तआला के पैग़ाम का और ज़्यादा मज़ाक़ उड़ाने लगे और हने लगे, "हूद! कहाँ है अज़ाब? क्यों नहीं ले आते?" हज़रत हूद (अलैहि॰) ने कहा, 'अच्छा तो फिर अज़ाब का इन्तिज़ार करो।"

अज़ाब की आँधी

आख़िरकार वह दिन आ पहुँचा, जिसका वे इन्तिज़ार कर रहे थे। उन्होंने देखा कि एक गहरा बादल उनके मैदान की तरफ़ उमड़ा चला आ रहा है। वे ख़ुश हुए कि बारिश होगी, मगर वह तो अल्लाह के अज़ाब की आँधी थी। सात रातें और आठ दिन बराबर वह

आँधी चलती रही और उनकी बस्तियाँ उलट गईं। उनके लाशे ज़मीन पर ऐसे पड़े थ
किसी तूफ़ानी आँधी से खजूर के तने उखड़े पड़े हों, और आद का सारा घमंड और
ख़ाक में मिल गया। वे कहते कि हमसे ज़्यादा ताक़तवर कौन होगा? लेकिन अज़ा
आँधी ने उन्हें ऐसा तबाह किया कि खण्डहरों के सिवा और कुछ बाक़ी न रहा।
अल्लाह तआला बड़ी ताक़तवाला है। जो लोग अल्लाह के नबी पर ईमान लाए और उ
के हुक्मों पर चले अल्लाह तआला ने उन्हें हज़रत हूद (अलैहि॰) के साथ अज़ाब की
से बचा लिया।

2. हज़रत सालेह (अलैहिस्सलाम)

क़ौमे-समूद

आद के बाद एक और क़ौम उभरी, उसका नाम 'समूद' था। वे लोग शाम (सी
और हिजाज़ के बीच हिज्र के इलाक़े में रहते थे। इसलिए उनको असहाबुल-हिज्र (हिज्र
भी कहते हैं। वे बड़ी शान-शौकत के लोग थे। आद के बाद अल्लाह तआला ने उन्हें हु
अता की। पत्थरों को काट-काटकर बड़ी शानदार कोठियाँ बनाते और मैदानों में भी ब
आलीशान महल तामीर करते। खजूरों और अँगूरों के बाग़, खेत और चश्मे, मानो दुनि
हर नेमत अल्लाह ने उन्हें दी। लेकिन वे दुनिया की नेमतें पाकर घमंडी बन गए। उ
को भूल गए, पत्थरों को बुत बनाकर पूजने लगे और यह समझने लगे कि बस अब तो
हमेशा यहीं रहना है, कभी खुदा को मुँह नहीं दिखाना है। दौलत के नशे ने उन्हें अन्ध
दिया और तरह-तरह की बुराइयाँ उनमें पैदा हो गईं।

अल्लाह तआला ने उनकी हिदायत के लिए उन्हीं में से हज़रत सालेह (अलैहि
चुन लिया। उनपर अपनी वह्य उतारी और हुक्म दिया कि वे उन्हें नसीहत करें। उ
तआला के एहसान याद दिलाएँ और गुनाहों के बुरे अंजाम से डराएँ। हज़रत
(अलैहि॰) वाक़ई सालेह (नेक) थे। उनके दिल में अपनी क़ौम का बड़ा दर्द था। तरह
से समझाते कि किसी तरीक़े से अल्लाह की बात उनके दिल में उतर जाए।

सालेह (अलैहिस्सलाम) का समझाना

हज़रत सालेह (अलैहि॰) ने फ़रमाया, "भाइयो! इन बेजान बुतों को पूजना छो
इनमें क्या रखा है? न ये नफ़ा पहुँचा सकते हैं, न नुक़सान। सिर्फ़ अल्लाह की बन्दगी
अल्लाह के सिवा कोई बन्दगी के लायक़ नहीं। अल्लाह से डरो और मेरा कहा मानो

ेतियाँ, ये खजूरें, ये बाग़, ये चश्मे हमेशा रहेंगे, और क्या तुम इन शानदार महलों में ्ा रहोगे? देखो! नाफ़रमानों का कहा न मानो और ज़मीन में फ़साद न फैलाओ। जिस ाह ने ज़मीन पर तुम्हें बसाया है उससे अपने गुनाहों की माफ़ी माँगो, तौबा करो और नी हरकतों से रुक जाओ।"

्द का जवाब

समूद ने कहा, "ऐ सालेह! हम तो तुमसे बड़ी उम्मीदें लगाए बैठे थे। यह तुम कैसी ं करने लगे? क्या हम उन बुतों को पूजना छोड़ दें जिनको हमारे बाप-दादा पूजते चले ए हैं? तुम्हारी यह 'एक अल्लाह' वाली बात हमारी समझ में तो नहीं आती, और भला लाह को नबी बनाने की क्या ज़रूरत थी। यह सब तुम अपने जी से कहते हो। अच्छा, र तुम वाक़ई पैग़म्बर हो तो फिर कोई निशानी दिखाओ।"

ल्लाह की ऊँटनी

सालेह (अलैहि॰) ने फ़रमाया, "देखो, यह ऊँटनी अल्लाह की एक निशानी है। पानी बारी एक दिन इसकी हैं और एक दिन तुम्हारी। इसमें फ़र्क़ न आए, और अगर तुमने ऊँटनी को दुख पहुँचाया, तो तुम तबाह हो जाओगे।"

बदमाश

शहर में नौ बदमाशों की एक टोली थी, जो शहर में फ़साद फैलाती और लोगों को काती। उन लोगों ने एक साज़िश की कि चुपके से रात में सालेह और उसके घरवालों ख़त्म कर दिया जाए, और फिर कह देंगे कि हम तो थे ही नहीं। उनमें से एक बदबख़्त ऊँटनी की कूचें काट दीं। सबने उसकी मदद की और ऊँटनी हलाक हो गई। वे ढीठ रत सालेह (अलैहि॰) से बोले, "कहाँ है तुम्हारा वह अज़ाब? ऊँटनी तो यह मरी पड़ी है।" रत सालेह (अलैहि॰) को बहुत ग़म हुआ।

फ़नाक कड़क

फ़रमाया, "बदबख़्तो! अज़ाब आने ही वाला है, बस तीन दिन इन्तिज़ार करो और ब रंग-रलियाँ मना लो।" तीन दिन के बाद एक ख़ौफ़नाक कड़क हुई और जो जहाँ था

वहीं ढेर हो गया। उनकी धन-दौलत और घमंड कुछ काम न आया। इस अज़ाब वे लोग बचे जो ईमान लाकर सालेह (अलैहि॰) के साथ हो गए। बाक़ी सब हलाक

3. हज़रत यूनुस (अलैहिस्सलाम)

नैनवावाले

नैनवा इराक़ का एक मशहूर शहर था। इसकी आबादी एक लाख से कुछ थी। नैनवावालों ने एक अल्लाह की बन्दगी छोड़कर बहुत-से माबूद बना लिए अल्लाह की नाफ़रमानी करने लगे थे। अल्लाह तआला ने उनकी हिदायत के लिए यूनुस (अलैहि॰) को नबी बनाकर भेजा। हज़रत यूनुस (अलैहि॰) एक मुद्दत तक उन्हें करते रहे और एक अल्लाह की इबादत पर उभारते रहे। लेकिन वे लोग टस से मस और पिछली क़ौमों की तरह पैग़म्बर और उसकी दावत का मज़ाक़ उड़ाते रहे। हज़र (अलैहि॰) को बहुत बुरा लगा। उन्होंने अल्लाह से बद्दुआ की और नाराज़ होकर नै निकल खड़े हुए।

भागा हुआ गुलाम

दरिया-ए-फ़ुरात के किनारे पहुँचे तो एक कश्ती मुसाफ़िरों से भरी चलने क खड़ी थी। वे भी उसमें बैठ गए। कश्ती जब बीच दरिया में पहुँची तो डगमगाने कश्तीवाले चीख़ने लगे कि इस कश्ती में क्या कोई ग़ुलाम है, जो अपने मालिक हुआ है? हज़रत यूनुस (अलैहि॰) दिल ही दिल में सोचने लगे, "यह मैं ही हूँ, मैं अल वह्य का इन्तिज़ार किए बग़ैर नैनवा से भाग आया हूँ। हो न हो यह सब मेरी आ के लिए है।" फ़रमाने लगे, "भाइयो! भागा हुआ ग़ुलाम मैं ही हूँ।" लोगों को य आया तो उन्होंने क़ुरआ डाला। उसमें हज़रत यूनुस (अलैहि॰) ही का नाम निकला। हज़रत यूनुस (अलैहि॰) दरिया में फेंक दिए गए।

मछली का निगलना

अल्लाह के हुक्म से एक मछली ने फ़ौरन हज़रत यूनुस (अलैहि॰) को निगल वे बहुत शर्मिन्दा हुए और अल्लाह तआला से अपने क़ुसूर की माफ़ी माँगने लगे। अल्लाह से तौबा न करते तो इसी तरह मछली के पेट में रहते। लेकिन वे नबी थे

की आँखें खुल गईं। अपनी भूल पर शरमाए और अपने अल्लाह से दुआ की—

لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ سُبْحٰنَکَ اِنِّیْ کُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِیْنَ۔

ला इला-ह इल्ला अन-त सुब्हान-क इन्नी कुन्तु-मिनज़्ज़ालिमीन।

"ऐ अल्लाह! तेरे सिवा कोई माबूद नहीं। मैं तेरी पाकी बयान करता हूँ। बेशक मैंने अपने ऊपर ज़ुल्म किया।"

दार पेड़

आख़िर अल्लाह ने हज़रत यूनुस (अलैहि॰) की सुन ली और मछली ने एक मैदान में अपने पेट से उगल दिया। यूनुस (अलैहि॰) मछली के पेट में रहने की वजह से बहुत ज़ोर और बेहाल हो गए थे। अल्लाह तआला ने अपनी मेहरबानी से एक बेलदार पेड़ दिया और वे उसके साए में रहने लगे।

वावाले मुसलमान हो गए

इधर नैनवावालों को हज़रत यूनुस (अलैहि॰) के चले जाने का बहुत दुख हुआ। फिर हज़रत यूनुस (अलैहि॰) ने बद्दुआ भी की थी, इसलिए उन्होंने अज़ाब की कुछ ानियाँ भी देखीं। वे डरे, तौबा की, गुनाहों से रुक गए और यूनुस (अलैहि॰) को तलाश लगे। हज़रत यूनुस (अलैहि॰) नैनवा वापस आए। उनकी क़ौम के लोग बहुत ख़ुश हुए। मुसलमान हो गए। अल्लाह और उसके नबी के कहने पर चलने लगे और दीन-दुनिया कामयाबी पाई। हज़रत यूनुस (अलैहि॰) बड़े ही बुज़ुर्ग नबी थे। प्यारे नबी (सल्ल॰) ने की बड़ी तारीफ़ फ़रमाई है। दुरूद और सलाम हो हज़रत यूनुस (अलैहि॰) पर और हमारे (सल्ल॰) पर भी।

शब्दार्थ और टिप्पणी

दिन-दूनी रात चौगुनी तरक़्क़ी देना	=	काम में बहुत तरक़्क़ी देना।
कूचें काटना	=	पैर की मोटी नस काटना एड़ी का पिछला हिस्सा काटना।
टस से मस न होना	=	असर न लेना।

अभ्यास

1. जवाब दीजिए–

(1) अल्लाह तआला ने नबियों को किस मक़सद के लिए भेजा?

(2) नबियों के हालात पढ़ने से क्या फ़ायदा है?

(3) हज़रत हूद (अलैहि॰) की नसीहत का उनकी क़ौम पर क्या असर हुआ?

(4) क़ौमे-आद को उनकी नाफ़रमानियों का दुनिया में क्या बदला मिला?

(5) क़ौमे-समूद अपने किस रवैये की बिना पर अज़ाब से दो-चार हुई?

(6) हज़रत यूनुस (अलैहि॰) नैनवा के लोगों से ख़फ़ा होकर क्यों निकल खड़े हुए थे?

(7) हज़रत यूनुस (अलैहि॰) के हालात पढ़कर हमें क्या सबक़ मिलता है?

2. नीचे की इबारतों को ग़ौर से पढ़कर सवालों के जवाब दीजिए–

(1) जब कश्ती बीच दरिया में पहुँचकर डगमगाने लगी तो–

(क) कश्तीवाले ने क्या कहा?

(ख) हज़रत यूनुस (अलैहि॰) दिल ही दिल में क्या सोचने लगे?

(2) जब अल्लाह के हुक्म से एक मछली ने हज़रत यूनुस (अलैहि॰) को निगल लिया तो–

(क) हज़रत यूनुस (अलैहि॰) क्यों शर्मिन्दा हुए?

(ख) अपनी भूल पर शरमाकर उन्होंने अल्लाह से क्या दुआ माँगी?

3. नीचे दी गई मालूमात सही (√) हैं या ग़लत (×)? निशानदेही कीजिए–

(क) हज़रत सालेह (अलैहि॰) की क़ौम का नाम लूत था। ☐

(ख) हज़रत सालेह (अलैहि॰) ने फ़रमाया : देखो, यह ऊँट अल्लाह की निशानी है। ☐

(ग) एक बदबख़्त ने ऊँटनी की कूचें काट दीं। ☐

(घ) हज़रत यूनुस (अलैहि॰) नैनवा से निकलकर नील के किनारे पहुँचे। ☐

(ङ) अल्लाह तआला ने क़ौमे-समूद पर आग के गोले बरसाकर उन्हें ढेर कर दिया। ☐

(च) नैनवावालों की हिदायत के लिए अल्लाह तआला ने हज़रत यूनुस (अलैहि॰) को नबी बनाकर भेजा। ☐

3. ख़ाली जगहों को भरिए–

(क) हज़रत हूद (अलैहि॰) की क़ौम का नाम...था।

(ख) क़ौमे-आद की हिदायत के लिए अल्लाह तआला ने..........................को नबी बनाकर

(ग) क़ौमे-समूद को...भी कहते हैं।

(घ) नैनवा...का एक मशहूर शहर था।

(ङ) हज़रत यूनुस (अलैहि॰)........................वापस आए। उनकी क़ौम के लोग बहुत ख़ुश

23

क़ुरआन की कुछ सूरतें

नमाज़ में सूरा फ़ातिहा के बाद कोई सूरा पढ़ते हैं। नीचे तीन बहुत छोटी सूरतें और नका तर्जमा लिखा जाता है। सूरतें भी याद कीजिए और उनका तर्जमा भी, ताकि क़ुरआन क की ये सूरतें पढ़ते हुए आप समझते भी जाएँ और नमाज़ में ज़्यादा से ज़्यादा जी लगे।

सूरा इख़्लास

قُلْ هُوَاللّٰهُ اَحَدٌ○اَللّٰهُ الصَّمَدُ○لَمْ يَلِدْ○
وَلَمْ يُوْلَدْ○وَلَمْ يكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ○

कुल हुवल्लाहु अहद, अल्लाहुस्समद, लम यलिद वलम यूलद,
वलम यकुल्लहु कुफ़ुवन अहद।

कुल قُلْ कह दीजिए	**हु-व** هُوَ वह
अहद اَحَدٌ अकेला, यकता, जिसकी तरह कोई दूसरा न हो।	**अस्समद** اَلصَّمَدُ बेनियाज़, जो किसी का मुहताज न हो और सब उसके मुहताज हों।
लम यलिद لَمْ يَلِدْ उसने नहीं जना, उसकी कोई औलाद नहीं	**व लम यूलद** وَلَمْ يُوْلَدْ वह नहीं जना गया, वह किसी की औलाद नहीं।
वलम यकुन وَلَمْ يَكُنْ और नहीं है	**लहू** لَهٗ उसके लिए, उसका
कुफ़ुवन كُفُوًا बराबरी वाला	

तर्जमा :

"(ऐ रसूल!) कह दीजिए कि वह अल्लाह अकेला है। उस जैसा कोई नहीं। अल्लाह बेनियाज़ है। वह किसी का मुहताज नहीं। सब उसी के मुहताज हैं। उसकी कोई औलाद नहीं और न वह किसी की औलाद है, और न कोई उसकी बराबरी करनेवाला है।"

सूरा अस्र

وَالْعَصْرِ ۝ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَفِیْ خُسْرٍ ۝ اِلَّا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا
الصّٰلِحٰتِ وَتَوَاصَوْا بِالْحَقِّ ۝ وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ ۝

वल अस्र, इन्नल-इनूसा-न लफ़ी खुस्र, इल्लल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति, व तवासौ बिल हक़्क़ि व तवासौ बिस्सब्र।

वल अ़स्र وَالْعَصْرِ क़सम है ज़माने की, ज़माना गवाह है।	**फ़ी** فِیْ अन्दर, में
खुस्र خُسْرٍ नुक़सान, घाटा	**इल्ला** اِلَّا मगर, सिवाय
अल्लज़ी-न اَلَّذِیْنَ वे लोग जो	**आमनू** اٰمَنُوْا वे ईमान लाए
अ़मिलू عَمِلُوْا काम किए	**सालिहात** اَلصّٰلِحٰتِ नेक काम
तवासौ تَوَاصَوْا एक-दूसरे को नसीहत की	**हक़्क़** حَقِّ सच्चाई
सब्र صَبْرٍ हक़ पर जमना और उस राह की मुश्किलों को बर्दाश्त करना।	

मा–

"क़सम है ज़माने की (यानी ज़माना गवाह है) कि बेशक इनसान ज़रूर घाटे में हैं, सिवाय उन लोगों के जो ईमान ले आए और उन्होंने नेक काम किए, और एक-दूसरे को सच्चाई पर चलने और सच्चाई की राह पर जमने और मुश्किलें बर्दाश्त करने की नसीहत की।"

सूरा कौसर

اِنَّآ اَعْطَيْنٰكَ الْكَوْثَرَ ۝ فَصَلِّ لِرَبِّكَ وَانْحَرْ ۝ اِنَّ شَانِئَكَ هُوَ الْاَبْتَرُ ۝

इन्ना आतैना कल कौसर, फ़सल्लि लि-रब्बि-क वन हर,

इन्-न शानि-अ-क हुवल अबतर।

इन्ना-आतैना اِنَّآ اَعْطَيْنَا बेशक हमने अता कीं	**क** كَ आपको
अल-कौसर اَلْكَوْثَرَ बहुत ज़्यादा भलाइयाँ	**फ़सल्लि** فَصَلِّ तो नमाज़ पढ़िए
लिरब्बिक لِرَبِّكَ अपने रब के लिए	**वन हर** وَانْحَرْ और क़ुरबानी कीजिए
शानिअ-क شَانِئَكَ आपकी बुराई चाहनेवाला दुश्मन	**अबतर** اَلْاَبْتَرُ ना मुराद, तबाह व बर्बाद

मा :

"(ऐ नबी) बेशक हमने आपको बहुत ही ज़्यादा भलाइयाँ दीं। तो अपने रब के लिए नमाज़ पढ़िए और क़ुरबानी कीजिए। बेशक आपकी बुराई चाहनेवाला दुश्मन ना-मुराद और तबाह व बर्बाद है।"

अभ्यास

(क) जवाब दीजिए–

(1) क़ुरआन की सूरतों को तर्जमे के साथ याद करने का क्या फ़ायदा है?

(2) हम सब किसके मुहताज हैं?

(3) कौन लोग घाटे में नहीं हैं?

(4) इन्ना-आतैना कल-कौसर..., इस सूरा का नाम

(ख) नीचे दिए गए अल्फ़ाज़ के मायने लिखिए–

(1) अहद ....

(2) अस्समद ....

(3) अस्सब्र ....

(4) अस्सालिहात ....

(5) अल्-अबतर ....

(ग) ख़ाली जगह भरिए और तर्जमा भी लिखिए–

क़ुलहूवल्लाहु..........................,..............................अस्समद, लमयलिद व............

वलमयकुल्-लहू..अहद।

तर्जमा :

....

....

....

(घ) सूरा अस्र सुनाइए और उसका तर्जुमा भी।

(ङ) सुरा कौसर सुनाइए और उसका तर्जुमा भी।

♦♦♦

दुआएँ और अज़कार

अलहम्दु लिल्लाहि اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ

हर तरह का शुक्र अल्लाह ही के लिए है।

कोई नेमत पाकर या कोई ख़ुशख़बरी सुनकर कहते हैं।

सुब्हानल्लाह سُبْحَانَ اللّٰہِ

अल्लाह हर ऐब से पाक है।

कोई अच्छी ख़बर सुनकर, ताज्जुब के वक़्त, जब नमाज़ वग़ैरह में इमाम से कोई ती हो जाए तो कहते हैं।

अस्सलामु अलैकुम اَلسَّلَامُ عَلَیْکُمْ

तुम पर सलामती हो।

जब एक-दूसरे से मिलते हैं तो उस वक़्त बोलते हैं। यह मुहब्बत को बढ़ानेवाली दुआ और मुसलमानों की पहचान है।

जज़ा-कल्लाह جَزَاکَ اللّٰہُ

अल्लाह आपको अच्छा बदला दे।

किसी के एहसान के बदले में कहते हैं। जैसे, कोई आपका काम कर दे, पानी पिला या और कोई भलाई करे।

फ़ी अमानिल्लाह فِیْ اَمَانِ اللّٰہِ

अल्लाह की हिफ़ाज़त में।

जब किसी को रुख़सत करते हैं तो बोलते हैं।

इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन।

اِنَّا لِلّٰہِ وَاِنَّا اِلَیْہِ رَاجِعُوْنَ

हम अल्लाह ही के हैं और उसी की तरफ़ लौटेंगे।

जब किसी के मरने की ख़बर सुनते हैं या कोई और नुक़सान हो जाता है तो
हैं। मुसलमान के सोचने का यही अन्दाज़ होना चाहिए।

इंशाअल्लाह اِنْ شَآءَ اللّٰہُ

अगर अल्लाह ने चाहा।

कोई काम तय करते वक़्त, किसी से वादा करते वक़्त बोलते हैं।

لَاحَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰہِ

ला-हौ-ल-वला क़ुव्वत इल्ला बिल्लाह

अल्लाह के सिवा कोई न बुराई से बचानेवाला है और न कोई नेकी की ताक़त देने

कोई शैतानी हरकत सरज़द हो जाने पर बोलते हैं।

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمْ

अल्लाह की रहमत हो आप पर और सलामती हो।

प्यारे रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) का नाम सुनकर बोलते हैं और आप (सल
नाम के साथ लिखते हैं।

अलैहिस्सलाम عَلَیْہِ السَّلَامُ

उनपर सलामती हो।

किसी भी पैग़म्बर का नाम लेते वक़्त या लिखते वक़्त ये अल्फ़ाज़ कहते हैं या
हैं।

मआज़ल्लाह مَعَاذَ اللّٰہ

अल्लाह की पनाह चाहता हूँ।

किसी ग़लती और गुनाह से बचते वक़्त बोलते हैं।

माशाअल्लाह مَاشَاءَ اللّٰه

जो कुछ अल्लाह चाहे।

किसी के अच्छे काम की तारीफ़ के वक़्त या कोई और अच्छी अलामत सामने आए ो बोलते हैं।

रज़ियल्लाहु अन्हु رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ

अल्लाह उससे राज़ी हो।

सहाबी के नाम के साथ बोलते और लिखते हैं। जैसे : हज़रत अबू-बक्र (रज़ियल्लाहु अन्हु)।

रहमतुल्लाहि अलैहि رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْهِ

अल्लाह की रहमत हो उसपर।

किसी इन्तिक़ाल किए हुए बुज़ुर्ग के नाम के साथ लिखते हैं और बोलते हैं। जैसे : ाह वलीयुल्लाह रहमतुल्लाहि अलैहि।

अज़ान के बाद की दुआ

اَللّٰهُمَّ رَبَّ هٰذِهِ الدَّعْوَةِ التَّامَّةِ وَالصَّلوٰةِ الْقَائِمَةِ اٰتِ مُحَمَّدَا الْوَسِيْلَةَ وَالْفَضِيْلَةَ وَابْعَثْهُ مَقَامًا مَّحْمُوْدَ الَّذِیْ وَعَدْتَهٗ وَارْزُقْنَا شَفَاعَتَهٗ يَوْمَ الْقِيَامَةِ اِنَّكَ لَاتُخْلِفُ الْمِيْعَادِ۝

अल्लाहुम्-म रब्-ब हाज़िहिद्दावतित्ताम्मति वस्सलातिल क़ाइमति आति मुहम्मदनिल वसी-ल-त वल फ़ज़ी-ल-त वबअस्हु मक़ामम महमूदनिल्लज़ी वअत्तहु वर ज़ुक्ना शफ़ाअतहु यौमल क़ियामति इन्न-क ला तुख़लिफ़ुल मीआद।

"ऐ अल्लाह! मालिक इस मुकम्मल पुकार के और खड़ी होनेवाली नमाज़ के, तू अता कर हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) को अपना क़ुर्ब, बुज़ुर्गी और उनको उस तारीफ़वाले मक़ाम पर पहुँचा जिसका तूने उनसे वादा फ़रमाया है। और हमें क़ियामत के दिन हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) की शफ़ाअत नसीब

फ़रमा। बेशक तू वादा-ख़िलाफ़ी नहीं करता।"

जामे दुआ

رَبَّنَآ اٰتِنَا فِی الدُّنْیَا حَسَنَةً وَّفِی الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ

रब्बना आतिना फ़िद्दुनिया ह-स-न-तंव व फ़िल आख़िरति ह-स-न-तंव व क़िना अज़ाबन्नार।

"ऐ हमारे रब! हमें इस दुनिया में भी भलाई दे और आख़िरत में भी भलाई दे। और हमें जहन्नम की आग से बचा।"

तस्बीहे-फ़ातिमा (रज़ि॰)

सुब्हानल्लाह سُبْحَانَ اللّٰهِ

अल्लाह हर ऐब से पाक है। (33 बार)

अलहम्दु लिल्लाह اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ

हर तरह की तारीफ़ अल्लाह के लिए है। (33 बार)

अल्लाहु अकबर اَللّٰهُ اَكْبَرُ

अल्लाह सबसे बड़ा है। (34 बार)

दो प्यारे बोल

सुब्हानल्लाहि व बिहम्दिही سُبْحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ

अल्लाह हर ऐब से पाक है और हर तरह की तारीफ़ उसी के लिए है।

सुब्हानल्लाहिल अज़ीम سُبْحَانَ اللّٰهِ الْعَظِيْمِ

अल्लाह पाक है और बड़ी शानवाला है।

प्यारे नबी (सल्ल॰) ने इन दो बोलों की बड़ी तारीफ़ फ़रमाई है। फ़रमाया, "ये बोल अल्लाह को बहुत पसन्द हैं। ज़बान पर बहुत हल्के हैं। क़ियामत के दिन वज़न में ब़ भारी हैं।"

जब भी मौक़ा मिले इन्हें पढ़ लिया करो। ख़ासतौर पर रात में जब आँख खुले ज़रूर लिया करो।

अभ्यास

जवाब दीजिए–

(1) 'जज़ाकल्लाह' कब कहते हैं?
(2) किसी को रुख़्सत करते वक़्त क्या कहते हैं?
(3) 'सुब्हानल्लाह' कब-कब कहते हैं?
(4) कोई काम तय करते वक़्त या किसी से वादा करते वक़्त क्या बोलते हैं?
(5) वे दो बोल लिखिए जो ज़बान पर हल्के और क़ियामत के दिन वज़न में बहुत भारी हैं?
(6) तस्बीहे-फ़ातिमा (रज़ि.) लिखिए।

मुनासिब जोड़े लगाइए–

(1) अल्-हम्दुलिल्लाह–	(क) किसी के अच्छे काम की तारीफ़ के वक़्त बोलते हैं।
(2) मआज़ल्लाह–	(ख) जब किसी के मरने की ख़बर सुनते हैं या और कोई नुक़सान हो जाए तो बोलते हैं।
(3) माशा-अल्लाह–	(ग) कोई शैतानी हरकत सरज़द हो जाने पर कहते हैं।
(4) लाहौल वलाक़ुव्वता इल्ला-बिल्लाह–	(घ) कोई नेमत पाकर या कोई ख़ुशख़बरी सुनकर बोलते हैं।
(5) इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन–	(ङ) किसी ग़लती और गुनाह से बचते वक़्त बोलते हैं।

नीचे दिए गए फ़िक़्रों (वाक्यों) के माने लिखिए–

(1) रज़ियल्लाहु अन्हु...
(2) अलैहिस्सलाम...
(3) इंशाअल्लाह...
(4) रहमतुल्लाहि अलैहि...